डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव के व्यंग्य



डॉ.कौशल किशोर श्रीवास्तव

जन्मतिथि: 15 सितंबर 1946

जन्म स्थान: विदिशा (म.प्र.)

प्रकाशित कृतियाँ

1. ट्यूबेक्टोमी एण्ड कास्टम (अंग्रेजी, 1980)
2. है प्यास अभी (गजल संग्रह)
3.सन्नाटा गहरा है, (गजल संग्रह)
4.आए न बालम (व्यंग्य संग्रह)
5.बाइज्जत बरी (व्यंग्य संग्रह)
6.हड़कंप (व्यंग्य संग्रह)
7.अखिलम, मधुरम (काव्य संग्रह)
8. प्रतिरोधक क्षमता (मेडिकल साइंस)
9. प्रति उत्तर(काव्य संग्रह)
10 मेरे सांई
11 गीता के औपनिषधिक आधार
12 देशी-विदेशी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेख प्रकाशित

सम्मान- पुरस्कारः विभिन्न शीर्ष स्तरीय संस्थाओं से पुरस्कृत एंव सम्मानित

सम्प्रति: 1.भूतपूर्व सदस्य: मानव अधिकार आयोग

2.सदस्य: किशोर न्यायपीठ,छिन्दवाडा

3. शल्य चिकित्सक,

4. सेवानिवृत्ति सीएमओ (मुख्य स्वास्थ्य एंव चिकित्सा अधिकारी)

1 संरक्षक - पत्रकारिता कोश मंच छिंदवाड़ा

2. उपाध्यक्ष - जिला रेडकास समिति सोसाइटी छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

3. आजीवन सदस्य इंडियन मेडिकल एसोसिएशन

4. मानव तंत्र मानव अधिकार आयोग

अन्य - स्वतंत्र लेखन राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में,
संपर्क - 171 नोनिया करबल, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
पिन 480001

आधारकार्ड के लिन्केज
-डाॅ. कौषल किषोर श्रीवास्तव

मालूम नहीं किसके आदेषों से आधार कार्ड को मोबाइल, बैंक एकाउंट, पेन्षन इत्यादि से जोड़ा जाना आवष्यक बनाया जा रहा है जबकि स्वयं आधार कार्ड के पृष्ठ पर लिखा गया है कि इसकी कानूनी कीमत नहीं है। जब मैं आधार कार्ड को मोबाइल से लिन्क करवाने पहुंचा तब संदेष आया कि मेरी उंगलियों के छाप आधार कार्ड की उंगलियों से नहीं मिल रहे हैं। उसी मोबाइल के दुकानदार ने बतलाया कि मुझे नई उंगलियों की छाप से आधार कार्ड को लिंक करवाना पड़ेगा। मुझे आष्चर्य हुआ। मैंने तो पढ़ा था कि उंगलियों के छाप कभी नहीं बदलते।

जब मैं आधार कार्ड की दुकान पर गया तो मेरे जैसे कई लोगों की भीड़ वहां पर खड़ी हुई थी। सब बूढ़े लोग थे। वहां न बैठने को कुर्सी थी न ही कोई पंखा था। बहुत गर्मी थी। उस छः फीट ग दस फीट के कमरे में, न ही कोई एक्जास्ट पंखा था वह दुकान पर बैठा लड़का हरेक व्यक्ति से 150/- ले रहा था।

षासन के इन आदेषो से हम बूढे लोगों को बड़ी परेषानी हो रही है। जिस कार्ड की कोई कानूनी कीमत नहीं है, उसे कैसे कानूनी दस्तावेजों के साथ आवष्यक रूप से संलग्न करवाया जा सकता है। बरहहाल लगभग पन्द्रह दिन बाद मुझे समाचार मिला कि मेरी नयी उंगलियांे की छाप आधार कार्ड से लिन्क हो गई है। जब मैं मोबाइल की दुकान पर गया तो मेरी फिंगर प्रिंट की छाप आधार कार्ड से मिलवाई गई। तब जाकर केवल बायें हाथ की मध्यमा की छाप ही आधार कार्ड से मिल रही है बरहहाल मेरा मोबाइल बन्द नहीं हुआ। दिनांक 02/11/17 को मैं पेंषन के लिये जीवन प्रमाण पत्र देने पहुंचा तो फिर उंगलियों की छाप को आधार कार्ड से मिलवाया गया। मालूम पड़ा कि उंगलियों की छाप आधार कार्ड से नहीं मिल रही है। बड़ी मषक्कत के बाद एक उंगली की छाप मिल पाई। षासन को सर्वेक्षण करवाना चाहिये कि कितने प्रतिषत लोगों की छाप कितने सालों बाद बदल जाती है या घिस जाती है।

मैं सामने खड़ा हूँ। आधार कार्ड का चित्र मुझसे मिल रहा है। मेरा ‘वोटर आई डी’, आधार कार्ड से मिल रहा है। मगर मेरी घिसी हुई उंगलियों की छाप आधार कार्ड से नहीं मिल रही है तो क्या मुझे पेन्षन के मौलिक अधिकार से वंचित कर दिया जायेगा? क्या मेरे जिन्दा रहते हुये भी केवल उंगलियों की छाप बदल जाने से आजीवन पेन्षन नहीं मिलेगी। और वह भी उस कार्ड के कारण जिस पर स्वयं लिखा है कि उसकी कोई कानूनी कीमत नहीं है। या मुझे हर साल आधार कार्ड बनवाने वाले को मुद्रा देते रहना पडेगी।

आधार कार्ड को हर मौद्रिक लेनदेन से संलग्न करना उचित है। कई ऐसे प्रकरण सामने आये हैं जिसमेंे पेन्षनर की मृत्यु हो चुकी होती है पर उसके रिष्तेदार उसकी पेन्षन लेते रहते हैं। ऐसी धोखाधड़ी के प्रकरणों को आधार कार्ड से ‘लिन्क’ करके ऐसी धोखाधड़ी को रोका जा सकता है पर बदलते या घिसते उंगलियों की छाप का भी कोई निदान ढूंढा जाना चाहिये।

--- ग ग ग ग ग ---

एक मार्ग रूकावट सरकारी
-डाॅ. कौषल किषोर श्रीवास्तव

मैं एक मित्र के पीछे उसकी मोटरबाईक पर बैठा था। आगे एक सरकारी गाड़ी सड़क पर तिरछी खड़ी थी उसी के कारण जाम लगा हुआ था। भारत की प्रगति में इसी कारण जाम लगा हुआ है। हर अफसर तिरछा खड़ा हुआ है। उसके तिरछे देखने से प्रगति की फाइल आगे नहीं बढ़ पाती। जब तक किसी फाइल पर उनकी तिरछी नोट सीधी नहीं होती तब तक वह फाइल आगे नहीं बढ़ती। भले ही प्रधानमंत्री कहते रहें कि भ्रष्टाचार खत्म हो रहा है पर वह षुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढ़ता जा रहा है। चपरासियों के घर तक छापा पड़ने पर साढे तीन करोड़ रूपये बरामद हो रहे हैं। अखबारों में बड़े अक्षरों में छप रहा है पर प्रधानमंत्री जी अखबार ही नहीं पढ़ते या इन खबरों को नहीं पढ़ते। अखबार वाले बेकार ही इन खबरों को छापते हैं। मेरे दोस्त ने जाम हटाने हार्न बजाया तो तीन सिपाही आ धमके और डांटा ''देख नहीं रहे आगे सरकार खड़ी है। अब अगर हार्न बजाया तो ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न करने में धर लिये जाओगे।

दोस्त ने पूछा ''मगर सरकार आगे क्यों नहीं बढ़ रही।''

एक सिपाही बोला ''सरकार गुटखा खाने बाजू की दुकान पर गई है।''

दोस्त ने पूछा ''मगर उसी दुकान पर क्यों?''

सिपाही बोला ''क्योंकि उस गुटखे वाली दुकान का एक प्रकरण साहब के न्यायालय में चल रहा है। उसी के बारे में कुछ 'डिस्कसन' चल रहा है।

ये एक नया विभाग प्रज्जवलित हो रहा है-प्रदूूषण नियंत्रण विभाग। यदि आपने प्रदूूषण फैलाया तो आप पर जुर्माना कर दिया जाता है। उससे प्रदूषण रूक जाता है। इस विभाग का नाम तो जुर्माना विभाग हो जाना चाहिये।

मेरा दोस्त गिड़गिड़ाया ''मगर मुझे जल्दी आगे जाना है।''

पूरा देष इन अफसरों के आगे गिड़गिड़ा रहा है। पर ये नहीं चल रहे टस से मस नहीं हो रहे। टस पर ही अडे हैं। मस पर नहीं सरकते एक कारखाना चालू करने के लिये कई लायसेंस लेना पड़ते हैं। धन्य है ब्रंाडेड कपड़े, टाटा का नमक, बिड़ला के कारखाने, आई.टी. कंपनियां, मसाले, आटे, जूते की कंपनियां इत्यादि वस्तुयें जो भारत में इतने अवरोधों के बाद भी देष को आगे धकेल रहीं है।

एक कारखाने को देष रूपी सड़क पर चलने के लिये दो तरह के कर देना पड़ते हैं । प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर। प्रत्यक्ष कर तो रिष्वतकर और राजनीति कर के रूप में देना पड़ता है और अप्रत्यक्ष कर के रूप में आयकर, विक्रय कर, स्वच्छता कर, षिक्षा कर, कर पर कर, प्रदूूषण, नियंत्रण कर, ज्ञात और न जाने कितने अज्ञात कर हैं। आष्चर्य है कि इतने करों से दबे रहने के बाद भी कम्पनियां आगे सरक रहीं हैं। सरकारी अधिकारियों को आराम फरमाने के लिये इन कम्पनियों को रेस्ट हाउस बनाना पड़ते हैं। जो बनते किसी और नाम से हैं और आतेे किसी और काम में। उनमें सचिवों से लेकर पटवारियों तक ठहरते हैं या उनके रिष्तेदार ठहरते हैं। फिर ठहरने का मतलब तो आप जानते ही हैं। उन पर जीवियों के लिफाफों से लेकर गिलाफों तक का इंतजाम , अजीज प्रेम जी, टाटा बिड़ला या रेमण्ड को करना पड़ता है। विदेषी कंपनियां तक जब अफसरों को खरीदती हैं तब जनता को उनके उत्पाद बेच जाती हैं।

रिष्वत बहुत ताकतवर हो गई है। किसी की ताकत जो रिष्वत को मना कर दे, रिष्वत की उल्टी गंगा नीचे से उद्गम लेती है और ऊपर मंत्री रूपी समुद्र में खत्म होती है। इसीलिये इसे संस्कृत में उत्कोटा कहते हैं। इसलिये इसे उपहार भी कहते हैं। पूरा देष इसकी बदबू से दुर्गंध मय हो रहा है। जोे रिष्वत नहीं लेते है उनके बारह महीनों में सत्रह स्थानांतरण हो जाते हैं।

अदम्य आकर्षण है रिष्वत सुंदरी में। साथ ही साथ उसमें अहंकार, दर्प, मान और अभिमान भी है। वह उपेक्षा सहन नहीं करती। जिसने उसकी उपेक्षा की वह या तो सचिवालय पहुंच जाता है या प्रान्त के दर्षन टूरिस्ट

बस से भी अधिक गति से करने लगता है। मंत्री लोग उस प्रेमिका की उपेक्षा करने पर सार्वजनिक रूप से बेचारे अधिकारी को तब तक प्रताड़ित करते हैं जब तक वह अपना ब्रहमचर्य भंग नहीं कर लेता।
सरकार उसके नौकरों से बहुत अधिक प्यार करती है। जब उनका वेतन तीन अंकों में होता था तब वे रिष्वत चार अंकों में लेते थे। जब उनका वेतन चार अंकों में तो वे रिष्वत पाँच अंकों में लेने लगे। जब उनका वेतन पाँच अंकों में हुआ तो वे रिष्वत छह अंकों में लेने लगे। जब उनका वेतन छह अंकों में हुआ तो वे रिष्वत सात या आठ अंकों में लेने लगे। गोया आप समुद्र की गहराई नाप सकते हैं, आसमान की ऊंचाई नाप सकते हैं पर रिष्वत की गहराई या ऊंचाई नहीं। पहले हितग्राही को रिष्वत देने अधिकारी के घर जाना पड़ता था, पर अब तो अधिकारी रिष्वत लेने की चलती फिरती दुकानें हो गये हैं। कोई कोई कार्यालय तो चलती फिरती दुकानें हो गये हैं। सरकार इस पर भी उन्हें मंहगे वाहन उपलब्ध करवाने लगी है।
इतने में अधिकारी के वाहन चालक ने हमें षुभ सूचना दी कि अधिकारी को लाभ हो गया है अतः जाम हटने ही वाला है बस आप लोग सरकार को धक्का लगा दें।
सरकार धक्के से ही चल रही है। मेरा मित्र बोला ''क्यों ओ.डी. को अपमानित कर रहे हो?''
इसमें ओ.डी. कार की कोई गलती नहीं है। कार देते समय डीलर ने इसकी 'ओरिजनल बैटरी' निकाल ली थी और पुरानी बैटरी लगा दी वाहन चालक बोला।
एक व्यवहारिक आदमी पिनपिनाया '' सर आप कोई नई बैटरी क्यों नहीं ले लेते।'' आजकल हर सरकारी नौकर को 'सर' कहना पड़ता है, क्या जाने वह कब चपरासी गिरी पर उतर जाये।
ड्राइवर हंस दिया ''सरकार में ऐसे खरीदी नहीं होती। पहले 'एस्टीमेट' मांगा जाता है। फिर टेंडर निकाले जाते हैं। तब साहब सबसे कम कीमत के चारों और लाल स्याही से गोला बनाते हैं। तब जाकर 'आर्डर' दिया जाता है। तुम लोगों जैसा नहीं कि दुकान पर गये और सबसे अच्छी चीज उठा लाये। सरकार तो सबसे घटिया चीज सबसे ज्यादा कीमत में खरीदती है। अच्छा चलो भीड, तुम धक्का लगाओ तो सरकार तुम्हें आगे बढ़ने का मौका दे। सरकार सरके तो तुम्हारी फाइलें आगे बढ़ंे। ''उसने पीछे खड़े वाहनों को फाइल कह कर सम्बोधित किया।

हवाई चप्पल और हवाई यात्रा
-डाॅ. कौषल किषोर श्रीवास्तव

प्रधानमंत्री जी ने माइक द्वारा पूछा ''क्या तुम सब हवाई यात्रा नहीं करना चाहते हो?''
हमारी भीड़ 'चिल्लाई, करना चाहते हैं।'
उन्होनें फिर पूछा '' तुम में से कितने हवाई चप्पल पहनते हो?''
सब चिल्लाये ''हम सब पहनते हैं।''
उन्होनें उद्घोषणा की कि अब हवाई चप्पल वाले भी हवाई यात्रा कर सकेंगे।
हम सब नंगे पांव वाले हवाई चप्पल पहनने निकल पड़े।
चप्पल वाला भीड़ को देख कर डर गया। पहले हम इक्के दुक्के ही उससे उधार मांगने पहुंचते थे। अब षायद संगठित होकर उधार मांगने आये हैं उसने सोचा। पर जब हमने कहा कि हम नगद लेकर ही हवाई चप्पलें खरीदने आये हैं तो उसकी खुषी का ठिकाना नहीं रहा। उसने हवाई चप्पल बनाने वालों को मन ही मन धन्यवाद दिया कि उन्होनें हवाई चप्पलों की अनुषंसा करवाई।
अब वह बड़े दुकानदारों की तरह ऐंठ कर बातें करने लगा। बोला ''पंक्तिबद्ध होकर एक एक कर आओ।''

हम एक पंक्ति में चुपचाप लग गये। उन सबमें मैं पहलवानों की तरह था इसलिये सब को धका कर और घुड़क कर सब से आगे लग गया। दुकान वाला भी आष्चर्य चकित हो गया कि यह हफ्ता वसूलने वाला नगद पैसे देकर हवाई चप्पल खरीदने आया है। उसने मुझे प्रेम से बैठाया और सही नाप की चप्पलें कम दाम में दे दीं। मैं अचरज में पड़ गया कि इतनी सस्ती चीजें भी मैं मुफ्त में लाता था। बाद में मालूम पड़ा कि भंडार में जो खराब माल पड़ा था वह भी उसने निकाल दिया।

जब मैं घर आया तो सिर झुका कर घर में प्रवेष किया। सांप चाहे बाहर जितना टेढ़ा-मेढ़ा चले बिल में सीधा ही घुसता है। मेरे घर में सभी को झुक कर आना पड़ता है, क्योंकि दरवाजा ही खिड़की के बराबर है। नई हवाई चप्पलें देखकर घर का पहलवान अर्थात पत्नि जी नाराज हो गईं। चिल्लाई ''घर में सूखा पड़ा रहता है और तुम्हें हर जगह हरियाली दिख रही है। जब मैंने तुम्हारी टूटी चप्पलों की बद्धियों में टांके लगा दिये थे तब नई चप्पलें क्यों लाये? अभी ये टांका लगी पुरानी चप्पलें ही छः महीने चलतीं। तुम्हारी दादागिरी भी कम होती जा रही है। अभी भी मौका है एक छोटी मोटी दुकान खोल लो तो बुढ़ापे का सहारा हो जायेगा।

मैनें जवाब दिया ''मोदी जी ने कहा है कि अब हवाई चप्पल पहनने वाले भी हवाई जहाज की यात्रा कर सकेंगे सो मैं नई चप्पल खरीद लाया। पुरानी चप्पल पहन कर हवाई जहाज में बैठता तो मोदी जी की इज्जत खराब नहीं हो जाती?''

हम दोनों ने एक सिद्धांत बनाया है कि दोनों तब तक लड़ते रहेंगे जब कि कोई बीच-बचाव नहीं करता। पर जब कोई बीच बचाव करने आ जाता है तो दोनों आपस की लड़ाई छोड़कर उससे लड़ने लगते हैं।

छिंदवाड़ा बस स्थानक वाले दलाल आष्चर्यचकित थे कि बगैर छीना झपटी के बहुत सारी सवारियां खुद ही नागपुर के लिये चढ़ गईं। यहां दादा की तरह खड़ी रहने वाली बसें नागपुर में पिद्दी की तरह एक तरफ खड़ी हो जाती हैं। मैंने बस वाले को घुड़का ''हमें भीम राव अंबेडकर हवाई अडडे पर छोड़ो। हम सबने हवाई चप्पलें हवाई जहाज का सफर करने के लिये खरीदीं है। पैदल जायेंगे तो एक तो चप्पल गंदी हो जायेंगी और दूसरे हवाई जहाज है, हमारे लिये रूकेगा थोड़ी ही।

बस वहीं नाके पर रोक दी गई। हम सब पंक्तिबद्ध उतरे तो हमें देखकर तलाषी लेने लगे। हवाई जहाज हमारी मोटरों की तरह बगैर डर के नहीं खड़े रहते। कई सुरक्षा चक्र के किलो में खड़े रहते हैं। वह सुरक्षा कर्मी हम सब हवाई चप्पल धारियों को देखकर घबरा गया। उसने हमसे हमारे टिकिट पूछे। हमने समवेत पूछा ''तो क्या यहां ट्रेनों या बसों की तरह टिकिट खिड़कियां नहीं है?''

वह हंस कर बोला ''है तो। मोदी जी ने कहा जरूर है कि हवाई चप्पल वाले भी हवाई जहाज की यात्रा कर सकेंगे पर यह नहीं कहा कि टिकिट सस्ते हो गये है। अरे, जब त्योहारों में मोटरों के टिकिट ही तिगुनें दामों पर मिलते हैं तो फिर तो ये हवाई जहाज है। तुम सब एक पंक्ति में ही टिकिट खिड़की तक जाना।

हम सब पंक्तिबद्ध ही हवाई चप्पलें चटखाटे हुये टिकिट खिड़की तक पहुंचे। मैनंे वहां पहुंच कर मुम्बई का टिकिट पूछा। उसनें हमें ऊपर से नीचे देखा फिर टाई ठीक करते हुये बोला ''अभी हमारी कम्पनी कमीषन दे रही है। एक टिकिट की कीमत तेरह हजार रूपये है, हमारे पैरों के नीचे जमीन तो थी ही नहीं जो खिसकती, न होते हुये भी हमारे हाथों के तोते उड़ गये। हमने प्रतिरोध करते हुये कहा ''इतने मंहगे टिकिट। मगर प्रधानमंत्री जी ने तो कहा है कि हवाई चप्पल पहनने वाले भी हवाई जहाज की यात्रा कर सकेंगे।''

''तो करो न'' वह बोला ''मगर टिकिट लेकर।'' ये रेलगाड़ी नहीं है जिसमें तुम लोग बगैर टिकिट यात्रा कर सको या टी.टी.आई को कुछ पैसे देकर सरकार को चूना लगा सको।

मैंने रंगदारी दिखाई। अकड़कर कहा मैं छिन्दवाड़ा के बरारीपुरा में हफ्ता वसूली करता हूँ समझे। वह समझ गया उसने सुरक्षा कर्मी को इषारा किया तीन चार सुरक्षा कर्मियांे ने मुझे दबोंच लिया। मेरे बाकी साथी उल्टे पांव भाग लिये, और सारे टिकिट कांउटर मुझे मुंह चिढ़ाकर हंसनें लगे।

---रुरुरु---

लोकसभा एवं विधान सभाओं के एक साथ चुनाव राष्ट्रहित में हैं ?

-डाॅ. कौषल किषोर श्रीवास्तव

हमारा देष चुनाव प्रधान देष है। यहां लोक सभा, विधान सभा, राज्य सभा, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, नगर निगम, नगर पालिका, पंचायत, पंचायत अध्यक्ष, काॅलेज यूनियन, कर्मचारी यूनियन, सहकारी यूनियन, मण्डी अध्यक्ष इत्यादि के चुनाव होते ही रहते हैं। फिर उत्सव समिति, मोहल्ला समिति, रेडक्रास समितियों के छोटे-मोटे चुनाव अलग से। इन सब चुनावों में कर्मचारियों, कोष, सेना, पुलिस इत्यादि की व्यवस्था में कल्पनातीत व्यवस्था करना पड़ती है।

मतदान प्रजातंत्र की रीढ़ है। इसके कारण एवं इसके लिये ही चुनाव आयोग, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री अन्यमंत्री, न्याय पालिका, कार्यपालिका, कोष, पुलिस एवं सेना इत्यादि हैं। इनकी निष्पक्ष व्यवस्था षासन को करनी पड़ती है।

यदि सभी चुनाव अलग अलग समय पर होते हैं (जैसे कि होते हैं) तब षासन को हर बार अलग अलग समयों एवं स्थानों पर उपरोक्त वर्णित व्यवस्थायें करना पड़ती हैं। इससे क्षेत्रीय अव्यवस्थायें अलग होती हैं। उतने समय के लिये चुनाव की व्यवस्था के अलावा सारी व्यवस्थायें एवं योजनायें स्थगित हो जाती हैं एव राज्य एवं देष एक कदम पीछे चला जाता है।

अगर विधान सभा एवं लोक सभा के चुनाव एक साथ ही करवाये जायें तब षासन को एक ही बार सारी व्यवस्थायें करनी पड़ेगी। इससे कई कार्य दिवसों, कोष, सरकारी कर्मचारियों की बचत हो जायेगी इस व्यवस्था से चुनाव आयोग पर भी कम दबाव पड़ेगा। बीच में कभी कभी मात्र रिक्त स्थानों के ही चुनाव करवाना पड़ेंगे।

एवं यदि लोकसभा एवं राज्य सभा के चुनाव भिन्न भिन्न समयों पर होते हैं तो देष को हर व्यवस्थायें दोहरी करनी पड़ती है। एक समय में दोनांे चुनाव होने से या स्थानीय निकायों के चुनाव भी उसी समय होने पर षासन को सारी व्यवस्थायें एक ही बार करनी पड़ेंगी।

एक ही साथ तीनों चुनाव होने पर षासकीय कर्मचारियों की व्यवस्था भी एक ही साथ करना पड़ेगी। इस व्यवस्था से षासकीय कर्मचारियांे की बार बार परेषानियां, वाहनों की व्यवस्था एवं खर्च की भी बहुत बचत होगी।

इस एक दिवसीय विभिन्न चुनाव व्यवस्था से चुनावों में खड़े होने वाले प्रतिनिधियों के खर्च भी बहुत कम हो जायेंगे। उन्हें बार-बार जनता के सामने वोटांे के लिये निवेदन नहीं करना पड़ेगा।

मगरः-

एक साथ विधान सभा एवं लोक सभा के चुनाव करवानेे की अनेक हानियां भी है जिनमें से कुछ निम्न हैंः-

(1) एक ही राजनैतिक दल का बहुमत दोनों सदनों में होने से षासन पांच वर्ष के लिये निरंकुष हो जायेगा , जैसा कि आंषिक रूप से आज है। यह हमारे प्रजातंत्र की एक बुराई है पर इससे अधिक अच्छी व्यवस्था कोई भी नहीं।

(2) आज जब अलग अलग विधान सभाओं के चुनाव होते हैं तब मतदाताओं की गमनषील विचारधारा का पता चलता रहता है। इससे एक दल का लोक सभा में बहुमत होने पर भी विधान सभा क्षेत्रों एवं राज्य सभा में उनके बहुमत पर अंकुष लगा रहता है।
(3) सारी रक्षात्मक व्यवस्था को एक साथ चुनावों में झोंक देने पर क्या हमारी सीमायें अस्थिर नहीं हो जायेंगी?
(4) आज लोक सभा में पूर्ण बहुमत होने पर सारे ही निर्णय विवके पूर्ण नहीं हो रहे हैं। इनमें नोटबंदी के लागू होने को तरीका गलत था हालांकि निर्णय सहीं हो सकता है। इसी तरह षराब को जी.एस.टी. से मुक्त करने का कारण समझ मंे नहीं आता है। इसी तरह पेट्रोल एवं उसके उत्पाद, षक्कर इत्यादि को जी.एस.टी. से मुक्त रखा गया है। प्रजातंत्र में कोई भी निर्णय निरंकुष षासक की तरह एक दम नहीं थोपा जाता।
(5) संभावना है कि षासन केवल प्रधानमंत्री के प्रान्त तक ही सिमट कर रह जाये जैसा कि आजकल गुजरात में हो रहा है। इससे देष का विकास असमान होने लगेगा। केवल एक प्रान्त ही विकसित होकर रह जायेगा।
(6) चुनाव आयोग के पास पांच वर्ष तक अधिक काम नहीं रहेगा। केवल चुनाव वर्ष में ही सक्रियता आयेगी।
अतः-
एक साथ ही विधान सभा एवं लोक सभा के चुनाव करवाने के पहले अलग अलग राजनैतिक दलों, विचारधाराओं, प्रांतों, विद्वानों में पर्याप्त विचार मंथन होना चाहिये फिर जो निर्णय उभर कर आते हैं उन्हें ही लागू करना चाहिये।
-----88888----- आलू बनाम आधार कार्ड
आलू कभी अरेबियन देषों से भारत आये थे, पर अब वे भारत में ही बस गये। भारत की सब्जियांे से इस तरह घुल-मिल गये कि अब भारत की सब्जियों से उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। होटलों में आलू पालक, आलू भिण्डी, आलू बैंगन, आलू टमाटर, आलू मैथी, आलू छोला के बगैर मेनू परा नहीं होता। फिर आलुओं की अलग सब्जियों का तो कहना ही क्या? भरवां आलू, तले आलू, आलू का भुरता, आलू का रायता इत्यादि अलग। आलू चिप्स का तो कहना ही क्या। आलू यहां से विदेषों में जाते है फिर चिप्स के रूप में लौट कर आ जाते हैं। उन्हें भारत में ही अच्छा लगता है। बच्चों के लिये आलू चिप्स तो बूढ़े लोगों के लिये आलुओं को हलुआ। आलू हमारी राष्ट्रीय सब्जी हो गया है।
जैसे सब्जियों में आलू हर सब्जी का आधार है वैसे ही आधार कार्ड हरेक कार्ड का आधार है। मैंने एक व्हाट्स एप में पढ़ा था कि कलयुग केवल नाम अधारा। पहले ‘बायो मीट्रिक’ का आधार लेकर आधार कार्ड बनवाये गये। वे वोटर कार्ड एवं जन्म प्रमाण पत्र से अधिक विष्वसनीय माने जाने लगे।
पहले के.वाय.सी के नाम से बैंक एकाउंट से जोड़ा गया। उधर सुप्रीम कोर्ट चिल्लाता रहा कि आधार कार्ड आवष्यक नहीं हैं वहां वहां बगैर आधार कार्ड के बैंकांे ने पैसे उगलना बंद कर दिये। फिर एक फरमान जारी हुआ कि आधार कार्ड को मोबाइल से जोड़ दिया। अब हर मोबाइल को आधार कार्ड का भी वनज सहना पड़ रहा है।
बगैर आधार कार्ड के होटलों का दरबान अन्दर घुसने नहीं देता। बगैर आधार कार्ड के बीबी पहचानने से मना कर देती है। बच्चा बाद में पैदा होता है पहले उसका आधार कार्ड बनवाना पड़ता है।
अब आदेष आ रहे हैं कि ड्राइविंग लाइसेंस बगैर आधार काडै के नहीं बनेंगे। भइया सरकार, इतने कार्ड की क्या जरूरत है एक आधार कार्ड को ही ड्राइविंग लाइसेंस मान लिया जाये।
मेरी उम्र इकहत्तर वर्ष है जब आधार कार्ड बनवाया था तो मैं साठ वर्ष का नौजवाना था। जब मैं मोबाइल फोन की षादी आधार कार्ड से करवाने गया तो उन्होंनें पहले तर्जनी की छाप ली। कहा की उंगली की छाप नहीं मिल रही। फिर क्रमषः मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा एवं बाद में अंगूठे की छाप ली गई। फिर मुझे

अंगूठा दिखा दिया गया। मोबाइल की दुकान वाले ने कहा ‘‘हालांकि आपका चेहरा आपके आधार कार्ड से हू-ब-हू मिलता है पर आपके उंगलियों की छाप नहीं मिल रही। वे काम का बोझ ढ़ोते-ढ़ोते घिस गईं हैं। मेरा आधार कार्ड ‘लिंक’ होते होते फट गया है। अब आज यानि दिनांक 05/08/17 (देवनागरी के अंक अमान्य हो गये हैं) में पढ़ा कि मृत्यु प्रमाण पत्र आधार कार्ड के बगैर नहीं प्राप्त होगा। मुझे मरने के बाद क्या ऊपर (हालांकि षरीर नीचे रह जाता है कहते हैं कि आत्मा ऊपर जाती है) भी आधार कार्ड दिखाना पडेगा। यदि अगर मैं बिना आधार कार्ड के ऊपर गया तो मुझे नरक का रास्ता दिखा दिया जायेगा। लेकिन मेरे साथ मेरा आधार कार्ड तो जलाया नहीं जायेगा। मेरे आधार के ऊपर मेरे और पड़ोस के दो बच्चे में झगड़ा हो जायेगा। मान लीजिये आलेख के दादा स्वर्गवासी (हरेक को स्वर्गवास ही क्यों होता है) हुये और सुलेख उनका या दादा जी का आधार कार्ड प्रस्तुत करता है तो मृत्यु प्रमाण उसे ही मिलेगा। पैत्रिक (पैत्रिक के पिता का) सम्पत्ति का मालिक हो जायेगा, इसके अच्छे परिणाम देखने मिलेंगे। सुप्रीम कोर्ट में सम्पत्ति एवं आपराधिक प्रकरणों का ढ़ेर लग जायेगा। दिल्ली में ही चार-पाँच सुप्रीम कोर्ट खोलना पड़ेंगे सरकार को।

विकास के मतलब ?

-डाॅ. कौषल किषोर श्रीवास्तव

सरकार ने जब काफी विकास कर लिया तब उत्सुकता हुई कि देखें कि उसने देष से कितना विकास खींचा। इस सर्वेक्षण के लिये उसने अलग-अलग समितियां बनाई इस तरह उसकी पार्टी के मुफ्तखोर काम पर लग गये। मुख्य समिति ने कुछ बिन्दु अलग अलग सर्वेक्षण समितियों को दियेः-

(1) समाज के व्यक्तियों का विकास के बारे में ज्ञान।

(2) भिन्न-भिन्न वर्गों का विकास।

(3) उनसे धनात्मक उत्तर प्राप्त करना।

समितियों ने सरकारी मुददे सरकारी कचराघरों में फेंके और सरकारी कारों से तफरीह पर निकल गईं।

गरीब सर्वेक्षण समिति एक गरीब के घर गई। गरीब घर, डर गया। सरकार से हर वर्ग डरता है और सरकार उसके घटकों से डरती है। सरकार देष के डर का प्रतिनिधित्व करती है और डर से ही चलती है। उस घर के सदस्य न्यूनाधिक वस्त्रावृत्त थे। फटे कपड़े उनकी इज्जत को बाहर आने का असफल प्रयत्न कर रहे थे। हर वर्ग को आदेष थे कि वे सरकारी सर्वेक्षण दल का यथा संभव सत्कार करें। सर्वेक्षण दलों को आदर करवाने का अधिकार दिया गया था। उस दल ने भी आदर करवाया। उन्हें जो चाय प्रस्तुत की गई वह गरीब परिवार के हिसाब से उत्कृष्ट पर स्वागत करवाने वाले दल के हिसाब से रद्दी चाय थी।

समिति ने गरीब से पूछा ‘‘श्रीमान गरीब आपकी दृष्टि में प्रगति का मतलब क्या है?’’

गरीब ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया ‘‘हुजूर, विकास का मतलब भुखमरी का बढ़ना है।’’ हमारे जिन्दा रहने के अधिकार छिनते जा रहे हैं।

समिति ने पूछा ‘‘तो ये तुम्हारी भुखमरी के अधिकार बढ़े हैं या घटे हैं।’’

गरीब ने उत्तर दिया: बढ़े हैं हुजूर।

समिति ने पूछा ‘‘तो तुम्हारी नजरों में देष का विकास हुआ है।’’

गरीब ने कहा ‘‘हाँ हुजूर अब हम पहले से अधिक भूखों मर रहे हैं।

समिति ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि गरीब की नजरों में देष का विकास हुआ है।

सरकार ने बेरोजगारी खत्म करने का वादा किया था। इसलिये ऐसे बेरोजगारों का साक्षात्कार लेना आवष्यक था, जिनकी बेरोजगारी खत्म हो गई हो। समिति ऐसी झोपड़ी के सामने रूकी जिस पर पूर्व बेरोजगार युवक

लिखा था। उन्होनें घांस-फूस के दरवाजे पर डन्डे मारे तो एक बा रोजगार युवक बाहर निकला। उसने निकलते ही गिड़गिड़ाना चालू कर दिया। हाथ फैलाकर बोला ‘‘दे दे बाबा ऊपर वाले के नाम पर दे दे। 100/- का सवाल है। मोबाइल को ‘री-चार्ज’ करवाना है।
समिति चकरा गई। समिति ने पूछा ‘‘तुमने तो बा-रोजगार लिख रखा है।’’
युवक बोला ‘‘हाँ अब मैं भीख मांगने लगा हूँ। यही रोजगार करने लगा हूँ।
समिति ने पूछा ‘‘तेरी षैक्षणिक योग्यता कहां तक है।’’
‘‘जी’’ वह युवक बोला ‘‘आय एम गोल्ड मेडलिस्ट एम.ए.इन हिन्दी लिट्रेचर’’। समिति ने कहा पर तुमने तो लिखा है पूर्व बेरोजगार।’’
वह यु ुवक बोला ‘‘तो आप ही कोई नौकरी या रोजगार दिला दीजिये। प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि अपने रोजगार खुद पैदा करो तो मैंने कर लिया।’’
समिति एक ईमानदार षिक्षित युवक को कोई नौकरी नहीं दिलवा सकती थी। समिति ने पूछा ‘‘तो तुम्हारा मानना है कि पूर्वापेक्षा बेरोजगारी में विकास हुआ है।
वह बोला ‘‘जी’’ और उसने अन्दर घुसकर झोपड़ी बंद कर ली।
बेइज्जत समिति ने रिपोर्ट में लिखा कि बेरोजगारी में देष का विकास हुआ है, अतः हम विकसित हो गये हैं।
प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि केन्द्र में भ्रष्टाचार समाप्त हो गया है। भ्रष्टाचार सर्वेक्षण समिति एक ऐसे कार्यालय गई जहां भ्रष्टाचार पहले से ही नहीं होता था। मगर इस बार वहां नजारा ही दूसरा था। रिष्वत पर सार्वजनिक झगड़ा हो रहा था। एक बाबू दस हजार रूपये रिष्वत मांग रहा था पर दाता नौ हजार नौ सौ पिंच्यानवे दे रहा था। मामला केवल पाँच रूपये पर अटका था और आधा घन्टे से आगे सरक ही नहीं रहा था।
समिति ने बाबू ू से पूछा ‘‘मगर प्रधानमंत्री तो कह रहे हैं कि भ्रष्टाचार खत्म हो गया है।’’
बाबू ने जवाब दिया ‘‘कहने वाले को कौन रोक सकता है। अब किसी को झूठ बोलने की आदत है तो हम और आप कौन होते हैं रोकने वाले?’’
समिति में सन्नाटा छा गया। फिर थोड़ी देर बाद अवसाद से उबर कर बोली ‘‘तो आपका कहना है कि भ्रष्टाचार में विकास हुआ है।’’
वह रिष्वतखोर बोला ‘‘ है आपमें ताकत विकास रोकने की?’’ हमने विकास के नाम पर वोट दिया है तो विकास करेंगे ही। समाज के हर क्षेत्र में विकास हो रहा है यथा गरीबी में, बेरोजगारी में , रिष्वतखोरी में, धोखेबाजी में और इत्यादि में।
अभी तीन समितियों की रिपोर्ट आना बाकी थी। नोट बंदी का विकास पर असर, जी.एस.टी. का विकास पर असर, स्वच्छता और आम आदमी पर विकास का असर । नोट बन्दी का विकास पर असर देखने वाली समिति एक सम्माननीय ग्राहक के पास गई। उससे पूछा ‘‘नोट बंदी का विकास पर क्या असर हुआ है?’’
वह प्रबुद्ध ग्राहक बोला ‘‘सरकार हमारा पैसा दबा कर विजय माल्या आदि का घाटा पूरा कर रही है। हमसे सार्वजनिक घाटा पूरा किया जा रहा है और माल्या से व्यक्तिगत फायदा ले रही है।
इस तरह सरकार का सार्वजनिक रूप से और घटकों का व्यक्तिगत रूप से फायदा हो रहा है।’’
समिति ने नोट किया कि विकास हो रहा है। फिर पूछा कि तुम्हारा क्या नुकसान हो रहा है? वह तड़ाक से बोला ‘‘क्यों, क्या फिक्सड डिपाजिट पर ब्याज दर कम हुई कि नहीं? बचत खाते में ब्याज दर कम हुई या नहीं? उसके ऊपर कल मेरी लड़की की षादी है और मुझसे मैनेजर कह रहा है कि आज तो हम पांच हजार दे भी रहे हैं, कल हो सकता है कि पांच सौ भी न मिलें। हमारा पैसा हमें नहीं विजय माल्या को मिल रहा है।

अब जी.एस.टी. का व्यापारियों पर असर देखना बाकी था। जी.एस.टी. समिति एक गुमठी पर रूकी। उससे पूछा ''जी.एस.टी. से आपको क्या फायदा हुआ?
वह बोला ''हुजूरो, पहले हमारा बड़ा षोरूम था, अब वह गुमठी रह गई। हर माह जी.एस.टी. फार्म भरने के पांच हजार रूपये सेल्स टैक्स वकील को देना पड़ते थे। क्योंकि फार्म बहुत ही क्लिष्ट है। इस सरकार से कुछ ही व्यापारिक घरानों का विकास हुआ है। उसे ही आप देष का विकास कह सकते हैं।''
अंत में आम आदमी के पास आम आदमी सर्वेक्षण समिति गई, उससे पूछा ''विकास का आप क्या मतलब लेते हैं?'' वह बोला ''बन्दरों की तरह उछलने को विकास कहते हैं। विकास के लिये आवष्यक है कि बन्दरों के हाथ में उस्तरा दे दिया जाये। वही हमने किया और खुद को लहुलुहान कर बैठे। न तो रोजगार बढ़ाने कोई विदेषी कम्पनी आई और न ही पड़ोसी देषों से रिष्ते सुधरे। हमारे प्रधानमंत्री 'तू कौन, मैं ख्व्वाम खाह।' की तर्ज पर यहां वहां पंगत खाने चले जाते हैं।
सरकार स्वच्छता पर बहुत ध्यान दे रही है, अच्छा है। पर पड़ोस के साहब कुत्ता घुमाने लाते हैं और मेरे घर के सामने खुद ऊपर की गंदगी और कुत्ता नीचे की गंदगी कर जाता है। हमारे घर के आगे की सड़क साफ करने के तुरन्त बाद आवारा कुत्ते गंदगी कर निचला हिस्सा पौंछ जाते हैं। साहबों से कहा जाये कि वे उनके कुत्ते के लिये षौचालय बनवायें और सरकार सार्वजनिक कुत्ता षौचालय बनवाकर आवारा कुत्तों को उन्हीं में पेट साफ करने की आदत सिखलाये।
सार्वजनिक षौचालयों में इन्जीनियर सोख्ता गड्ढ़ा नहीं बनवा रहे हैं। समतल सतह पर केवल 'सीट' रखकर उनका उदघाटन करवा रहे हैं। अब एक आदमी कितने दिनों तक उनका उपयोग करे।
अन्त में सब समितियों का प्रतिवेदन एकत्रित किया गया और निर्णय प्रकाषित करवाया गया कि देष का सर्वांगीण विकास तेजी से हो रहा है।

.........'''.........

हादसे दर हादसे
पत्नि के भयानक भाइयों को साले कहा जाता है। जो नफरत और प्रेम का रिष्ता पत्नि से होता है वही जीजा का सालों से रहता है। फर्क बस इतना रहता है कि पत्नि स्त्रीलिंग और साले लठैत लिंग होते हैं।
मेरी पत्नि ने मुझे ठेलते हुये कहा कि तुम्हारे प्यारे साले तुम्हें याद कर रहे हैं।
मैनंेे जवाब दिया ''इसी लिये मुझे उबकाई आ रही है।''
पत्नि ने उप सामान्य ज्ञान बघारते (या छोंका लगाते हुये) हुये कहा कि ''जब आपका प्यारा जैसे कि मैं याद करती हूँ तब हिचकियाँ आतीं है उबकाई तो औरतों को तब आती है जब खुषी का कोई समाचार मिलने को होता है।
फिल्मांे ने हमारा सामान्य ज्ञान विकृत कर दिया है। मैनें जवाब दिया ''सहीं है पर आदमियों को तब उबकाई आती है जब उन्हें कोई डरावना आदमीं याद करता है। मैं मेरी ससुराल नहीं जाऊंगा। तुम्हारे भाई लोग लठैत है। तुमने देखा नहीं कि मैं ससुराल से लौटते वक्त कई बार प्लास्टर बंधवा कर आया हूँ।
पत्नि ने प्रतिरोध किया क्यों मेरे भाइयों को बदनाम करते हो केवल दो बार ही तो प्लास्टर बंधवा कर आये हो। एक बार तो तुम्हारी ही गलती थी। ''जब मंझले ने तुम्हें लात मारी थी तब तुम ही गिर पडे थे। अब उन्हें क्या मालूम था कि तुम इतने लिस्सड़ हो।''
मैं ने कहा '' तुम्हें तुम्हारे पिता जी की तेरहवी दिन की याद नहीं है जब तुम्हारे बड़े भाई ने तुम्हारे मंझले भाई को ललकारते हुये कहा था कि ''मंझले खाना बाद में खायेंगे। तू तेरा लट्ठ उठा और मैं मेरा उठाता हूँ। देखूं, तो तुझमें वही दमखम है कि नहीं जो षोले में जय और वीरू मंे था।'' फिर वे दोनों मेहमानों को

ललकारते हुये कह गये थे ''खबरदार जो किसी ने हमारे लौटने के पहले खाना खाया या कोई भागा। हमें मालूम है कि कौन साला कौन सी पत्तल पर बैठा है।''
''मगर उनमें प्रेम भी तो बहुत है। तुमने देखा नहीं था कि वे दोनों कितने प्रसन्नचित्त वापिस आये थे भले ही दोनों के सिर फूट गये थे।'' पत्नि ने कहा।
मैंने कहा '' हां मुझे याद है कि हम डरते हुये वापिस उसी दिन लौट आये थे।''
पत्नि ने प्रतिवाद किया'' तुम्हीं डर रहे थे। मैं तो दोनो का प्रेम देखकर खुष थी।''
मैंने कहा '' तो तुम्हीं चली जाओं मैं तुम्हारा ट्रेन से आरक्षण करवा देता हूँ।''
पत्नि बोली '' मुझे जरूरी काम न होता तो मैं चली जाती। मुझे मिसेज षुक्ला से एक झगड़े का निपटारा करना है।''
मैंने कहा '' तो तुम्हीं बाद में चली जाना। लड़कियों को तो मायके जाने में खुषी होनी चाहिये।''
पत्नि ने कहा '' हाँ होती है पर मुझे उनके झगड़े से डर नहीं लगता उनके प्रेम से लगता है।''
मैंने फिर भी प्रतिवाद किया ''मैं नहीं जाऊँगा उन लठैतों के बीच।''
पत्नि बोली ''अब वे सुधर गये हैं वे अब लट्ठमारी नहीं करते केवल हाथा-पाई करते हैं जैसी कि मैं तुम्हारे साथ करती हूँ।''
चूंकि तवा गर्म होने को ही था। अतः मैंने बुझे मन से कहा अच्छा मैं चला जाता हूँ पर तुम मेरी आरती उतार दो।''
पत्नि ने जवाब दिया '' अब चले भी जाओ कुछ ऐसा वैसा नहीं होगा।''
मैंने कहा '' मैं तुम्हारे भाइयों के थप्पड़ों से नहीं डरता। मैं तो ट्रेन एक्सीडेंट से डरता हूँ। देख नहीं रही है आज यानि दिनांक 29/08/2017 तक पिछले दस दिनों में तीन ट्रे ेन एक्सीडेंट हो गये हैं।''
पत्नि ने कहा ''अरे हां, मैं भूल गई थी कि तुम्हें मेरे भाइयों के अलावा भी खतरा हो सकता है।'' फिर कुछ देर चुप रह कर उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया, नथुने फड़कने लगे और गुस्से में जो भी षारीरिक भाषा में परिवर्तन हो सकते थे होने लगे। वह तमतमा कर बोली ''अच्छा इसीलिये तुम मेरा आरक्षण करवा रहे थे कि मुझे टे्रेन में बिठाने के बाद मेरा मारक यज्ञ करवा सको।''
मैं जल्दी में कह गया ''सहीं पकड़े हो।'' फिर जल्दी से बोला तुम जल्दी से आरती उतारो, नही ंतो मैं रूक जाऊंगा।
पत्नी जल्दी से आरती सजा कर ले आई पर उल्टी आरती उतारने लगी। मैंने आतंक में आकर पूछा ''क्यों मेरी उल्टी आरती उतार रही हो?''
उसने जवाब दिया ''मैं उल्टी आरती नहीं उतार रही हूँ बल्कि तुम्हारी वे बलायें उतार रही हूँ जो रास्ते में आने वाली हैं क्योंकि वहां तुम्हारी झकर तो मेरे भाई ही उतार देंगे।
खैर बड़े बे-मन से मैं ट्रेन में बैठा। मैं मुड़-मुड़ कर अपने षहर को देखता जा रहा था कि मालूम नहीं मैं तीर्थ यात्रा से वापिस भी लौट सकूंगा या नहीं।
कुछ जंक्षन सकुषल निकल गये। वहां उतरने वाले यात्री ट्रेन के पैर पड़कर उतरने लगे। और जो डब्बों के अंदर थे, वे उतरने वालों को बधाइयां देने लगे। हर जंक्षन पर सब यात्री भगवान को धन्यवाद देते जा रहे थे। फिर एक जंक्षन गुजरने के बाद बीच जंगल में क्या हुआ कि खड़-खड़ की आवाज आने लगी फिर कुछ मीटर चल कर ट्रेन एक तेज झटके के साथ ऐसी रूकी कि ऊपर के यात्री नीचे गिर गये और नीचे के यात्री उछल कर ऊपर की बर्थ पर जा गिरे। हम जिन्दा लोगों ने अंदाज लगाया कि ट्रेन का (रेलगाड़ियां जब चलती थी तब दुर्घटनायें नहीं होती थीं) एक्सीडेंट हो गया है। 'एक्सीडेंट' षब्द का उपयोग इसलिये किया गया है कि दुर्घटना में वह भयानक प्रतिध्वनित नहीं होती जो कि एक्सीडेंट में होती है।

जो बच गये थे वे नीचे उतरे। देखा कि हमारी टेªन सामने की ट्रेन से टकरा गई थी। दोनों ट्रेनों के आगे के तीन डब्बे इतने चकनाचूर हो गये थे कि मरे हुये व्यक्तियों के पोस्टमार्टम की भी जरूरत नहीं रही थी। जो मृतक थे उनमें से हरेक के पाँच-पाँच रिष्तेदार जानें कहां से एकदम अवतरित हो गये थे। बाकी सब यात्रियों मंेें स्वयं को घायलों की पंजी में लिखवाने की होड़ मच गई। कुछ पास के षहर वाले भी आकर टेबिल के नीचे से घायलों में नाम लिखाने लगे जैसा कि भोपाल गैस काण्ड मंेें हुआ था। भोपाल गैस काण्ड में कुछ लोग आस्ट्रेलिया में थे पर भोपाल गैस काण्ड से पीड़ित हो गये थे।

भारत में चमत्कार होते रहते हैं। जो पी.एम.टी. में ‘‘फेल’’ हो जाते हैं उनका एडमीषन मेडिकल कालेज में हो जाता है और जिनको पास होने की आषा होती है वे निराष होकर अगले साल फिर पेपर्स अच्छा होने के बावजूद फेल होने की तैयारी करने लगते हैं। आज कल तो ‘मेड इन चाइना’ डाक्टर आने लगे हैं जो पी.एम.टी. को लात मार कर सरकारी नौकरी पा जाते हैं। भविष्य अब उन्हीं डाक्टरों का उज्जवल है जो गोरखपुर काण्डों को अंजाम देकर भारत की वर्तमान सख्या को कानूनी रूप से कम कर सकें।

मैं भीड़ का हिस्सा ही था जैसे कि हर आदमी होता है। कृतिम सहायता के नाम पर पास के षहर वाले मृतकांे के जेब, कलाई (घड़ियों के लिये), महिलाओं की कलाईयों और गरदन की तलाषी ले रहे थे। सहायता करने वालोें की होड़ लगी हुई थी। फिर पुलिस आ गई और सहायता करने वालों को डन्डे मार कर उनकी तलाषी लेने लगी। उनके सद्कार्य के बाद सचमुच के सहायता करने वाले आये जो स्वयं का आटा एवं घी खर्च करके सब्जी-पूड़ी बना कर जठराग्नि रूपी अग्नि में स्वाहा करने लगे।

इसके बाद एम्बुलेंसें और फायर बिग्रेडें आ गईं । साथ में उच्चाधिकारी लोग आ गये। अब अपराध वैसे ही रूक गये जैसे कीटनाषक दवाईयों के छिड़काव से फसल के कीड़े मर जाते हैं।

अब सचमुच के घायलों को अस्पताल पहुंचाया जाने लगा।

मैंने सड़क छाप ज्ञान बगराया ‘‘जो डब्बे चकनाचूर हो गये हैं उन्हें छोड़कर बाकी डब्बों को तो अपने गंतव्य पर ले जाओ।’’

सबने जलती नजरों से मुझे देखा । फिर मेरा नाम भी दिमागी घायलों में लिख कर भरती करवा लिया गया एक षायर भीड़ देख कर गजल सुनाने लगे , उन्हें घायलों से निम्न प्रेरणा मिली:

घायलों के हुक्म नामे, कब्र तक जाने लगे।
अफसरों के झुंड, लाषों को धमकाने लगे।
सफर के आगाज पर थीं तितलियां मैदान में।
मील कुछ आगे चले तो गिद्ध मंडराने लगे।

बचे कुछ लोगों ने उनकी पिटाई लगा दी तो वे सचमुच के षायर बन गये।

भीड़ नेताओं को प्रेरणा देने लगी। एक टोपीधारी कागज की पुंगी बनाकर एक टूटे रेल के डब्बे पर खडे होकर भाषण देने लगेः

इस रेल दुर्घटना में विरोधी पार्टी की सरकार का हाथ है जिसने साठ साल देष पर राज्य किया । उन्होने आई.एस.आई से मिलकर इस षड़यंत्र को अंजाम दिया है।

एक अफसर ने कहा साहब आप लाषों पर खड़े होकर भाषण दे रहे हैं । आप हटें तो डब्बा तोड़ कर लाषों और बचे घायलों को निकाला जाये।

उन्हें अपनी ही पार्टी के अफसरों का कहना मानना पड़ा।

यहां पूरी लाषों को निकाल भी नहीं पाये कि एक्सीडेंट के दो मिनिट बाद ही मंत्रालय का वक्तव्य आ गयाः दोषियों को बख्षा नहीं जायेगा। हमनें मजिस्ट्रियिल जांच के आदेष दे दिये हैं और रेलमंत्री को हटा कर उसे उद्योग मंत्री बना दिया है। ‘‘ऐसा लगता है कि सरकार के पास हर दुर्घटना के लिये ऐसे स्टेटमेन्टों का

प्रसारण विभाग अलग ही है जो त्वरित स्टेटमेंट दे देता है। सरकार रेल मंत्री बदल देती है खराब पटरियां नहीं बदलती। जर्जर कच्ची नींव पर अ्ट्टालिकायें बनाती जाती है।
मुझे भी जबरन अस्पताल ले जाया गया। वहां सरकार के पास इतने बिस्तरों का इंतजाम नहीं था जितने की घायल थे। अतः सड़कों पर घायलों को बोतल लगाई जाने लगी। जब तक उच्चाधिकारी रहे तब तक डाक्टर मुस्तैदी दिखाते रहे, जब उच्चाधिकारी मंत्री की सेवा में लग गये तो डाक्टर निजी अस्पतालों में चले गये।
उनके जाने के बाद वार्डब्वाय घायलों से इनाम मांगने लगे। एक घायल ने कहा ''एक्सीडेंट के पहले मेरी जेब में छब्बीस हजार रूपये थे, मेरा खराब समय आया तो लक्ष्मी मेरा साथ छोड़कर चली गयी। तुम्हारा एकांउट नंबर दे दो। मैं अच्छा होकर तुम्हारे एकांउट में पैसे जमा करवा दूँगा।
फलतः एक्सरे के लिये उसे स्ट्रेचर पर पहले ले जाया जाने लगा। वैसे भी मुझे लगा कि अस्पताल में स्ट्रेचर बहुत कम थे, जो थे उनमें भी रस्सियों से रिपेयरिंग की गई थी।
ऐसे ही एक स्टे्चर पर उस अमीर आदमी को एक्स रे के लिये ले जाया जाने लगा। दुर्भाग्य वष वह स्ट्रेचर बीच में से टूट गया। वह अमीर आदमी सिर के बल नीचे गिर गया और सिर की चोट की वजह से उस आदमी की मौत हो गई। जिसे भगवान ने बचाया उसे अस्पताल ने मार दिया।
उधर घटनास्थल पर टेलीविजन के पत्रकार घायलों से पूछ रहे थे '' तो तुम्हें घायल होकर कैसा लग रहा है।''

पुरूरूवा
ययाति का मन भोगों से तृप्त नहीं हुआ था कि वे षुक्राचार्य के श्राप से बूढ़े हो गये। उन्हें वरदान भी मिला कि अगर कोई नौजवान उनका बुढ़ापा उधार लेकर उसकी जवानी उन्हें दे दे तो वे जवान हो जायेंगे।
ययाति ने उनकी पटरानी देवयानी के बच्चों से कहा '' तुम मेरा बुढ़ापा उधार ले लो। जब मैं भोगों से तृप्त हो जाऊंगा तो तुम्हारी जवानी वापिस दे दूंगा।'' पर देवयानी का कोई भी लड़का तैयार नहीं हुआ। तब उन्होनें षर्मिष्ठा के लड़कों से निवेदन किया कि उनमें से कोई ययाति का बुढ़ापा लेकर उन्हें अपनी जवानी दे दे। जब वे भोगों से तृप्त हो जायेंगे तो उनकी जवानी वापिस कर देंगे। षर्मिष्ठा दैत्य राजा की पुत्री थी। वह देवयानी की दासी बना दी गई थी क्योंकि देवयानी दैव्य गुरू ब्रह्यर्षि षुक्राचार्य की पुत्री थी।
षर्मिष्ठा का छोटा लड़का पुरूरूवा ययाति का बुढ़ापा लेने तैयार हो गया। इस तरह बाप का बुढ़ापा बेटे ने लिया। यह कहानी पढ़ते-पढ़ते रमेष रो दिया।
रमेष गोपाल कृष्ण का बड़ा लड़का था। इसके बाद गोपाल कृ्ष्ण ने छः लड़कियाँ और पैदा कर दीं। रमेष यह सब चुपचाप देखता रहा उसका बचपन उसकी छोटी बहनों को टीक लगवाने उनका स्कूल में दाखिला करवाने एवं उनकी षादी के लिये लड़का देखते हुये निकल गया। गोपाल कृ्ष्ण उसे कवलज वक्त बाप कहते थे यानि कठिन समय का बाप।
रमेष ने षादी नहीं की। इधर जब रमेष पैंतालिस वर्ष का हो गया तो उसने बाप से षादी करने की आज्ञा मांगनी चाही तो पिता ने पहले ही क्रूरता पूर्वक उनकी तीर्थ यात्रा की इच्छा जाहिर कर दी। एक दिया जलने के पहले ही बुझ गया।
दर असल गोपाल कृ्ष्ण की तीर्थ यात्रा तो एक बहाना था। जब वे बच्चे पैदा करने से ऊब गये तो उन्हें घूमने-फिरने की योजना बनाना चालू कर दीं। माँ भी चुपचाप उनकी हाँ में हाँ मिलाने लगी। अपने व्यापार का पूरा वनज रमेष पर डाल कर वे यात्रा पर निकल गये। उन्होंने एक दिन भी नहीं सोचा कि रमेष के कुछ अरमान होंगे। गोपाल कृ्ष्ण जी रमेष का भी ए.टी.एम. स्वयं के साथ में ले गये।

पण्डित जी ययाति एवं पुरूरूवा की कहानी सुना रहे थे। पण्डित ने बतलाया कि एक हजार वर्ष तक भोग भोगने के बाद महाराज ययाति को भोगों की निस्सारता मालूम हो गई। उन्होंने पुरूरूवा को उसकी जवानी लौटा दी। यह सुन कर रमेष के चेहरे पर एक उदासी छा गई। वह एक ऐसा पुरूरूवा था जिसकी जवानी उसके पिताजी लौटा नहीं सकते थे, बल्कि वे उसकी जवानी खा गये थे।

सरकारी अस्पतालों में चिकित्सकों की अनुपलब्धि

-डाॅ. कौषल किषोर श्रीवास्तव

सामान्यतः मरीजों की यह षिकायत रहती है कि अस्पतालों के बाह्रय रोगी विभाग में चिकित्सक उपलब्ध नहीं रहते, बाह्रय रोगी विभाग में विषेषज्ञ उपलब्ध नहीं रहते, वार्ड मंे चिकित्सक राउण्ड नहीं लगाते, महिला रोग विषेषज्ञ या तो गर्भवती माताओं को भरती नहीं करतीं उनका परीक्षण नहीं करती, जचकी के समय सीजेरियन आपरेषन नहीं करती या अनावष्यक सीजर आपरेषन नहीं करतीं, षल्य क्रिया विषेषज्ञ षल्य क्रिया नहीं करते, अल्ट्रासोनोग्राफीज नहीं होती, एम.एल.सी. रिपोर्ट सहीं समय पर नहीं देते, मरणोपरांत जाचों के लिये देर से उपलब्ध होते हैं, मरीज का संतोषजनक समाधान नहीं करते, एक निष्चित समय के पष्चात् जाँच के लिये सेंपल नहीं लिये जाते, ब्लड बैंक में या तो व्यापार होता है या रक्त उपलब्ध नहीं होता, परची बनाने वाले उपस्थित नहीं रहते, वार्डब्वाय स्ट्रेचर खींचने उपलब्ध नहीं होते हैं षौचालयों या पूरे अस्पतालों में ही गंदगी रहती है, बाजार की दवाईयाँ लिख दी जाती हैं, अस्पताल में आकस्मिक औषधियां उपलब्ध नहीं रहतीं, चिकित्सकों का व्यवहार अपमानजनक रहता है इत्यादि।

यहाँ एक एक कर प्रत्येक बिन्दु का विष्लेषण किया जायेगा। जिन बिन्दुओं का समाधान एक सा होगा उन्हंे एक साथ ले लिया जायेगा।

(1) चिकित्सकों द्वारा प्राइवेट प्रेक्टिसः- यह सही है कि चिकित्सालयीन समय में कुछ चिकित्सक स्वयं की प्रेक्टिस उनके प्राइवेट अस्पतालों में करते हैं। यदि उनके विरूद्ध अनुषासनात्मक कार्यवाही की जाये तो सारे चिकित्सक एक होकर हड़ताल पर जाने की धमकी देने लगते हैं। कुछ चिकित्सक जन प्रतिनिधियों से संबंध बनाकर रखते हैं। यदि उन पर अनुषासनात्मक कार्यवाही की जाये तो वे प्रषासक चिकित्सक पर अप्रत्यक्ष दबाव बनाने लगते हैं। ऐसे प्रषासकों पर स्थानीय या मंत्रीमंडलीय जन प्रतिनिधियों के दण्डात्मक दूरभाष

आने लगते हैं जिसमें प्रषासकों का स्थानांतरण या निलम्बन प्रमुख है। कई चिकित्सकों के प्राइवेट चिकित्सालय जाने के लिये अधीनस्थ स्टाफ द्वारा उनके गृह के चिकित्सालय में जाने के लिये दबाव दिया जाने लगता है। कुछ चिकित्सक मरीजों और उनके रिष्तेदारों से चिकित्सालय में तो दुवर््यवहार करते हैं पर जब मरीज उनके घर भारी षुल्क दे देता है तो ऐसे चिकित्सकों का व्यवहार विनम्र हो जाता है। कुछ चिकित्सकों ने समानान्तर स्वयं को चिकित्सालय बना रखे हैं। क्षय रोग चिकित्सकों के घर पर क्षयरोग मषीनें लगीं हुई होती हैं। जाने क्यों अस्पताल की डिजीटल एक्स रे या सी.टी.स्केन मषीनें अक्सर खराब रहतीं है पर उनकी चलती रहती हैं। पैथोलाॅजी विभाग के चिकित्सकों की स्वयं की प्रयोगषालाये रहती हैं। ऐसे सारे चिकित्सक मरीजों को उनके प्रायवेट चिकित्सालय आने के लिये विवष करते हैं।
कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ चिकित्सक अत्यंत लालची होने के कारण असहाय मरीजों से अमानवीय व्यवहार करते हैं।
(2) चिकित्सकों की न्यायालयों में गवाहीः- कुछ चिकित्सकों की न्यायालयों में प्रतिदिन गवाही रहती है। कुछ न्यायालय उन्हें अपरान्ह पूर्व ग्यारह बजे ही न्यायालय में हाजरी देने को कहते हैं। कहीं कहीं तो उन्हें दिनभर ही स्वयं की गवाही का इंतजार करना पड़ता है ऐसे प्रकरणों में गम्भीर मरीज उनका इंतजार करते करते मर जाते हैं विषेषकर दूरस्थ स्थानों के चिकित्सकों के स्थानों के मरीज। अतः उच्च न्यायालयों को कोई ऐसी विधि ईजाद करना चाहिये जिससे मरीजों का हित हो सके। मैंने ऐसे चिकित्सक भी देखे हैं जिन्हें एक ही तारीख में चार चार न्यायालयों में गवाही देना पड़ी । इन तथ्यों पर न्यायालय यह तर्क देने लगते हैं कि कुछ चिकित्सक बार बार समन करने पर भी गवाही देने नहीं आते बेषक ऐसे चिकित्सकों पर कार्यवाही होना चाहिये।
(3) व्ही.आई.पी. ड्यूटीः- क्या आपने कभी यह बात ध्यान में लाई कि जिला चिकित्सालयों में प्रतिदिन ही कोई न कोई उप संचालक, संयुक्त संचालक, संचालक, उप सचिव, सचिव, या जिलाध्यक्ष तक निरीक्षण के लिये आते रहते हैं सब अपेक्षा करते है कि चिकित्सकों का पूरा अमला उनके साथ हो। फिर मंत्री लोग तो प्रतिदिन ही जिले में आते रहते हैं जो अपेक्षा करते हैं कि जिलाध्यक्षों से लेकर एम्बुलेंस सेवायें तक उनके पीछे लगीं रहें। दिन भर चिकित्सक भूखे प्यासे एम्बुलेंस में बैठे रहते हैं। एक स्थानीय विधायक तक उनके जन सम्पर्क के दौरान एम्बुलेंस ड्यूटी की अपेक्षा उनके पीछे लगाते थे।
(4) रोग निदान षिविरः- कई जन समस्या निवारण षिविरों में रोग निदान षिविर भी लगा दिये जाते हैं। कभी-कभी ऐसी परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हुई है कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में मात्र दो चिकित्सक होने के कारण एक रोग निदान षिविर और दूसरे को न्यायालय जाना पड़ता है। इस तरह प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खाली हो जाता है।
कई समाज या समाज सेवी संस्थायें इस तरह के षिविर स्वयं का महत्व बताने के लिये षिविर रख देते हैं। वह भी षासकीय चिकित्सालय से मात्र कुछ कदम दूरी पर। कुछ संस्थायें तो धार्मिक भण्डारों में एम्बुलेंस सेवायें चाहती है, इन स्वयंसेवी संस्थाओं के रोग निदान षिविरों में चिकित्सक भी सरकारी होते हैं एवं दवाईयाँ भी सरकारी होती हैं। उनका मात्र ‘बैनर’ ही रहता है।
मैं ऐसे में पुलिस की एम्बुलेंस सेवा की प्रषंसा करने से स्वयं को रोक नहीं पा रहा हूँ उनकी सेवायें भी मैंने मुस्तैद देखी है।
समाधान
(1) सामान्य प्रबन्धकः- आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व मैंने ‘सरिता’ में सुझाव दिया था कि चिकित्सालयों में सामान्य प्रषासक रखे ही जाने चाहिये। इस सुझाव का स्वार्थी चिकित्सकों से प्रबल विरोध की सम्भावना

है पर यह कड़वी दवा तो जनता को पीनी ही पड़ेगी। चिकित्सकों की एक ही धमकी रहती है कि वे हड़ताल पर चले जायेंगे। षासन को भी कठोर होकर त्वरित कार्यवाही करना पड़ेगी।

आई.एम.ए. इस कदम का विरोध कर सकती है, पर आई.एम.ए. एक कागज का षेर ही है। अधिक से अधिक यह संस्था काली पट्टी बांधकर विरोध प्रदर्षन ही कर सकती है।

(2) प्राइवेट प्रेक्टिस पर रोेकः- क्या एक जज या जिलाधीष को इस तरह की कोई सुविधा है? यदि नहीं तो षासकीय चिकित्सालयों के चिकित्सकों को ही यह सुविधा क्यों दी गई है? जनहित में इस पर रोक लगाना आवष्यक है।

(3) त्वरित कार्यवाहीः- किसी चिकित्सक के विरूद्ध षिकायत करने पर या तो चिकित्सक से स्पष्टीकरण पूछ लिया जाता है या चेतावनी दे दी जाती है। यह अनुचित है? जनषिकायत पर त्वरित कार्यवाही होनी चाहिये जैसी कि जजों के विरूद्ध होती है।

(4) केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवाः- सिविल सर्जन एवं सी.एम.एच.ओ. का पद भारतीय स्वास्थ्य सेवा के तहत् जिलाध्यक्ष के समकक्ष होना चाहिये, अन्यथा प्रभारी सिविल सर्जन के एवं सी.एम.एचों के करण ये सेवायें लचर ही रहेंगी। संविधान में भी सिविल सर्जन को जिलाध्यक्ष एवं पुलिस अधीक्षक के समकक्ष ही रखा है। मालूम नहीं यह पद एक लचर पद बना दिया गया यह अनुषंसा भी मैंने चालीस वर्ष पूर्व सरिता में की थी।

(5) फालतू के षिविरः- इस पर एम्बुलेंस या चिकित्सकों या सरकारी दवाइयों की अनिवार्यता पर रोक लगानी चाहिये। ये रोग निदान षिविर चिकित्सकों की सेवाओं, एम्बुलेंस की सेवाओं, या सरकारी औषधियों का अपव्यय है।

(6) न्यायालयों में गवाहीः- जनहित में यह समस्या न्यायालयों को ही हल करना है।

-----888888-----

हिंसा एवं नफरत की राजनीति

-डाॅ. कौषल किषोर श्रीवास्तव

मोहम्मद करीम अली जिन्ना ने जब महात्मा गांधी से कहा ‘‘मिस्टर गांधी हिन्दुस्तान के रिलीजन के बेस’’ पर दो टुकड़े हो जाने चाहिये। जहां हिन्दु ज्यादा रहते हैं वह हिन्दुस्तान कहलाये और जहां मुस्लिम ज्यादा रहते हैं उसे हम पाकिस्तान बनायंेगे, तब महात्मा गांधी ने कहा था ‘‘भाई जिन्ना, हिन्दुस्तान में तो हर गांव में हिन्दु और मुसलमान साथ साथ रहते हैं। हिन्दुस्तान में कितने पाकिस्तान बनाओगे?’’

बहरहाल, पाकिस्तान को दो टुकड़ों में बनना था तो बन गया। फिर धर्म के आधार पर जन संख्या का विनिमय बड़े आधार पर हुआ। फर्क बस इतना था कि पाकिस्तान को हिंदुओं की हत्यायें राज समर्थित थीं मगर भारत में मुसलमानों की रक्षा के लिये राष्ट्र को नेताओं की जाने देना पड़ीं। जैसे तैसे षान्ति तो हुई, पर प्रजातंत्र के दोष भी सामने आने लगे। नेता लोग स्वयं के लाभ के लिये धार्मिक ध्रुवीकरण करने लगे। कमोवेष वे सफल भी हो जाते हैं।

'इलेस्ट्रेटेड वीकली' के एक सम्पादकीय में खुषवन्त सिंह ने कहा था कि नफरत की राजनीति बन्द हो जानी चाहिये, लेकिन पार्टियां स्वयं के लाभ के लिये नफरत की आग बुझने नहीं देगी वरन उसमे पेट्रोल डालतीं रहती हैं। ये नफरत किसी दिन प्रजातंत्र को संकट में डाल देगी। इस नफरत की आग को पाकिस्तान भी स्वयं के लाभ के लिये हवा देता रहेगा क्योंकि जब तक भारत में नफरत की आग जलती रहेगी तब तक वह रोटियां सेकता रहेगा।

आज केरल में आर.एस.एस. के कार्यकर्ताओं की हत्यायें हो रही हैं। उत्तर प्रदेष में गौ-रक्षा के नाम पर व्यक्तिगत दुष्मनी निकाली जा रही है। पष्चिम बंगाल (बंगलादेष बनने पर अब वह पष्चिमी बंगाल नहीं रहा) में कम्युनिस्ट और तृण मूल कांग्रेस में गला काट (अब बी.जे.पी. के कार्यकर्ताओं की भी हत्यायें हो रही हैं) स्पर्धायें हो रही हैं। बिहारियों को हर जगह मारा जा रहा है। मासूमों के साथ पाष्विक बलात्कार एवं हत्यायें (जिससे गवाह न बचें) हो रहीं हैं, कष्मीर तो स्वर्ग से नरक बन ही गया है, नक्सली आये दिन बेगुनाहों एवं सी.आर.पी.एफ. के जवानों को मार रहे हैं, ये सब क्या हो रहा है?

नेताओं एवं मंत्रियों की जबान पर काबू नहीं रहा। षीर्ष नेताओं जैसे नरेन्द्र मोदी, अरूण जेटली, राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री किरण रिजीजू, सोनिया गांधी, मनमोहन सिंह, राहुल गांधी, कमलनाथ, सिन्धिया, मध्यप्रदेष, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेष, बिहार, इत्यादि के मुख्य मंत्रियों को छोड़ दिया जाये तो भा.ज.पा. के कुछ नेता कांग्रेस के दिग्विजय सिंह जैसे नेता, हरियाणा के कुछ नेता एक दूसरे को कुत्ता, राक्षस, रावण जैसे षब्दों से सम्बोधन कर स्वयं की पार्टी को बदनाम ही कर रहे हैं। इससे जनता में केवल स्वयं की पार्टी की छवि ही खराब हो रही है। इन अपषब्दों से जनता एक दूसरे से नफरत नहीं करती। भारत की जनता इतनी मूर्ख नहीं है। बल्कि इन नेताओं से ही नफरत करने लगती है।

हरियाणा के एक नेता ने दिनांक 05/11/2017 को बिगड़े बोल कहे कि सौ कुत्ते भी मिलकर गुजरात में भा.ज.पा. को नहीं हरा सकते। यह क्या भाषा है। कुत्तों से उनका तात्पर्य किससे है। कांग्रेस, पटेल या अनुसूचित या दबे हुये लोगों से। याद रहे ऐसे ही षब्दों का उपयोग करके दिग्विजय सिंह कांग्रेस का मध्यप्रदेष से सफाया करवा चुके हैं। अब कांग्रेस मध्यप्रदेष में केवल कमलनाथ या सिंधिया जैसे नेताओं के व्यक्तिगत प्रभाव के कारण बची हुयी है।

भारत की जनता हिंसा एवं नफरत को सहन नहीं करती है, अपमान तो बिल्कुल नहीं। यदि आजादी का आंदोलन अहिंसक नहीं होता तो भारत को आजादी मिलना मुष्किल थी। मेरा तो मानना है कि अब हमें नफरत भरा इतिहास भी भूल जाना चाहिये। इतिहास केवल नफरत फैलाता है या यों कहें कि आज के नफरत की जड़ें बीते कल के इतिहास के कारण है।

भारतीय जनता पार्टी को गलत फहमी है कि जनता ने उन्हें पूर्ण बहुमत राम मंदिर के कारण दिया है, नहीं। भारतीय जनता पार्टी उसकी आर्थिक नीतियों के कारण जीती थी। आर्थिक नीतियां ऐसे कदम हैं जो फूंक फूंक कर रखे जाने चाहिये। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि नोट बंदी एवं जी.एस.टी. अच्छे निर्णय थे पर उनके लागू करने का तरीका गलत था।

आज (एवं अतीत में भी) भारतीय जनता नेताओं की अपेक्षा से अधिक प्रबुद्ध है। वह मुद्दों की राजनीति पसंद करती है, धर्म पर आधारित राजनीति नहीं। राजनीतिज्ञों के धर्म पर आधारित भाषणों से लोग केवल व्यक्तिगत दुष्मनी निकाल रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के कुछ निर्णयों का मुसलमानों ने भी स्वागत किया है, जैसे तीन तलाक का मामला। यकीन मानिये कि यदि सामान्य नागरिक संहिता भी लाई जाती है तो उसका भी सामान्यतः स्वागत होगा। छुटपुट विरोध तो होंगे और होते ही रहते हैं।

आज भारतीय संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति की और बढ़ रही है जिसमें मुसलमान हिन्दुओं के धर्म का और हिन्दु मुसलमानों के धर्म का स्वागत करते हैं। हिन्दु मजारों पर जाते हैं और ताजियों में भाग लेते हैं। मेरे

कई मुसलमान मित्र हैं जो गणेष जी एवं दुर्गा जी की झांकियों में भाग लेते हैं एवं वैष्णव देवी इत्यादि तीर्थों में जाते हैं। ये जो लव जिहाद जैसी चीजें हैं ये तो कुछ पागल लोग ही करते हैं जिनसे हमारा कानून निपटने में पर्याप्त सक्षम है।

----- ’’’’’’-----

प्रसन्नता का कारण

प्रधानमंत्री एक विदेश से वापिस आये थे और दूसरे विदेश जाने की तैयारी में थे । इसी बीच उन्होने मंत्री मंडल की कक्षा ले ली ।

इस मंत्री मंडल में अपनी पार्टी और परायी पार्टी के मंत्री कुत्तों समेत शामिल थे इन कक्षाओं से मंत्री की प्रतिबद्धता और उनके पालतू कुत्तों की संख्या भी मालूम हो जाती थी । जितने पालतू कुते एक मन्त्री के पास उतनी ही ताकत !

इस बार मुस्कुराते हुए प्रधानमंत्री के पास एक ग्राफ था जिसके ऊपर एक जूता रखा हुआ था। उन्होने मंित्रयों से उसका मतलब पूछा । खेल मंत्री फिर बीच में उचके। उन्होने कहा “यह ग्राफ, हाकी का बढ़ता हुआ ग्राफ है जिसको लेकर नौकर शाही के जूते ने रोक दिया है,”

“आप आंशिक रूप से सही है मगर इससे देश को क्या लाभ ?” प्रधानंमंत्री जी ने मुस्कुरा कर पूछा क्रिकेट मंत्री ने जवाब दिया इससे देश को लाभ ही लाभ है अब हाकी ओलम्पिक में प्रतिनिधित्व नहीं कर पायेगी जिससे हम ओलम्पिक में हाकी में नही हार पायेंगे और देश का गौरव बढेगा । हमें ओलम्पिक में हाकी की टीम नही भेजना पड़ेगी जिससे विदेशी मुद्रा बचेगी । वे अच्छे खिलाड़ी जिनको हम नहीं निकाल पा रहे थे अब निकाले जा सकेंगें....................”

“और अपने भाई भतीजो को टीम में घुसा देंगें।” प्रधानमंत्री ने टोका“ और अब तुम बोलो फसल मंत्री ! सर, अगर हम फसलों के उम्पादन को नौकरशाही से रोकते है तो विदेशो से लाल गेहूँ आयत कर सकते है।” गेहूँ चावल मंत्री बोले ।

प्रधानमंत्री जी बोले “ आप आंशिक रूप से सही है इससे हम देश वासियों को विदेशी चीजक खाने के लिए उपलब्ध करा सकते है। इससे विदेश भी खुश होगा, हम भी खुश होंगें और विरोधी पार्टी भी खुश होगी कि उन्हें विरोध करने के बहाने प्रशीतक रथ में रथ यात्रा करने को मिलेगा । हम रथ यात्रा रोकेंगें। इस समर्थन और विरोध में गेहूँ का मुद्दा पीछे रह जायेगा तुम्हारा क्या ख्याल है।” कारखाना मंत्री ?

उद्योग मंत्री किसी विदेश में थे अतः उसी विदेश से बोले “हमारे पास उद्योग जरा ज्यादा की प्रगति कर रहे है उन्हे दबाना जरूरी है” वे हमारे नौकरशाही रूपी जूते से ही दब सकते है वे प्र्रगति करके हमें

चलाने लगे थे “इससे देश को क्या लाभ है ?” प्रधानमंत्री ने मुस्कुरा के पूछा ! उद्‌योगमंत्री भी मुस्कुरा कर बोले “क्या करना है हमें देश के लाभ से ? जनता को मत देना होता है जो उन्होने दिया इससे बड़ी देश सेवा क्या होगी कि हमारी सरकार पाॅंच साल बगैर गिरे चल गई। देश भी खुश है कि उसे जंगलो से, पहाड़ो से और खेतो से बार बार मत देने नही आना पड़ता।”

“ शायद आप सही कह रहे है“ प्रधानमंत्री बोले । बुजुर्ग मानव संसाधन मंत्री के विचार भी ले लेने चाहिए। “ बेरोजगार मंत्री जो प्रधानमंत्री नही बनना चाहते थे पर प्रधानमंत्री बनाते थे बोले “हमारे पास विशाल जनसमुह है उसे हम यदि ताकत और काम दे देंगें तो हमारे नौकरशाह यानि कि हमारा जूता कमजोर पड़ जायेगा। उस फटे जूते को पहनकर हम हमारे देश की उबड़ खाबड़ जमीन पर कैसे चल पायेगें। अत: रोजगार के अवसर कम करना ही पडेगें और जूता मजबूत बनाना ही पड़ेगा। “ये भी सही है प्रधानमंत्री बोले” ! तुम्हारा क्या ख्याल है सांस्कृतिक मंत्री।”

नाच गाना मंत्री ने जवाब दिया “हालांॅकि हमारी समृद्‌ध सांस्कृतिक विरासत है पर जो जूता कहे वही संस्कृति। इस ग्राफ में पनहिये” नहीं है एडीडास का जूता है अतः यह ग्राफ हमारे विभाग का प्रतिनिधित्व नही करता और यह कि हमारे विभाग का बजट बढाया जाना चाहिए सर।

“सोचेगें । “प्रधानमंत्री मुस्कुराये” रक्षा मंत्री जी आपका क्या विचार है इस ग्राफ पर ? “यदि आप विदेशी जूते पहनते है तभी 10 जनपथ में घुस सकते है रक्षा मंत्री बोले “और कुछ” प्रधानमंत्री ने पूछा” यह ग्राफ उल्टा है जूता नीचे है और उसमें से प्रगति निकल रही है “सीमा मंत्री बोले अगर हम पड़ोसीयों को जूते के नीचे रखेंगें तभी प्रगति कर पायेगें अन्यथा वे हमें जूतो के नीचे मसल देंगें।

कर मंत्री बोले “हम हर संभव उपयोगी वस्तु पर कर लगा चुके है 60 साल में कोई वस्तु कर से नहीं बची अब कर हाथ मिलाने और नमस्ते करने पर भी कर लगा देना चाहिए। केवल गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले ही बगैर कर दिये नमस्ते कर सकेंगें।”

“आप कुछ सुनाये” रेल मंत्री तो अपवाद है। रेल मंत्री खुश होकर बोले “हमने तो रेल गाड़ी पटरी पर ला दी है यह ग्राफ तो आड़ा होना चाहिए । जूता यानि इन्जन यानि प्रशासन आगे रहेगा तो देश पीछे पीछे आगे बढ़ेगा। जूते को तो आगे बढ़ना ही पड़ेगा।”

उस ग्राफ पर बहुत कसरत हो गई थी अब वजीरे आजम बोले “हर शब्द का मतलब देखने वाले की समझ में रहता है यह ग्राफ देश पर चड़ता हुआ ब्याज है। पिछले वर्ष यह 30 हजार करोड़ था जो इस साल बढ़कर 60 हजार करोड़ हो गया। यही मेरी प्रसन्नता का कारण है ।”

“इसमें प्रसन्नता का क्या कारण है ? सब एक साथ बोले ।

“इसी साल इलेक्शन है । उन्होने हॅसकर जवाब दिया जो सरकार हमको हराकर बनेगी यह जूता उनके सिर पर पड़ेगा। वे इस बढ़े हुए ब्याज से दबे रहेगें और हम हॅसते रहेगें।”

आध्यात्मिक गुरू का इंटरव्यूह

गुरू ने मेकअप करने में 2 घंटे लगा दिये वे जब फ्रेम में आये तो उन्होने नेत्र अर्द्धनिमीलित कर लिये। मंत्रीजी और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों को उन्होने नीचे आसीत कर दिया। जब पूरा दृश्य प्रभावोत्पादक हो गया तो उन्होने साक्षात्कार लेने के लिए इशारा कर दिया

पहले तो कैमरामेन ने आश्रम के बाहर की दृश्यावली और श्रद्धावनत भीड़ का फिल्मांकन किया कैमरा देख कर भीड़ किंचित अधिक ही श्रद्धायुक्त हो गई । अन्दर के पवित्र चिन्ह्नो, श्रद्धालु मंत्रियों और प्रशासनिक अधिकारियों से होता हुआ कैमरा गुरू पर स्थिर हो गया फिर संवाददाता ने वहीं मूर्खतापूर्ण प्रश्न उछाल दिया। "भगवान आपको गुरू बनकर कैसा लग रहा है"?

गुरू ने प्रश्न लपक लिया और उदासीनता का अभिनय करते हुए कहा "मैंनें संसार त्याग दिया है" कैमरा उनके गले के बहुमूल्य हार और अंगुठियों पर से होता हुआ मूर्ख विदेशी चेलियो पर चिपक गया।

संवाददाता "भगवान आपके गुरू (घंटाल) बनने से देश को कैसा लग रहा है ?

गुरू: भारत शुरू से आध्यात्मिक गुरू रहा है। जब पश्चिमी लोगो का वस्त्रों से परिचय भी नही था (अब भी कम ही है) तब हमारे यहाॅ पुष्पक विमान था, अग्नि बाण थे, चरक और सुश्रुत थे इन्द्र और उर्वशी थे ब्रम्हा विष्णु और महेश थंे । तभी मंत्री जी ने टोक दिया वे बोले आध्यात्म हमारे देश का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है हम आध्यात्म एक्सपोर्ट करते है और प्रतिवर्ष 3 हजार करोड़ डालर का आयात करते है इस व्यापार में न तो कोई धातु या खदान की जरूरत है और ना ही अन्य राॅ मटेरियल की।

कैमरे से गुरूजी की अप्रसन्नता नहीं छुपी । पर वे मंत्रीजी को नाराज नही कर सकते थे अन्यथा हडपी हुई जमीन और संपत्ति का हाथ से खिसकने का डर था।

संवाददाता पूरी तैयारी के साथ आया था । उसने आखरी में दागा जाने वाला प्रश्न बीच में दाग दिया उसने पूछा "महागुरू वो कल्याणी देवी वाला लफड़ा उछलने से आपको कैसा लग रहा है"?

गुरूजी असहाय हो गये मगर संभलकर बोले "प्रेम, प्रेम ही ईश्वर है ईश्वर ही प्रेम है अतः प्रेम करो।"

माया महाठगिन हम जानी। "एक शिष्य भड़क गया बोला सब दुशमन की चाले है एक कोंचिंग क्लास वाला दूसरे कोचिंग क्लास के स्टूडेन्ट को खीचनें के लिए कई घटिया हथंकंडे अपनाता है। वही उन्होने किया जिस कल्याणी का जिक्र वो करते है उसे गुरूजी जानते तक नही ंहमारे आश्रम में ही आप देख लीजिए, लगभग डेढ़ सौ कल्याणियांॅ मौजूद है।"

मंत्री जी आज ज्यादा ही लीक कर रहे थे । टपके "सब सी आई की चाल है हमारी विरोधी पार्टी हमें बदनाम कर रही है इसमें कोई विदेशी षडयंत्र है जो हमें कमजोर बनाना चाहता है।"

इस बीच कैमरा बीच बीच में भीड़ में आर्कषक देह यष्टियों के पास जाता रहा फिर लौटता रहा । अध्यात्म के बीच में श्रृंगार और सुंदर लगने लगता है ।

गुरूजी का योग सत्र प्रारम्भ होने को था अतः कैमरा योग सीखने लगा गुरूजी आसन को योग कहते थे । बीच बीच में वह कोकाकोला और कोलगेट को कोसते जाते थे उन्हें लौकी बचपन मे ज्यादा ही खिलाई गई थी । अतः लौकी की सब्जी और लौकी का रस शिष्यों को ढूंसते जाते थे। वे कभी एलोपैथी को कोसते तो कभी स्त्रियों को। अन्त में वे उनकी फैक्ट्री में बनने वाली किताबे, अगरबत्तियाॅ, चूरन, चटनी, फैनसुई, मालाएॅ इत्यादि बेचने लगे।

कैमरा फिर प्रश्नवाचक हो गया उसने पूछा (महा) गुरू. आप क्या क्या जानते है और आपको कैसा लगता है ?

भगवान बोले, “मैं चमत्कार दिखा सकता हंॅू वेदान्त पर बोल सकता हंॅू जन्म पत्री देख सकता हंॅू, सट्टे के नंबर बतला सकता हंॅू मूर्तियों को दूध पिला सकता हंूॅ टेरो जानता हंॅू तंत्र जानता हंॅू पामिस्ट्रि जानता हंॅू कथावाचक हंॅू, भजन गा सकता हंॅू आय नो आॅलमोस्ट आॅल द एस्पेक्टस आॅफ आकल्ट साइंस।

संवाददाता प्रभावित होता दिखा उसने हाथ जोड़कर कहा “ कृपा कर एक भजन सुना दें गुरू ने पूछा “कौन से रस का भजन ?

श्रंृगार रस का भजन, शांत रस का भजन वीर रस का भजन, वात्सल्य रस का भजन, वीभत्स रस का भजन, या रौद्र रस का ?

दलाली व्यवस्था

औसत आदमी ने बैंक ने ऋण लेंकर मोपेड खरीदी थी। वह ड्रायविंग लायसेन्स लेने के लिए परिवहन कार्यालय भागा जा रहा था। उसे ड्रायविंग लायसेन्स दिलवाने के लिये दस बारह दलाल टाटा सूमो, फोर्ड, इकान, मारूति स्विफ्ट, बोलेरो इत्यादि कारों से उसका पीछा कर रहे थे ।

औसत आदमी ने अपनी मोपेड सीधी आर.टी.ओ. कार्यालय के सामने रोक दी और परिवहन अधिकारी के चेम्बर में घुसने लगा । उसे चपरासी नामक दरवाजे ने रोक दिया और पूछा: "क्यों बे औसत आदमी, कहा ॅ घुस रहा है ?"

औसत आदमी ने जवाब दिया "मुझे आर टी ओ. साहब से ड्रायविंग लायसेन्स बनवाना है।" चपरासी नामक दीवाल बोली "आजादी के बाद से आज तक किसी भी आम आदमी ने आर.टी.ओ. नामक मोटे पेन को नहीं देखा । ड्रायविंग लायसेन्स इत्यादि तो दलाल ही बनाते है आ.टी.ओ. तो केवल दस्तखत करता है।"

औसत आदमी बोला "मगर मैं तो दलाली व्यवस्था खत्म करना चाहता हंॅू सीधे ही ड्रायविंग लायसेन्स बनवाऊंगा। "क्यो भाई एक सुस्थापित अचल व्यवस्था को आप क्यों बदलना चाहते है। दलाली व्यवस्था को खत्म करने से साहब लोगों की बीेबीयों बीच और उन चरवाहो को ड्रायविंग लायसेन्स कैसे मिलेगा जो दुघर्टना के बाद ही स्वचलित बाहन चलाना सीखते है। चपरासी नामक व्यवस्था बोली औसत आदमी भ्रष्टाचार मिटाना चाहता था मगर भ्रष्टाचार व्यवस्था की इच्छा और आवश्यकता थी अतः उसका मिटना असम्भव था। औसत आदमी आंकडो में उलझ गया। सोचने लगा कि शासकीय कर्मचारी मात्र दो प्रतिशत है परन्तु उन्होने अन्ठानबे प्रतिशत नागरिको को गुलाम बना रखा है। भ्रष्ट व्यवस्था जनता को नचाती है और जनता उनका कुछ नहीं कर पाती। दो प्रतिशत से अन्ठानबे प्रतिशत भय खाते है।

चपरासी नामक आदमी ने उसे झकझोरा और पूछा "हे औसत आदमी कहा ॅ खो गये हो वहा ॅ देखो वे दलाल तुम्हारे इन्तजार में नाखून तेज कर रहे है।"

औसत आदमी डर गया। वह डर कर साहब के कमरे में घुसने लगा तो चपरासी नामक मशीन ने उसे बाहर धका दिया।

औसत आदमी साहब से बचा तो दालालो के बीच घिर गया। सब दलाल उसे अपनी ओर खींचने लगे। एक दलाल बोला "मैं विश्वसनीय सुलभ और सस्ता दलाल हंॅू मैं तुम्हारा अस्तित्व न होने भी भी तुम्हारा लाससेन्स बनवा दंॅूगा । मैं कई अजन्में और मृत व्यक्तियों के ड्रायविंग लायसेन्स बनवा चुका हंॅू। इससे लाभ ये है कि आप एन्सीडेन्ट करेंगें तो सजा किसी को न होगी।"

दूसरा दलाल बोला “हमारी पाॅंच पीड़ियाॅ दलाली कर चुकी है । हम खानदानी दलाल है।” आज कल खानदानी शब्द अपना मतलब खो चुका है । वह ऐसा ही जैसे कोई कुत्ता या सुअर कहे कि हम खानदानी कुत्ते है, खानदानी सूअर है। जैसे खानदानी सुअर होना कोई गौरव की बात हो।

औसत आदमी ने पूछा आप दलाली क्यों करते है ?

दलाल जी ने जवाब दिया “इस दुनिया में कौन दलाल नही है । जिन्दगी मौत की दलाल है। मेहनत आराम तलवी की दलाल है फिर दलाल आपको अधिकारियों की हिंसा से बचाते है। ये एक बफर का काम करते है । यहाॅ आर.टी.ओ. आफिस का छोटे से छोटा बाबू भी जानवरो की तरह व्यव्हार करता है। यहाॅ अगर राष्ट्रपति जी भी आयेंगे तो ये लोग उनको गालियाॅ देने से नही चूकेंगे। फिर हरेक सरकारी नौकर को ऊपर के अधिकारियों ने दलाल बना दिया है।”

कलेक्टर चीफ सेक्रेटरी का दलाल है मंत्री मुख्यमंत्री का दलाल है। तो मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री का। पुजारी भगवान का दलाल तो नौकर मालिक का ।

जनता राम को आइने में अपना चेहरा भी घंुधला दिखने लगा । बोला “आप बहुत इन्टेलीजेन्ट है।”

दलाल बोल नही हम इन्टेलीजेन्ट नही है । इस मुल्क में केवल आए.ए.एस अधिकारी को ही वैधानिक रूप से इन्टेलीजेन्ट होने का हक है। वे वैज्ञानिको को, नेताओ को दार्शनिको को या किसी भी भी अपमानित करने का अधिकार रखते है। उनके अधीन सारे अधिकारी डिप्टी इन्टेलीजेन्ट है। हम तो इन्टेलीजेन्ट लोगो के दलाल भर है।

अब औसत आदमी को रस आने लगा था उसने पूछा ”लोग दलाली क्यों करते है ?” दलाल बोला “कोई भी दलाल किसी बड़े आदमी का दलाल नहीं होता है। हर आदमी पेट का दलाल होता है।

“नहीं” इस बार औसत आदमी बोला “कोई भी आदमी भूख का दलाल नही होता बल्कि भूख हवस की दलाल होती है। आप सब एक आदमी की हवस के दलाल है। अब कोई भी मेरा ड्रायविंग लायसेन्स बनवा दें। मुझे मालूम पड़ गया कि कानून तक भ्रष्ट, क्रूर एवं बेइमानो का दलाल है।”

स्थित प्रज्ञ फटेहाल

है फटेहाल जी

वन्दे मातरम

आपकी वजह से बाकी सब मजे कर रहे है। आप भी अपने आपको प्रसन्न महसूस करते रहिये । नहीं तो आजादी खतरे में पड़ जायेगी।

आपके ऊपर से बासठ पन्द्रह अगस्त गुजर गये मगर है हठ योगी आप वहीं के वहीं है आपको गुदगुदाने के लिये पहले पांच सूत्र बने फिर 20 सूत्र मां के बने फिर पांच सूत्र छोटे भाई के बने फिर 20 सूत्र बडे भाई के बने मगर है बीतरागी आप जबडे भीचें रहे । आप नहीं मुस्कुराये।

हे महामानव ! आपके कल्याण के लिये पंचायत बनाई गई नगर पालिका बनाई गई
विधान सभा और लोक सभा बनाई गई मगर आप है कि गरीबी रेखा के नीचे दुबके बैठे है । आप यदि गरीबी रेखा के ऊपर आ जायेंगें तो कोई आप से रिश्वत नहीं मांगने लगेगा आपके कल्याण की योजना बनाने वाले लक्ष्मी पति हो गये पर आप लंगोटी पति से आगे नहीं बड़े । आपके पास डंडा जरूर रहता है पर वह ढोर हांकने से ज्यादा कुछ क्यों नहीं करता । आप वहीं बैठे है जहां मोहन दास जी आपको छोड़ गये थे।

हे वनचर, आपकी भलाई के लिये संविधान नामक वही खाता बनाया गया था उसमें इतने संशोधन किये गये कि संशोधन बहुमत में हो गये। और मूल संविधान अल्पमत में मगर आपको ये सब क्या मालूम । क्या हर संशोधन के बाद आपको कुछ अच्छा महसूस नहीं हुआ? ये आपकी महानता है कि हर पांच साल के बाद आप गुफाओं में से निकल आते है वोट डालते है और फिर अन्त्तध्यान हो जाते है। हमें आपकी इतनी ही जरूरत है । बाकी योजनाओं तो हम मस्टर रोल पर बना लेंगें।

आप दिगम्बर है मगर आपकी रक्षा के लिये टेन्क खरीदे जाते है और कमीशन पर तापें खरीदी जाती है। आप ही के लिये इतने हवाई जहाज और हवाई पट्टियां बनी हुई है आपकी रक्षा के लिये मंहगी होटलों में एटम बम बनाने पर बहस की जाती है । देश को आपके नंगेपन की सुरक्षा के लिये कितना खर्च उठाना पड़ रहा है ।

हे शंकर, आप तो पहाड़ो और जंगलों में रह लेते है मगर आपके नौकरो को आप काफी सुविधायें देते है। आप तो गरमी में बखर हाकते है मगर आप के नौकर एयरकन्डीशन कमरों से बाहर नहीं निकल पाते । काश उन्होने गर्मी के बखर हांके होते।

है धैर्य सागर, जब आपके नौकर आपकी बहुओं के साथ जीन्स में कश्मीर में ट्टटुओं पर सैर करते है तब आप भैंसो को खरखरा कर रहे होते है। नारायण, आपकी हालात सुधारने के लिये सरकार टेक्स पर टेक्स लगाती जाती है पर आप दांत निपोरते रहते है । आप चुपचाप माचिस पर टेक्स दे देते है बीड़ी पर टेक्स दे देते है। नमक और कपडे पर टैक्स दे देते है। ये जानते हुये भी कि अप्रत्यक्ष कर में अमीरों से कम और गरीबो से ज्यादा टेक्स वसूला जाता है। आप स्थित प्रज्ञ बने रहकर पेड़ की खाल छीलते रहते है।

वरदायक ! आपकी रोटी और कपड़ों के नाम पर यह देश पुनिया के बाजार में कटोरा लिये घूमता है वे करोड़ो मन रोटियां और वह अरबो थान कपड़ा कहां चला जाता है। हमें तो आप सदियों से कोदो खाते ही मिलते है।

देशी प्रोड्यूसर की गान्धी

देशी प्रोडयूसर अभी तक पश्चाताप कर रहा है। उसे इस बात को अब तक मलाल है कि एक विदेशी प्रोडयूसर भारत आया, उसने हमारे पूज्य बापू पर गांधी फिल्म बनाई और यहा्ं के बाक्स आफिस और वहा ॅ के आठ आस्कर लूट लिये । गांधी पर वेतहाशा लूटामारी चल रही है। एक पार्टी पचास साल से गांधी के नाम पर देश को लूट रही है तो दूसरी गांधी को ही लूटने की जुगत में है । उस प्रोड्यूसर ने हालंाकि आपत्ति दर्ज कर दी है कि विदेशी आदमी को देशी गांधी पर फिल्म बनाने का हक नही था। तथापि उसने स्वयं गांधी पर बम्बईया (साॅरी मुम्बईया) फिल्म बनाने का इरादा कर लिया है। इसी सिलसिले मे ंउसने टीम के कहानीकार, स्क्रिप्ट, राइटर, गीतकार, संगीतकार, फाइट कम्पोजीटर और डायरेक्टर को बुलवाया ।

कहानीकार बोला हमारे गांधी जुड़वा भाई है जो मेले में जाते है वहा ॅ बड़े गांधी और छोटे गांधी के बाहों पर चरखा गुदवाते है फिर एक गुलामी नामक आंधी में दोनो बिछड जाते है (यहा ॅ गाना क्रमांक 1 डाला जा सकता है)

बड़े गांधीजी को एक अमीर आदमी पालता है और छोटे गांधीजी को एक गरीब आदमी। छोटे गांधीजी एक आफिस में क्लर्क हो जाते है वहीं ”वा” भी काम करती है। वे छोटे गांधीली से प्रेम करने लगती है। (यहा ॅ गाना क्रमांक 2 डाला जा सकता है)

उनका बाॅस एक अंग्रेज है जो छोटे गांधीजी को रिश्वत लेने के लिए उकसाता है मगर वे रिश्वत नही लेते। वे सत्य, अहिंसा और ईमानदारी उस कार्यालय में लाना चाहते है (जो उनके समय से अभी तक नहीं आ पाई।)

वह अंगे्रज बेईमानी रिश्वतखोरी और विदेशी वस्तुओ के साथ उनपर अकेले में हमला करता है े। वे अकेले उन सबसे फाइट करते है फिर कहीं से बड़े गांधीजी भी आ जाते है वे पहले तो अंग्रेज की तरफ से लड़ते है फिर किसी सीन में उनकी कमीज फट जाती है तब उन्हें एक दूसरे की बाॅहो में चरखे दिख जाते है और वे भाई कहकर गले मिल जाते है। इसके बाद फाइट मुक्को से होती है फिर सीढ़ियों के पास तलवारें मिल जाती है वे तलवारों से लड़ने लगते है फिर कहीं संे हेलीकाफ्टर आ जाता है (दिमाग पर जोर न दें कि उस समय हेलीकाप्टर कहा ॅ से आ जाता है) वे उस पर लटककर लड़ने लगते है। फाइट फिर पानी के जहाज पर होती है इसके बाद 5 मिनट की कार रेस होती है अन्त में वे उस अंग्रेज को हरा देते है और भारत माता के कदमों में पटक देते है और कहते है ”मां ये रहा तेरा अपराधी ।” वह अंग्रेज भारत माता की जय बोलता है“ इसके भी अन्त में दोनो गांधीयों की दोनो कस्तूरबाओं (दूसरी भी कहीं से आ जाती है) से शादी होती है वे दोनो गांधीयों के जुड़वा होने के कारण पहले तो भ्रम में पड़ जाती है फिर आदत विशेष के कारण पहचान लेती है।

यह सब सुनकर प्रोड्यूसर बोला “हम इस फिल्म को मनोरंजन कर मुक्त करवाएंगें। इस फिल्म में सेंसर की कैची तो चल ही नही सकती इस फिल्म को 15 अगस्त 2 अक्टूबर या 26 जनवरी को रिलीज करवाऐंगे। इसके देशभक्ति के गानो पर अलग राॅयल्टी लेंगें।” डायरेक्टर बोला “हम गांधीजी के रोल के लिए क्या नसरूद्दीन को ले ले।” पागल हो गये क्या ? प्रोड्यूसर बोला गांधीजी का रोल शाहरूखखान करेगा और वा का रोल रानी मुखर्जी। अंग्रेज के लिए टाॅम आल्टर तो है। ही शूटिंग स्वीटजरलैण्ड में होगी अगर सीधी सीधी गांधी फिल्म बनाएंगे तो शायद गांधीजी भी उसे नही देंखेंगें।

कैरीयर डायजेस्ट

वह बड़ा आदमी मुझे छोटा आदमी बनाने के लिये चाहे जब मेरे घर आ जाता था। इस बार भी वह सीधा ही मेरे दस वाय दस के ड्राइंग रूम में आकर दचक गया । इस बार वह उसके बिगड़े हुये लड़के के साथ आया था। उसने लड़के से कहा श्रीवास्तव जी को "हाय" कहो

लड़का बोला "ओय"। मैं पीछे हट गया । बड़े आदमी को वह नाकाबिल लड़का बालिग होने की देहरी पर खड़ा था । मगर उनकी मंहगी कार आंख बन्द करके चलाता था । उसे मालुम नही था कि कार में ब्रेक भी होते है। मुझे देख कर तो वह जानबूझकर मुझे तीन आयाम से दो आयाम में बदलने की कोशिश करता है।

उसके "ओय" पर मैने शिष्टाचार वश कहा "खुश रहो"

उसने उसके डेडी से पूछा "व्हाट" डज ही मीन ?

अमीर डैडी ने जवाब दिया "ही हैज नथिंग टू आफर टु "एनी बडी"

अमीर डैडी ने कहा "इस बार मैने नई कार नही" खरीदी, लड़के का एडमीशन मेडिकल का ॅलेज में करवा दिया"। तीस लाख रूपये डोनेशन में लगे उसी मर्सिडीज वेन्ज को तुम्हारे कमरे में लेकर आया था।

अमीर लोग लड़को के मेडिकल या इन्जीनियरिंग कालेज में डोनेशन से एडमीशन होना ऐसे बतलाते है जैसे नई कारे" खरीदी हो या नया बंगला खरीदा हो । स्टेटस सिम्बल हो गया है आजकल सन्तान का डोनेशन से एडमीशन करवाना या विदेश भेजना ।

उन्होने मुझसे पूछा "तुम्हारे लड़के का तुम क्या कर रहे हो" ।

मैने कहा "सर वह अच्छा जा रहा है । पी.एम.टी. में निकल जायेगा।

उन्होंने मुझे हिकारत भरी नजरो से देखा । बोले - हैसियत नही" है इसलिए बच्चे से मेहनत करवा रहे हो । तुम्हारा मकान क्यों नहीं बेच देते ? मैं तीस लाख रूपए में लेने को तैयार हं ॅू।"

मुझे मालूम है कि उनकी नजर मेरे मकान पर बहुत दिनों से गड़ी है । मैंने उन्हे सौंफ प्रस्तुत की तो उठते-उठते बोले "मेरे प्रस्ताव पर ध्यान देना । अगली साल पढ़ाई और मंहगी हो जाएगी।"

अन्दर गया तो मेरा लड़का और लड़की ध्यान से बाहर की बातें सुन रह थे । लड़के ने सीधे ही पूछा पिताजी मैं बारहवीं पास करू ॅ या न करू ॅ ?

मैने कहा-क्यों मेडिकल में एडमीशन नही लेना क्या ?

लड़के ने कहा आज कल सब का ॅलेजो के दरवाजे आरक्षण के कारण बन्द है। मात्र खिडकिया ॅ ही खुली है। जिनके माध्यम से पैसो की सीढ़ियों के द्वारा ही अन्दर जाया जा सकता है।

बच्चों को आजकल हरेक डिग्र्री के के रेट्स मालूम है । हर कौलेज के आगे रेट लिस्ट टंगी है । हर प्रिसीपल और अध्यापक दुकानदार में अनुवादित हो गया है।

मुझे तो समाज सेवा का उपदेश दे देकर नेताओं ने विनोबा भावे बना दिया उधर डिग्रीयों की दुकानें खोल दी । मेरे बच्चों के लिये का ॅलेजो के दरवाजे बन्द कर दिये। डिग्रीयां डेढ़ लाख से चालू होकर आधे करोड़ में तक में बिकने लगी। आज प्रशिक्षित विद्यार्थी का मतलब है कि उसके मां बाप समृद्ध है। पी.एम.टी. की परीक्षा में मात्र बैठना पर्याप्त है। पास होने की आवश्यकता नहीं। विद्यार्थी का एडमीशन तीस

लाख से पचास लाख खर्च करने पर मेडिकल का ॅलेज में हो जाता है। पी.एम.टी. के रिजल्ट का ही जब कोई मतलब नही तो पी.एम.टी. का ढोंग भी बन्द कर देना चाहिए।

वे दिन हवा हो गए जब संघर्ष करके बच्चे इन्जीनियरिंग या मेडिकल का ॅलेज में एडमीशन ले लेत थे। अब तो संघर्ष के अवसर ही खत्म कर दिए गए।

विकलांग बोर्ड में जाकर देखिए। नई पीढ़ी गिड़गिड़ाकर विकलांग प्रमाण पत्र मांगती है जिससे विकालांगता के आरक्षण का लाभ प्राप्त हो जाए। बच्चे डा ॅक्टरो को अंगूठा या उंगली काटने के लिए निवेदन करते हुए मिल जाएंगे। एकलव्य गिडगिड़ाकर द्रोणाचार्य को अंगूठा देना चाह रहा है।

फिर मैने लड़की की तरफ देखा । वह बोली “कोई साधारण सा लड़का देख कर मेरी शादी कर दीजिए। दहेज से ज्यादा मंहगी पढ़ाई हो गई है। आप कहें तो मैं पड़ोस के उस लफंगे के साथ भाग जाऊॅ जो मुझे देख कर सीटी बजाता रहता है।”

कही कहीं बच्चे मां बाप को ए.टी.एम. कार्ड समझने लगे है। का ॅलेज में लड़के अब अपने पिताजी का सगर्व परिचय करवाते है” मीट माय क्रेडिट कार्ड एक्स वाय जेड” दूसरा कहता है” यार, माय वन इज नाट कीपिंग वेल । ही हेज फालन इल ।”

शिक्षा के समान अवसर अब समाज शास्त्र की किताबों में कैद होकर रह गए है । डार्विन की थ्योरी बदल गई है । आज कल सरवाइवल आफ द रिचेस्ट हो गया है ।” दो लड़के आपस में बातें कर रहे थे एक कह रहा था” यार चोरी में कोई बड़ा हाथ लग जाए तो पढ़ाई चालू रखू ॅ ।”

दूसरे ने जवाब दिया “यार पढ़ाई के बाद नौकरी की कोई गारन्टी हो तो चोरी की रिस्क ली जावे।”

जगह-जगह कोचिंग क्लासेस खुल गई है जो विद्यार्थियों का पैसा और समय लूट रही है। उनके नाम बड़े आकर्षक रहते है जैसे ब्रिटेन इंगलिश स्पीकिंग क्लासेस या आकाश इन्सटीट्यूट इत्यादि। कुछ तो साल दो साल में विद्यार्थियों को लूट कर बन्द हो जाती है।

मेरे एक रिश्तेदार है। उनकी अन्तरिक्ष “कोचिंग” उद्योग है। बच्चे साइकिल से आते है। उन्होने साइकिल स्टेण्ड का ठेका उनके छोटे भाई को दे रखा है। बच्चों को दो क्लासों के बीच में जरदा खाना पड़ता है। अतः पान सिगरेट की दुकान पर उनके बहनोई बैठते है । उनकी ही कोचिंग के सामने उनके साले की स्मरण शक्ति बढ़ाने की कोचिंग क्लास है। बच्चों को का ॅपी पेन्सिल चाहिए पड़ती है अतः उनकी ही स्टेशनरी की दुकान है। चाय नाश्ते के लिए उन्ही की होटल है।

कुछ कोचिंग क्लासेस के विज्ञापन तो मंहगे समाचार पत्रों के पूरे पृष्ठ पर आते है उनके विज्ञापन सरकार के विज्ञापन से बड़े होते है। “सेलिब्रिटिज” उनके ब्रान्ड एंबेसडर है। कोचिंग क्लासेस के शिक्षक सरल विषयों को इतना क्लिष्ट बना देते है कि विद्यार्थी पास ही न हो पाए का ॅलेज खोलना एक लाभदायक धन्धा बन गया है। अमीर आदमी इस धन्धे में पैसा फंसाना शेयर मे े फंसाने से ज्यादा सुरक्षित समझते है। कुछ का ॅलेज के शेयर भी बाजार में आ जाते है और हाथो हाथ बिक जाते है।

स्कूल और का ॅलेज होटलों की तरह फाइव स्टार होते है जिनमें स्वीमिंग पूल्स और घुड़सवारी सिखाने का प्रबन्ध होता है, हालांकि ये विषय बोर्ड और यूनिवर्सिटीज में नहीं होते पर तैरने और घुड़सवारी का इम्तहान ये स्कूल जरूर लेते है।

विषयों की विविधता जरूर होना चाहिए पर इतनी रंग-बिरंगी डिग्रीया ॅ बाजार में आ गई है जो समझ में नहीं आती है। एक साहब ट्रेफिक लाइट्स में पी.एच.डी. मिले । कुछ वार्निश पोतने में पी.एच.डी. होते है। चुप रहने और बोलने में भी पी.एच.डी. मिलती है। आगे हो सकता है पूंछ हिलाने और भोंकने में भी पी.एच.डी. मिलने लगे।

एक बार मैं अपने भांजे के साथ उसके एडमीशन के लिए एक कौलेज के प्रिन्सीपल के पास गया। उन्हे बड़ा आश्चर्य हुआ । बोले आप सीधे चले आए । मैने पूछा" मैं कैसे आता ?
बोले "आपको पी.आर.ओ के माध्यम से आना था।" मैने कहा मुझे मालूम नहीं कि आपके "पब्लिक रिलेशन आॅफीसर कहां है। उन्होने घण्टी बजाई । चपरासी अन्दर आया । प्रिन्सीपल साहब ने उससे कहा" साहब को दलाल के पास ले जाओ।

आजकल हरेक विश्व-विद्यालय के दलाल घूम रहे है। वे पैंतीस हजार रूपए का एडमीशन पिचहत्तर हजार रूपए में करवाते है। मेरे एक मित्र है उन्हे अपने एक बच्चे का एडमीशन दलालों के माध्यम से करवाना पड़ा। फिर उन्होने ही काॅलेजो की दलाली चालू कर दी उन्हे यह धन्धा इतना रास आया कि उन्होने खुद का काॅलेज खोल लिया। पर खुद के काॅलेज की दलाली भी वे खुद ही करते है।

अथ वार्तालाप खबर एवं सम्वाददाता

वह खबर संवाददाता के पीछे पड़ी हुई थी और सम्वाददाता उससे पीछा छुड़ाकर भाग रहा था। आखिर कार उस खबर ने सम्वाददाता को उसी प्रकार दबोच लिया जैसे खलनायक नायिका को पकड़ता हैै। खबर रूआंसी होकर बोली "प्रिय सम्वाददाता, तुम तुझसे इस तरह क्यों भाग रहे हो जैसे उधारखाता उधारदाता से भागता है"। ?

सम्वाददाता बोला “तुम कोई खबर जैसी खबर नही हो, आजकल तुम जैसी सपाट खबरों को कौन जगह देता है। खबर तो कटीली होनी चाहियें। उसके पीछे हम खुद भागते है।

खबर बोली “यदि तुम देश की प्रगति की खबरे नही छापोंगे तो देश तो पीछे ही रह जायेगा । प्रगति कैसे करेगा ? सम्वाददाता ने जवाब दिया “ठीक है हम लिखे देते है कि देश की प्रगति की हत्या नही हुई। आजकल खबरों में दो शब्द आवश्यक है। हत्या एवं बलात्कार या हम प्रगति को इस तरह छाप सकते है कि प्रगति का देश पर बलात्कार।”

वह सपाट खबर हतप्रभ रह गई । सम्वाददाता बोलता गया “आज कल सम्वाददाता खबरों तक नही जाता । खबरे चलकर सम्वाददाता तक आती है। खोजी पत्रिकारिता का मतलब है खबर सम्वाददाता को खोजे। सम्वाददाता के पास कहां इतना समय है कि वह खबर के पीछे भागे। सम्वाददाता को पार्टियों से ही फुरसत नही मिलती । तुम्हें खबर बनना है तो डिनर या लंच दो। नहीं तो अपने मूल स्त्रोत में पडी रहो। उस खबर ने डांटा “तुम ब्लेक एण्ड व्हाइट के जमाने में मेरे पीछे भागते थे अब सेटेलाइट के जमाने में मुझे सपाट बताते हो शर्म नही आती ?”

अब की बार सम्वाददाता नही बोला उसकी कलम बोली” नही आती। उससे क्या बोल रही हो मुझसे बोलो । आज के जमाने में यदि कलम चाकू नही बनीं तो स्याही मिलना बंद हो जायेगी और आजकल तो खबर लिखी ही नही जाती । खबर कैमरे से टी.व्ही. तक का सफर व्हाया सेटेलाइट करती है। कोई कागज कलम का चक्कर नही। आज हत्या के कारण खबर नही बनती, खबर बनाने के लिये हत्या की जाती है। बलात्कार में बला, लात और कार सहित पूरा क्रम दिखाया जाता है। मानो हत्या एवं बलात्कार तब प्रारंभ किया जायेगा। जब कैमरा इस्माइल प्लीज करेगा। कला आज चुटकुला हो गई है। उस्ताद उलाउद्दीन खां को चाय का विज्ञापन देना पड रहा है । भोंडे लोंडे इंडिया फेम हो जाते है । हम कपड़ो का निर्यात कर रहे है और नग्नता का आयात कर रहे है । देवताओं का मजाक उडाया जा रहा है। भगवान गणेश और कृष्ण जी की जीन्स पहले हुये मूर्तियां बनाई जा रही है।

कलम में वैसे भी स्याही कम थी अतः हांफने लगी। सम्वाददाता ने डांटकर उसका ढक्करन बंद कर दिया। और सपाट खबरे सें बोला “आजकल खबर एक विज्ञापन है और विज्ञापन एक खबर। आपको खबर बनना है तो किसी विज्ञापन एजेन्सी के पास जाइये वह आपको नवयौवना की टांगो में लपेटकर परोसेगा तो सब आपको चटखारे लेकर खांयेगे। खबरो में तो आजकल भूतप्रेतों और तांत्रिकों को परोसा जा रहा है । आपको कौन पूछेंगा।

खबर मायूस हो गई तो पत्रकार ने कहा “सखी मायूस मत हो वो। तुम खबर को छापने के लिये कई छोटे समाचार पत्र है जैसे डम डम डीगा डीगा, बदले की आग, मिट्टी में मिला दूंगा, बीबी की मानों इत्यादि। ये पत्र केवल त्यौहारों के आस पास ही विज्ञापन और शुभकामनाओं को बटोरने के लिये छपते है। लोग पांच दस रुपयों में अपना नाम छपा देखकर खुश हो जाते है। हां तुम तुम्हे हाशिये में छाप सकते है पर हत्या इत्यादि को बडे कालमों में ही छापेंगे।

हम तुम्हे छापकर सिंहासन नही हिला सकते।

तुम्हे छापकर कर तो हिंसा को ही मजबूत करेंगे । क्रांति सिंहासन लाती है । हम तुम्हे हिलाना चाहते है। हिलो हे सपाट खबर हिलो, महको, सरको चलो, कांपो, दौडो, घूमो इत्यादि । मगर इतना भी मत सरको कि छापे खाने में आ जाओं।” वह खबर सिंहासन का पाया थी अतः उसने मजबूती से जमीन पकड़ ली। उसको पाठको की जरूरत थी। पाठको को उसकी जरूरत नहीं थी। पाठक उससे विदकते थे। वह सरकार की गोल मोल झूठीतम प्रस्तुति थी।

उस सपाट खबर से वह घाघ सम्वाददाता नहीं पटा तो वह खबर उससे छत्तीस का आंकडा बनाकर सरकारी बुलेटिन में समा गई।

चोरी और रिश्वत खोरी

रात को दो बजे की खट पट में मेरी नींद खुल गइ । मैने टार्च लेकर खोज की, तो पाया कि एक चोर मेरी खिड़की की जाली आरी से काट रहा था। मैने पूछा "क्या कर रहे हो

उसने जवाब दिया "तुम टार्च से तो देख रहे हो कि चोरी करने के लिए तुम्हारें घर की खिड़की आरी से काट रहा हूॅ ।"

मैने उस दिन नींद की गोली नही खाई थी सोचा कि कुछ गपशप हो जायेगी । मैने पूछा "मैं कुछ सहायता करूं ?

उसने कहा "तुम्हारी तरफ से आरी पकड़ लो । हम दोनो काम करेंगे तो जाली जल्दी कट जायेगी।" मैने घर की तरफ से आरी पकड़ ली और जाली काटने में उसकी सहायता करने लगा । जब कुछ जाली कट गई तो उसने पूछा "घर में कितना नगद माल होगा"?

मैने कहा "यही कोई दो हजार रूपये होगे"

उसने कहा " यू तो बडे रिश्वत खोर हो। खूब चर्चे होते है तुम्हारी रिश्वत खोरी के हर होटल, पान की दुकानों और गली में । बाकी पैसा कहां गया ?"

मैने जवाब दिया “बाकी पैसो को भविष्य की सुरक्षा के लिये एल.आई.सी. की पाॅलिसियों, पी. पी.एफ, म्युचुअल फंडो, जमीनो और बिल्डिंगो की खरीद फरोख्त, में गहने खरीदने और स्विस बैंको में जमा कर दिया।”

उसने कहा “ठीक किया । मैं भी ऐसा ही करता हॅंू । आजकल अपने बैंकों पर भरोसा नही किया जा सकता । भविष्य को केवल डाका, चोरी और रिश्वत खोरी से सुरक्षित रखा जा सकता है। उसी पैसे से देश आगे बढ़ रहा है। मगर गहने कहां है ? मैने कहा “लाॅकर में रख दिये है।”

उसने मुझे हिकारत भरी आवाज से सम्बोधित किया और बैंको को गाली दी बोला “ये बैक हमसे बड़े चोर हो गये है। हमारे पेटों पर लात मारते है। जनता के पैंसों से इनके कर्मचारी तीर्थ यात्रा करते है। समुद किनारे जाते है, हिल स्टेशनो और पिकनिक स्पाटों पर जाते है। अरे एल.टी.सी. क्यों लेते हो ? तनखा के पैसो से सैर सपाटा करो।” फिर जोर से बोला “जरा जोर से जाली काटो क्या ढ़ीले ढ़ीले हाथ चला रहे हो” फिर कुछ देर जाली काटते काटते बोला “ मैं बताऊं तुम्हारे घर में कितने मेम्बर है ? मां बाप, भाभीजी और दो प्यारे प्यारे बच्चे । बच्चे इतने सुन्दर कि किडनेप करने को मन करे और भाभी जी इतनी सुन्दर कि अप्सरा जैसी।” मैंने गहरी सांस लेकर कहा “सब ब्यूटी पार्लर का कमाल है । बगैर मेकअप के देखोगे तो डर जाओगे।”

इतने में जाली लम्बवत कट गई थी उसने कहा अब आरी की दिशाबदल दो उससे अब आड़ा काटेंगे। मुझे यह कसरत पसीना ला रही थी। कुछ सीने में असुविधा हुई तो सारवी ट्रेट की गोली खाकर बोला “इतनी मेहनत क्यों कर रहे हो । मैं दो हजार ऐसे ही ला देता हॅंू।”

वह भड़क गया बोला “मैं चोरी में किसी का भी भरोसा नही करता। फिर मैं ईमानदारी और मेहनत की खाता हंॅू । चोरी करता हूॅ कोई रिश्वत नही लेता ।

मैं सहम गया

कुछ देर चुप रह कर फिर बोला “तुम्हारा बाप रात भर खांसता रहता है। रात को यहां गुजरने से भी डर लगता है। खुद को कुत्ते के साथ ऊपर सोते हो । बाप का इलाज क्यों नही करवाते

इस बार मैं भड़क गया बोला “मेरे बाप तक गये, मेरे कुत्ते तक मत जाना नही तो झगड़ा हो जायेगा।”

“अच्छा बाबा नही जाऊंगा । अब जाली को पहले कट के समानान्तर फिर लम्बवत काटना है।” बातचीत करने करते यानि एक दूसरे का भेद मालूम करते करते जाली कब कट गई मालुम ही नहीं पड़ा। वह बोला “अब आकर सो जाओं जिससे कि मैं जाकर चोरी कर लॅू।”

मै जाकर लेट गया नींद तो क्या आती ? वह बड़ी सफाई से अन्दर आया, आलमारी तक गया, मास्टर की से अल्मारी खोली, दो हजार रूपये निकाले फिर बोला “हम लोग नींद और लेटने में फर्क जानते है। अब तुम उठ सकते हो। बीस परसेन्ट के हिसाब से तुम्हारा चार सौ रूपये बनता है वह ले सकते हो।” मैने उससे चार सौ रूपये लिये फिर कहा “चूंकि अब मैं बीस परसेन्ट का पार्टनर बन गया अतः अब हम साथ साथ चाय पी सकते है।”

उसने कहा “यदि भाभी जी मेक-अप धोकर नही सोई हो तो उनके हाथ की चाय पी सकता हूॅ।” मैने पत्नि को जगाया और चोर से उसका परिचय कराया । वह खुश होकर बोली “ये बिल्कुल मेरे देवर जैसे लगते है। तुम लोग बैठो मैं अभी अदरक की चाय बना कर लाती हंू। बाहर खड़े खड़े भाई साहब को ठन्ड लग गई होगी। साथ में कुछ स्नेक्स भी ले आऊंगी। भाई साहब से कहो कि लन्च भी हमारे साथ ले।”

मैं कुड़ गया। मैने सोचा, मेरे भाइयों को तो भगा देती है और चोर को भाई बना रही हो। हम लोग ड्राइंग रूम में आ गये यहां चोर का स्वर बदल गया बोला “सर आपके कार्यालय में मेरी बारह बोर बन्दूक का

प्रकरण लम्बित है उसे कुछ लेकर निपटा दीजिये न सर। मैने सोचा, रिश्वत खोर चोरों से रिश्वत ले रहे है और चोर रिश्वत खोरो के यहाॅ चोरी कर रहे है। प्रकट में बोला "चार हजार रूपये का खर्चा पानी लगेगा।" उसने फौरम चार हजार रूपये निकाले और देते हुए बोला "रिश्वत न हो तो देश आगे बढ़ ही नही सकता।" बात करते करते भोर होने लगी। बाहर जाने के लिए चोर छेद वाली खिड़की की तरफ जाने लगा । तो मैनें कहा "अब तो हम पार्टनर बन चुके है। आप मुख्य दरवाजे से बार जा सकते है।

दंगो की जांच

शहर में मुख्य रूप से दो धार्मिक समूह थे। इन दोनो के अलावा दोनो में एक समूह शरारती तत्वों का था। इस तरह तीन समूह हो गये। त्यौहार आया । त्यौहार आये। दोनो धार्मिक समूहो के त्यौहार एक ही दिन पड़ गये। धार्मिक समूह डर गये। जब भी दोनो धार्मिक समूहो के त्यौहार एक ही दिन आते है धार्मिक समूह डर जाते है और शरारती तत्वों की बाछे आपाद मस्तष्क खिल जाती है।

एक और समूह था। प्रशासन का उसने कफ्र्यू को निकाला झाड़ा पोंछा उसे अच्छा खाना खिलाया और लगाने के लिए तैयार किर लिया । वह तो लगना ही था। प्रशासन नामक समूह ने एक शान्ति बैठक नामक नाटक किया जिसमें शहर की कठपुलतियां को नाचने के लिए बुलाया। मगर प्रशासन नाम का समूह और धार्मिक नाम के समूह जानते थे कि शान्ति समिति की कठपुतलियाॅ भगदड़ मचने पर सबसे पहले भागेंगी।

त्यौहार आने पर पूरे शहर में चप्पे-चप्पे पर मूठों पर पुलिस बैठ गई (पहले वह खड़ी रहती थी) शरारती तत्वों ने शरारत मीटिंग की और दोनो धार्मिक स्थलों के सामने एक-एक सूअर का बच्चा गला घोंट कर पटक दिया।

आजकल किसी भी शहर का सुहाना मौसम मात्र पांच सौ रूपये बिगाड़ा जा सकता है मात्र पांच सौ रूपये में कफ्र्यू लगवाया जा सकता है। सो इस शहर में भी इस नाके से उस नाके तक सनसनी फैल गई।

इस घटना से कुछ नही हुआ दोनो समूहो ने स्वयं की धार्मिक स्थल की सफाई कर दी और गले मिल गये। एक धांसू शुरूआत का फुसफुसा अन्त हो गया। प्रशासन मायूस हो गया। मगर शरारती तत्व हार नहीं मानता । उसने एक जूलूस निकाला । इसने उसके और उसने इसके धार्मिक स्थल पर पथराव किया। दोनो ने अपने अपने धार्मिक स्थलों पर भी पथराव किया । और घर जाकर सो गये। सोचा शाम को परिणाम देखेगें।

इस बार शरारती तत्व अच्छे नंबरो से उत्तीर्ण हो गया। शहर में अग्नि देवता का साम्राज्य हो गया। दुनाली से फटाकों की आवाज आने लगी, मूठो पर बैठी पुलिस गायब हों गयी और शहर सुरक्षा बल और मिलिट्री ने नियंत्रण में ले लिया। प्रशासन सचेत हो गया अब तो त्यौहार, आग दंगो और कफ्र्यू से पहचाने जाते है।

"फिर से कफ्र्यू लगा है बस्ती में
कोई त्यौहार पास आया है ।

कफ्र्यू में गलियां सड़के बन गई । खोमचें वालों और दुकानों के बोर्डो ने सड़को को गलियारो में बदल दिया था । अब उस घटना की जाॅच बिठाल दी गई।

शहर में डी.आई.जी. नये आये थे (हमें बाद में मालूम पड़ेगा कि वे इंग्लैण्ड से ट्रेनिंग लेकर आये थे) उन्होने टी.आई. को बुलाया । और कहा कि जासूसी कुत्तों को बुलाओं और मालमू करो कि किसने सूअर फिकवाये ? टी.आई. बोला "श्रीमान कुत्ते सुअर खा जायेगें और पुलिस ने अब जासूसी कुत्ते पालना बन्द कर दिया है चोरी के प्रकरणों में वे चोरी स्थल संूुध कर थाने में घुस जाते थे।

"ठीक है तो ऐसा करो कि शहर के सारे सूअर मालिको को बुलाओं मालूम करो कि कितने सुअर इस शहर में है और उनके कितने बच्चे है ? डी.आई.जी. ने आदेश दिया- शाम को टी.आई. ने सुअर मालिकों की मीटिंग ली और मालुम किया कि शहर में पांच सूअर मालिक है उनके तीन सौ सूअर है और एक हजार सूअर के बच्चे है।

सूचना डी.आई.जी. को दी गई डी आई जी ने आदेश दिया "ठीक है अब इन दोनो के बच्चों का डी.एन.ए. टेस्ट करवाओं और मिलान करो कि किस सूअरनी से उस मृत सूअर के बच्चे का डी.एन.ए. मिलता है। फिर मालुम करो कि सुअर का बच्चा किस आदमी का है। इस तरह हम अपराध की तह तक पहुंच जायेंगें" टी.आई. ने सिर ठोक लिया पर विनम्र जवाब दिया "श्रीमान यहाॅ तो दस बारह प्रयोगशालायें ही है जो मात्र मल मूत्र की जाॅच ही करती है। डी.एन.ए. टेस्ट तो कलकत्ता में ही होते है। "ठीक है" डी.आई.जी. ने आदेश दिया "जाकर सरकारी अस्पताल के सिविल सर्जन से सम्पर्क करो। उससे कहो कि वे दोनो सूअर के बच्चों को सुरक्षित द्रव में रखकर कोलकाता भिजवायें साथ में एक सिपाही भेज देना।

टी.आई. ने सोचा कि इस बहाने सरकारी खर्चे पर मां काली एवं गंगा सागर के दर्शन कर लंॅूगा। जाॅच होते होते एक साल गुजर जायेगी। अभी पिछले साल के सुअर के बच्चो की रिपोर्ट तो आई नही है इस साल के सूअर के बच्चों की रिपोट अगले साल तक आ पायेगी। अगले साल के सूअर के बच्चों के डी.एन.ए. की जाॅच के लिये सब इंस्पेक्टर को कोलकाता भेज दूगा बहुत आग्रह कर रहा है।

1. डी.आइ्र.जी. डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल आॅफ पुलिस पुलिस उपमहानिरीक्षक
2. टी.आई. टाउन इंस्पेक्टर - पुलिस का दरोगा

तलाशी

मेरी कार के बोनट पर सिपाही ने जोर से डन्डा मारा। मेरे चेहरे तक पर निशान उभर आया । बोनट पर तो पिचके होने का निशान उभर ही आया। मैंने खिड़की के बाहर चेहरा निकाला और सिपाही की पदोन्नति करते हुए बोला “क्यो अफसर, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूॅं।”

सिपाही ने फिर डन्डा उठाया तो मैने अपना सिर आगे कर दिया जिससे कि कार को बचाया जा सके। सिपाही बोला “डिक्की खोलो, तलाशी लेना है।” मैने पूछा “क्या आप उसमें ए.के. फोर्टीसेवन रायफल या कोकेन देखना चाह रहे है ?” उसने जवाब दिया “ये तो छोटी छोटी चीजे है उसमें हमें देखना है कि कही राम खेलावन की भैंस तो नही। राम खेलावन ने रिपोर्ट लिखवाई है कि उसकी भैंस गुम हो गई है।” मेरा ख्याल पुख्ता हो गसा कि उनकी खोपड़ी में अच्छी गुणवत्ता का भूसा भरा है।

मैने उन्हे डिक्की की चाबी देते हुये कहा “डिक्की में भैस भला कैसे आ सकती है।”
“आजकल साइन्स का कोई भरोसा नही किया जा सकता । और मुझे चाबी क्या दे रहे हो मैं तो अपने घर का दरवाजा भी मंगू दादा से खुलवाता हूॅ, मैं तुम्हारा नौकर नही हूॅ जो डिक्की खोलूं।” मैने डिक्की का ढ़क्कन खोला और कहा “ले लो तलाशी । आप कुछ देने से तो रहे।”
“क्यों तुम्हारे पृष्ठ भाग पर डन्डे दे सकता हुॅ ?” अफसर ने सिपाही के पद पर स्वयं को पदावनत करते हुए कहा । डिक्की में कुछ न मिलना था तो कुछ न मिला । मैं ने चिढ़कर कहॉ “अब क्या जेब में राम खिलावन की भैंस देखोगे ? सिपाही बोला “हमे भैंस तो बरामद करना ही है। राम खेलावन मन्त्री जी का आदमी है। ये हो सकता है कि तुमने भैंस चुराई हो, उसे बेचा हो और पैसे जेब में रख लिये हो। इस तरह से भैंस जेब में बन सकती है। मैं उस भैंस को चार पांच जेबो में बरामद कर चुका हूॅ ।”

मैं घबड़ा गया। खिसियाकर मैने उस गुण्डे से पूछा “आप राम खेलावन की भैंस को मेरी जेब में से बरामद न करने के कितने रूपये लेंगे ? “फिलहाल तो पाच सौ रूपये में तुम्हारी जेब में राम खिलावन की भैंस को छोड़ा जा सकता है।” उन्होने कर्तव्य निष्ठा दिखलाई। मैने उसे पांच सौ रूपये दिये और प्रमाण पत्र देने को कहा । उस अधिकारी ने लिख कर दिया कि प्रमाणित किया जाता है कि एक्स वल्द डब्यू के जेब की तलाशी पांच लोगो के सामने ली गई। उसमें राम खिलावन की भैंस नही मिली । पांच गवाहो के दस्तखत भी सिपाही ने ही कर दिये।

हमें हर दिन ही तलाशी देने पड़ती है। आयकर की तलाशी का विवरण जानने के लिए लेखक का हाय कर वाला लेख पढ़ सकते है जो “आये न बालम” नामक व्यंग्य की पुस्तक में छपा है। घर में तो तलाशी लेने वाली एक स्थायी मशीन रहती है जिसे पत्नी, अद्र्धागिनी, भार्या, जीवनसाथी, घरवाली, खटला, लुगाई, बहू, ऐ जी सुनती हो इत्यादि आदर सूचक सम्बोधनो से पुकारा जाता है। प्रति रात आप रिश्वत से या

दुकान से भरी जेब लेकर घर जाते है और प्रति सुबह जेव खाली करके आपको बाहर निकाल दिया जाता है। जैसे कि आप "रिफिल पेक" हो।

चोर और गिरह कट तलाशती नजरो से आपके घर और जेब की टोह लेते रहते है और जब उन्हें कुछ नही मिलता तो एक पर्ची छोड़ जाते है जिस पर "शर्म करो" लिखा रहता है। एक बार एक बारात में सारे के सारे जूते चोरी चले गये। लड़की वाले गांव के महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। उन्होने थानेदार पर मुख्यमंत्री से फोन करवाया कि गांव की इज्जत और पार्टी की इज्जत बारात के जूते चोरी हो जाने के कारण खतरे में पड़ गई है। जूतों की तलाशी की जावे।

लड़की वालों ने जोर दिया कि जासूसी कुत्ते बुलवाये जाये। थानेदार ने जवाब दिया कि उसे मालूम है कि जूते कहां है अतः कुत्तो को तकलीफ देने से क्या फायदा ? थानेदार चोर के घर पहुंचा और जूते समेटने लगा तो चोर ने निवेदन किया "हुजूर इस तरफ के जूते ही इस बारात के है। उस तरफ के जूते दूसरी बारात के है। आप यदि दूसरी बार आयें हो तो क्या बरामद करोगे ?"

मेरे पड़ोसी की लड़की एक लफंगे के साथ भाग गई। वे उनकी लड़की मेरे घर तलाशने आ गये। मैने सुझाव दिया कि वे पुलिस में रिपोर्ट क्यों नही कर देते। उन्होने जवाब दिया कि पुलिस दोनो को तलाश करने के बाद लफंगे को तो भगा देगी और लड़की को रख लेगी।

तलाशने के अनन्त रूप है कवि श्रोता तलाशते है और श्रोता ऐसा कुआं जिसमें कवियों को फेंका जा सके। भक्त धन के लिये भगवान तलाशते है और भगवान सच्चे भक्त, दोनो निराश होते है ज्ञानी ब्रम्हना तलाशते है और भटक जाते है। भटके लोग भटके लोगो को तलाशते है।

प्रेमिका प्रेमी की आंखे में धन और प्रेमी प्रेमिका के आंखो में शरीर तलाशता है। बाप बेटे में अप्राप्त अतीत और बेटा प्राप्रव्य भविष्य तलाशता है। शिक्षक शिष्य में भूगोल और गणित और शिष्य गुरू में परीक्षा परिणाम तलाशता है। सेठ ऋणी में ब्याज और ऋणी धन न देने के बहाने। फिल्म डायरेक्टर दर्शक और दर्शक फिल्म में अल्पवसना नायिका । यदि फिल्म डायरेक्टर को दर्शक नही मिलते तो वह अपने कपड़े फाड़ता है और यदि दर्शको को फिल्म में अल्पवसना नायिका नहीं मिलती तो वह परदे का कपड़ा फाड़ देता है।

भिण्डी और अमेरिका

मैं भिण्डियों को भिण्डी कहता हूॅ तो उन्हें बुरा लगता है। पिछले तैतीस साल से खाते खाते उनकी भाषा समझने लगा हूॅ और वे मेरी। उनमें से जो लिसलिसा द्रव निकलता है मैं उससे छिटकता हूॅ। मैं ने उन्हें पारम्परिक सब्जी के रूप में खाया है, तला हुआ खाया है, भुना हुआ खाया है, दही के साथ खाया है। भरमा खाया है, आलू के साथ खाया है और इत्यादि रूपों में खाया है। हर बार वे मुझे भिण्डी ही लगी"।

एक बार नाराज होकर भिण्डी ने कहा "तुम मुझे हर बार भिण्डी के नाम से ही क्यों पुकारते हो किसी अच्छे नाम से क्यों नही पुकारते। मैने पूछा जैसे भिण्डी"? भिण्डी ने तुनक कर जवाब दिया जैसे लौकी सुता । आजकल बहुत भाव है लौकी के। बाबा भी उसकी सब्जी खानें को कहते है, उसका रस पीने को कहते है। दूरदर्शन में रातो रात लौकी को बड़ा बनाने की तरकीब बताई जाती है।

मैने जवाब दिया "भिण्डी तुम भी किन्ही महापुरूष का दामन क्यों नही पकड लेती। वे लोगों को भिण्डी की सब्जी खाने की कहेंगे, भिण्डी का रस पीने को कहेंगे हो सकता है भिण्डी की चापाती खाने को कहे। भिण्डी की नाम चीन चपातियाॅ बाजार में आ सकती है।"

भिण्डी भड़क गई बोली "तुम मुझे बारबार भिण्डी क्यों कहते हो पागल आदमी । क्या सर्वनाम से काम नही चल सकता । संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाये उन्हे सर्वनाम कहते है।" भिण्डी ने प्राथमिक शाला का ज्ञान वधारा ।

"पागल आदमी संबोधन से मुझे बुरा नही लगता तो तुम्ही भिण्डी सुन कर क्यों लगता है भिण्डी मैं हंसाकर बोला "अच्छा तुम अमेरिका जाओगे क्या पागल ? उसने विषयान्तर पटका

मैं अचकचा गया। "मैं तो फटे पांयचे वाले पेन्ट को बदल नहीं पाता अमेरिका कैसे जाऊंगा ?" "मैंने पूछा" क्या अमेरिका के प्रेसिडेन्ट आपके पहचान के है ? इस बार मैने भिण्डी शब्द बरकाया।

भिण्डी ने गर्व से जवाब दिया "वहां हमे "लेडीज फिन्गर" के नाम से पुकारा जाता है उस ंगंवारू नाम से नही जिससे तुम हिन्दी बोलने वाले भारतीय पुकारते हो। और हम अमेंरिका के प्रेसीडेन्ट की डायनिंग टेबिल पर चिकन के साथ सजाई भी जाती है।" सब्जी होने के बावजूद भी मेरी नजरो में उसकी इज्जत बढ़ गई । मैने कहा वहां जाने के लिये क्या जानना जरूरी है। "पहले तो कई हिन्दी साहित्य वाले वहा चल गये चलो कोई कविता सुनाओ।" उसका स्वार बदल गया।

मैने सस्वर सुनाया "चलो सखी री चलो मदरसे निकलो निकलो निकालो घर से"। वह हंसी बोली से तो बाल गीत है कोई ऐसी कविता सुनाओ जिसे कोई समझ न पाये। मैनें कहा "स्वर्गीय जयशंकर प्रसाद की कविता कैसी रहेगी ?" बड़ी क्लिष्ट हिन्दी है । उनकी संस्कृत निष्ठ। इतनी क्लिष्ट भी नही कि हिन्द ही न लगे। चलो छोड़ो संगणक का ज्ञान कैस रहेगा। आजकल अमेरिका जाने के लिए कम्प्यूटर का ज्ञान आवश्यक हो गया। जो कम्प्यूटर में हंसता है और कम्प्यूटर की भाषा में भारत को गालियां देता है उसके लिये गेट वे आफ अमेरिका खुला हुआ मिलता है "वह बोली

मैं निराश होकर बोला "उसके लिए तो मुझे कम्प्यूटर विज्ञान में किसी विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करना पड़ेगी।" वह बोली क्यों ? कौशल किशोर विश्वविद्यालय की उपाधि कैसी रहेगी" ? मैने प्रतिवाद किया "यह तो मेरा नाम है।"

वह बोली "तो क्या हुआ। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय है कि नही, रविशंकर विश्वविद्यालय है कि नही माखनलाल विश्वविद्यालय है कि नही। इन लोगो को न्यूयार्क में कौन जानता है ऐसे ही तुम कौशल किशोर विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त कर लो मध्यम वर्गीय"

"मुझसे बेईमानी नहीं होगी मेडम" मै झूठे स्वाभिमान में सिर उठा कर बोला "अच्छा तो भिण्डी पकाना आता है ?" उसने हॅसकर पूछा "क्या कही रही है आप।" भला मैं आपको कैसे पका सकता हॅू मैडम "मैनें अचकचा कर जवाब दिया।

उसने विदूपता से कहा "अच्छा पकाना नही आता, पर भरमा भिण्डी चटखारे लेकर खाना आता है बोलो तुम कहां तक पड़े हो, "जी मैंने समुद्रगुप्त के शासन में पी.एच.डी. किया है" मैने साक्षात्कार देते हुए कहा "इसीलिए तो संविदा शिक्षक हो" चह बोली "तुम्हारा ज्ञान छत पर बगरा भी दोगे तो चिड़िया और कौवे चुगने नहीं आयेंगे। आजकल ज्ञान तो वह है जो कम से कम पाॅच लाख रू का पैकेज दिलवा सके आजकल दर्शनशास्त्र, भूगोल, इतिहास तो कचरे का डब्बा भी स्वीकार नहीं करता तुम्हें आलू, भिण्डी, आलू पराठे, आलू गोभी, आलू पालक, दमआलू, कचालू, भरमा आलू आदि बनाना आता तो अमेरिका में खप सकते थे। अमेरिका में भारतीय रसोईयो की भी मांग है।"

कुछ और तरीके अमेरिका में खपने को बताइये मैने उत्सुकता से पूछा क्यों दूरदर्शन नही देखते क्या ? कीर्तन करना नही आता तबला बजाना ही आता होता तो किन्ही बाबा के कीर्तन समूह में शामिल हो जाते अब अन्तरिक्ष विज्ञानी तो बनने से रहे। "उसकी बात खत्म भी नही हुई थी कि पत्नी आ गई। बोली "क्या भिण्डियों को घूर कर कुछ न कुछ बड़बडाते रहते हो तुम पागल होते जा रहे हो और भिण्डियों को उठा कर काटने के लिए चली बनी।

भविष्यकर्ता

उनकी समझदार पत्नी में उन्हें पुनः समझाने का निरर्थक प्रयास करते हुये कहा "मन्त्री ने निमन्त्रण पत्र मतदाता सूची देख कर वितरित किये है। जन प्रतिनिधियों की हर क्रिया सार्वजनिक होती है चाहे वह कितनी ही गुप्त क्यों न हो । तुम में ये ऐसी कोई विशेषता नही देखती जिसमें मन्त्री तुम्हें आमंत्रित करेे"

शिक्षक ने झिड़का "एक तो तुम उन्हें माननीय मन्त्री कह कर सम्बोधित करो । यही मंत्रियों को सम्बोधित करने की संवैधानिक भाषा है दूसरे मैं अब प्रधान पाठक हॅू अतः सामान्य शिक्षक नही रहा। मुझे आमंत्रित किये जाने के पूरे कारण उपस्थित हैै

वे हर बार पत्नि का कहना नही मानते और हर बार औंधे मंुह गिरते है। फिर लहूलूहान अहं के साथ हर बार पुनः गिरने के लिये उठ खडे होते है। उन्हांेने एक आदर्श मध्यवर्गीय की तरह जूते चमकाये, स्कूटर पोछा, जेब में पचास रू. का बाहर दिखता हुआ लिफाफा रखा और चल दिये सरकारी कर्तव्य पूरा करने।

जिस तरह दिल्ली के सारे रास्ते एक सफदरगंज की तरफ जाते है उसी तरह उस दिन सारे वाहन मन्त्री जी के बंगले की तरफ जा रहे थे । मंहगी कार वाले सस्ती कारो को देख कर हंस रहे थे, सस्ती कारे मोटर साईकिलों को देख कर हंस रही थी, मोटर साइकिले स्कूटरों को देख को हंस रही थी स्कूटर वाले पैदल चलने वालो को देख कर हंस रहे थे और पैदल चलने वाले रास्ते के कुत्तो को देख कर हंस रहे थे। मन्त्री जी के जन्म दिन के रास्तों पर गोया हर सड़क पर कह कहानुमा माहौल था।

गुरूजी के स्कूटर को एक मील पहले की रोक लिया गया । सस्ती करें एवं दुपहिया वाहनों को एक मील पहल ही पार्क करवा लिया गया । जो कुछ देर पहले पैदल चलने वालो पर हंस रहे थे मन्त्री की आभा मण्डल के पास स्वयं भी हंसी के पात्र बन गये। फाटक पर प्रवेश के लिए लम्बी पंक्ति लगी थी। उनकी आदत विद्यार्थियों को पंक्तिबद्ध करने की थी अब स्वयं पंक्तिबद्ध होकर हताहत अनुभव कर रहे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या चीटें भी पंक्तिवद्ध चलने में उतनी ही कुंठा अनुभव करने होंगे जितना कि वे कर रहे थे। फाटक पर निमन्त्रण पत्रों के प्रकार के अनुसार अलग अलग दरवाजों से प्रवेश दिया जा रहा था चूंकि उनका निमन्त्रण पत्र तृतीय श्रेणी का था अतः उन्हे सीधे ही मन्त्री से बगैर मिलवाये भोजशाला में भिजवा दिया गया।

उन्होने बुझे मन से पचास रूपये वाला एक अमूल्य लिफाफा भेंटासन्दी (भेंट $आसान्दी) को दे दिया । पर वह अपना नाम लिखवाना नहीं भूले । उनकी श्रेणी के कुछ लोग मन्त्री के नाम का चेक इस आशा से लेकर आये थे कि मन्त्री पचास रूपये के चेक का क्या नगदीकरण करवायेगा । पर पन्द्रह दिन बाद जब उनके स्काउंट से पचास रूपये कम हो गये तब उन्हे ऐस लगा जैसा किसी छोटे ठग को बढ़े ठग ने ठग लिया हो।

उस गिद्ध भोज में गिद्ध भोज जैसा ही वातावरण था। उन्हे इस बात की हताशा थी कि उन्हंे मन्त्री से मिलने नहीं दिया गया । हर बार उनके साथ ऐसा ही होता है । तब वे जगन्नाथ पुरी गये थे तब भगवान जी के पट बन्द थे । जब वे वैष्णौ देवी गये थे तो जोर का एक धक्का लगा और बगैर दर्शन के बाहर हो गये । उनके भाग्य में केवल आना जाना और खर्च करना ही आता है। दर्शन किसी और को हो जाते है।

मगर लगता है इस बार भाग्य उन पर मुस्कुरा रहा था । किसी ने उनके “प्लेट” लेने के पहले ही पानी भरे ग्लिासों की ट्रे थमा दी और कहा मन्त्री जी पानी मंगा रहे है।

गदगदायमान होकर गुरूजी मन्त्री को जल प्रस्तुत करने चले गये। मन्त्री जी ने नये आदमी से प्रस्तुत किये जाने पर जल संकट दृष्टि से देखा और निज सहायक से पूछा बंगले में यह नया नौकर कौन है ?

निज सहायक ने परिचय दिया ये बरारीपुरा प्राथमिक शाला के प्रधान पाठक है। “अहा हमारा देश प्रचीन काल से विश्व गुरू रहा है। हमें पुनः वही दर्जा हासिल करना है। हमारे शिक्षको पर नई पीढ़ी के निर्माण का गुरूतर दायित्व है। आपको यह उत्तरदायित्व निभाना है।” मन्त्री ने रटा रटाया भाषण उगला गुरूजी ने सोचा कि इन्होंने कई श्रेणियों के गुरू बना दिये है। जैसे शिक्षा कर्मी संविदा शिक्षक, प्रौढ़ शिक्षक, नियमित शिक्षक आदि। अब मालूम नहीं किस श्रेणी के गुरू को देश का भविष्य उज्जवल बनाना है। प्रकट में वह केवल हिनहिना दिये। इससे अधिक का अधिकार उन्हे सेवा नियमों ने नहीं दिया था।

बाजू का एक चमचा बोला "मास्टर मेरे पास करीबी" दस बारह बच्चों के रोल नम्बर है जिनका भविष्य तुम्हे उज्जवल बनाना है। उन सबका कम से कम नब्बे प्रतिशत से ऊपर का उत्जवल भविष्य होना चाहिये।

गुरूजी आकंठ कृतज्ञ हो गये। उन्हें प्रसन्नता हुई कि मन्त्री के किसी बाजू में उन्हे उपयोगी समझा। उन्होंने जवाब दिया "आप जिनके रोल नम्बर मुझे देने वाले है वे जरूर मेघावी छात्र होंगें। बल्कि मैं ऐसा करता हूॅ कि उनकी उत्तर पुस्तिका ही आपके पास पहंुचा देता हूॅ आप ही उन्हें अंक दे दीजिएगा।"

गुरूजी वापिसी में कुप्पायमान हो रहे थे । उनके साथी गुरूजी उन्हे ईष्या से देखने लगे जैसे उनके नाम की कोई लाटरी से बड़ी चीज खुल गई हो । माननीय चमचा के माध्यम से माननीय मन्त्री जी प्रसन्नाभवत। छुटभय्ये जी फिर बोले "और देखो बीस पच्चीस कीडा प्रमाण पत्र वाद विवाद प्रतियोगिता प्रमाण पत्र, सांस्कृतिक प्रमाण पत्र भी भिजवा देना" सुना है नौकरी के समय बहुत काम आते है।

खाली मैदान की अस्मत

मेरी हालत गुण्डो के बीच फंसी सुन्दर युवती की तरह है जाने कब मेरी अस्मत पर डाका पड़ जाये । जी हां हर आदमी मुझे ललचाई नजरो से घूरता हुआ निकलता है।

अलसुबह घर से खदेड़े गये बच्चे और (ट्रक के नही) बाडी बिल्डर आ धमकते है। बच्चों के हाथो में कहीं का बेट, कही की बाल, कहीं के पेड़ और कही के विकेट रहते है। वे लोग जो क्रिकेट खेलना चालू करते है तो बगैर सचिन बने रन बनाते ही जाते है । दूसरी ओर जोगिंग करने वाले जानें किस डर के कारण आते हैं । इन लोगो को कोसते हुए दिशा मैदान वाले आये अधूरे वापिस जाने लगते है।

अपनी बीबीयों को ड्राइविंग सिखाने के बहाने दूसरे की बीबीयों को देखने वाले चाहे जब आ धमकते है। साइकिल दुपहिये (स्वचलित) और कार वाले डगमगाते हुये घूमते रहते है। यहा कोई ट्रेफिक मेन नहीं रहता और न कोई यातायात का नियम।

लड़की वाले यहीं से उनकी लड़कियों को विदा करते है। बारात का स्वागत यहीं होता है। वहां उस कोने में बारात का खाना बनता है। यहां इस तम्बू में दो ऊपर से सजी हुई पर अन्दर से जर्जर कुर्सियों पर दुल्हा दुन्हन को सहारा देते हुए बिठाया जाता है। पचास रूपये का लिफाफा खर्च कर होटल का आनन्द लेने वालो की भीड़ ढलक आती है। शराब के नशे में बेढंगे पन से नाचते हुए अविद्यार्थी, नवयुवक, कुछ अधेड़ चटख रंग के कपड़े पहने जड़ और टांगो के बीच का हिस्सा मटकाते हुये देरी करते रहते है। जिस पर लड़की वाले झल्लाते रहते है।

यहां सरकारी और धार्मिक प्रदर्शनियाॅ अक्सर लगती रहती है, ऐसा लगता है जैसे उन्ही तम्बू वालों के लिये ये प्रदर्शनियां लगाई जाती हों। अफसरो और तम्बू वालो की जरूर मिली भगत रहती होगी। भक्तो से मुझे बड़ा डर लगता है। वे मुझे घूरते हुये निकलते है। उन्हे कोफ्त होती है कि इतना बड़ा मैदान भगवान के द्वारा अधिक्रमित क्यों नहीं हुआ। भारत की दो धुरवीय व्यवस्था से मैं बड़ा सुरक्षित रहता हूँ । कोई मूर्ति रात को स्थापित करता है तो दिन में मजार चिल्लाने लगती है और यदि कोई चादर चढ़ाता है तो मूर्तियां दंगा करने लगती है। भगवान करे कि व्यवस्था का यह संतुलन बना रहे।

खाली जमीन दिखी नही कि पहलवानों की मांस पेशियाॅ फड़कने लगती है। कुश्ती लड़ने के लिए उनके एक कमरे के घर में जगह ही कहां रहती है आपस में लड़ने के लिये। वे किसी मूंछो वाले पार्षद की पकडते है। वहां मूछों वाला पार्षद भी कभी पहलवान रहा होता है। क्रिकेट के फ्लाप खिलाड़ियो की तरह वह एम्पायर बन जाता है और लड़ने के बाद हाथ मिलाते है । लड़ने के बहानें उनका मकसद हाथ मिलाना ही होता है। हालांकि भारतवर्ष में प्रजातंत्र है पर प्रजा और तंत्र में ठनी रहती है तंत्र प्रजा को देखता ही रहता है। तंत्र चाहता है कि इस मैदान का अधिग्रहण कर लिया जाये । सरकार कभी स्कूल खोलने के बहाने तो कभी वृद्धाश्रम बनाने के बहाने तो कभी महिला प्रसूति गृह बनाने के लिए अधिग्रहण की अधिसूचना जारी करती है तो प्रजा न्यायालय ये स्टे ले आती है। पहले सरकार ने स्टेडियम बनाने की अधिसूचना जारी कर दी प्रजा उस पर स्टे ले आई। तो तंत्र ने सार्वजनिक शौचालय बनाने की अधिसूचना जारी कर दी। जनता अधिकारों की रक्षा करते करते थक जाएगी तो तंत्र जनता पर अधिकार कर लेगा । यानि मुझे या तो निगल लेगा या अपने किसी प्रेयसी को भेट कर देगा उधर हर कालोनाइजर गेती, फावडे की सेना लेकर मुझ पर हमला करने को उद्यत रहता है। मुझे हर्ष होता है जब मुझको लेकर गैंग वार होता है। दूसरी आक्रमणकारियों के आपस में घायल होने पर मैं बचा रहता हैॅू।

भाग कर प्रेम और विवाह

पत्नि ने मुझसे चिरोरी करते हुए कहा "चलो हम भाग कर शादी कर ले। " हरेक पत्नि की तरह मेरी पत्नी भी एक ऐसा बिजली का तार है जो दूर से भी झटके मारती है। इस बार चिरोरी कर रही थी। लगता है किसी जोर का झटका देने की तैयारी में वह बिजली का तार था। मैं ने कुछ दूर सरक कर कहा "पागल हो गई हो क्या" हम बाकायदा पति पत्नी है। अब हम भाग कर जायेगे तो हमे कोई नही ढूॅढेगा। पड़ोसी अलबत्ता हमारे एक बी.एच.के (एक बेडरूम हाल, और किचन) वाले बंगले पर कब्जा कर लेंगे।"

उसने कहा "भाग कर शादी करते का अलग आनन्द है। एक रोमांच है। अभी तो तुम ऐसे शादी कर लाये जैसे बकरा खरीदा जाता है। पहले तुम्हारे मां बाप ने मेरे मां बाप की हैसियत देखी। उन्हे नमस्ते करने

के बावजूद यह देखने के लिये मैं गूंगी तो नही, उन्होने भजन गाने को कहा । यह देखने के लिए कि मैं लंगड़ी तो नही तुम्हारे उस लफंगे बहनोई ने मुझे नाचने के लिए कहा । तुम जो ऐसे सिर झुकाये रहे जैसे तुम बकरा हो और मैं खरीदरार (पहले ऐसे ही शादी तै होती थी)

मैनें समझाते हुए कहा "भाग कर शादी करने में हमारी दोनो औलादें गैर कानूनी हो जायेंगी। तुम जानती ही हो कि शादी के पहले वाली औलादो को क्या कहते है। "मैं जानती हूॅ कि उन्हे नाजायज औलादें कहते है।" उसने जवाब दिया" पर हम उन्हे प्रेम विवाह करने के बाद गोद ले लेंगें" जैसे पिटने वाला भागते भागते गाली देता है ऐसे ही मैने दफ्तर जाते जाते कहा "भूल जाओं और शाम को भटे का भुर्ता खाने को मन कर रहा है।

पत्नी एक व्यवस्था होती है उसे मालूम रहता है कि पति एक जहाज के पक्षी की तरह रहता है। उसे लौट कर वापस आना ही रहता है। और पत्नी का कहना यानि कि कानून मानना ही पड़ता है। शाम को मैं वापिस आया तो उसने भुर्ते की सब्ती परसते हुण्े कहा "मेरे सुबह भागने कर शादी करने वाले प्रस्ताव का क्या हुआ ?"

मैंने कहा जो पड़ोस के अधेड परन्तु कुवारे शर्मा जी है।" वे सुबह से ही तुम्हें तांक झांक (डरते डरते घूरने का तरीका) करते रहते है। तुम्हे देखने के लिये, श्रीवास्तव जी घर पर है ? कह कर घर में घुसने का प्रयत्न करते है । मैं उनके साथ तुम्हारे भागने का इन्तजाम कर देता हॅैंू। मेरे तो घुटने का दर्द करने लगे है अतः नही भाग पाऊंगा ।"

उसने तुनक कर जवाब दिया" तुम्हे शर्म नही आमी किसी अच्छे आदमी की बर्बादी के बारे में सोचते हुये।" तो क्या अपनी बर्बादी के बारे में सोचूॅ मैने दबी आवाज से कहा "उसके बारे में सोचने के लिये तुम्हे जरूरत नही है वह बोली मैं समझ गया कि यह सब समाचार पत्रों की उन खबरो का असर है जिनमें लिखा रहता है कि फलां सेठ की लड़की फलां लफंगे के साथ भाग गई फिर लड़की लिख कर पूछती है कि (कोर्ट मैरिज" करने के बाद) वह कब आर्शीवाद लेने आ जावे । वह यह भी लिखती है कि भागने में बन्टी (अब उसका पति) को कोई कसूर नही है।

मैने पति को सलाह दी "तुम ऐसा करो कि बच्चे के साथ मायके चली जाओं फिर जो कुछ गहना रूपया तुम्हारे मां बाप के पास है उन्हे समेट कर पार्क में चली आना । मै तुम्हें वहीं इन्तजार करता मिलॅूगा। वहां से हम दोनो भाग चलेंगें। भाग कर हम लोग किसी होटल में थ्रिल का अनन्द उठायेगे और हमारे बच्चों की देख रेख तुम्हारे मां बाप करते रहेंगे । कुछ दिन बाद तुम्हारे मां बाप पुलिस मे रिपोर्ट लिखवा देंगे कि उनके बिटिया दामाद बगैर चोरी किये घर से भाग गये है।

उसने परले सिरे से ही यह समझदारी भरा सुझाव नकार दिया और बोली मेरे जमींदार बाप (उनके मकान से लगी एक सात सौ वर्ग फीट की जमीन भी थी) दहेज देकर पहले की ही भिखारी (मुझ से उधार मांगते मांगतें दहेज से ज्यादा वसूल चुके है) हो चुके है। एसा करते है कि मेरे मां बाप को हम पहले यहां बुला लेते है। फिर अपना ही माल चुरा कर हम यहां से भाग चलेगें। बाद की घटनाऐं तुम्हारे सुझाव के अनुसार ही घटेंगी। इसज तरह आधी बात मेरी और आधी तुम्हारी मान ली जायेगी।

मैं समझ गया कि शादी के बाद भी लड़की उसके मां बाप की ही रहती है, पति की नही हो पाती। आजकल हर विद्यार्थी को (स्कूल) कालेज में आकर प्रेम करने की बहुत जल्दी रहती है। मालूम नही फिर प्रेम कर पाये या नही ? ऐसा न हो कि बगैर प्रेम किये ही जिन्दगी हाथ से फिसल जाये। कालेज और यूनीवर्सिटी तो शहर से भागी नही जा रही । डिग्री तो (वगैर पड़े) बाद में भी मिल जायेगी । वे पहले मिल कर सारी योजना बनो लेते है कि कहां से अर्थ व्यवस्था करेगे फिर भाग कर कौन से हिल स्टेशन पर

जायेंगे। सर्कस के जोकरो की तरह किस तरह के रंग बिरंगे कपड़े पहनेंगे। किस पेड़ के चारो तरफ घूम घूम कर गाने गायेंगे। और कैसे वापिस आने के बहाने बनायेंगे।

जिस जगह प्रेम किया जाता है वहां विवाह नही किया जाता। प्रेम विवाह भाग कर ही किये जाते है। प्रेम करने की जगह सदि विवाह किया जावे तो पिटने का डर रहता है। कई बार तो पिटने के डर के कारण ही प्रेम नहीं किया जाता। कुछ विद्यार्थी केवल प्रेम करने तक ही कालेज में पड़ते है। प्रेम होते ही वे कालेज छोड़ देते है सेठ लक्ष्मी चन्द जी को एक लड़के की चाहत में छः लडकीयां पैदा हो गई। जो लडका पैदा हुआ वह भी लक्ष्मी वाहन जैसा । एक बार उनकी चैथी लड़की ने कहा "पापा पापा मैं पडोसी लड़के राजू के साथ भागना चाहती हॅ‍ॅू"

सेठ लक्ष्मीचन्द उस योग्य लड़की पर प्रसन्न हो गये। खुशी दबाते हुये बोले "बेटी आजकल आधुनिक युग है । आजकल लड़की को लड़का पसन्द करने का पूरा अधिकार है। बताओं हमारी बिटिया उस योग्य लड़के के साथ कब भागना चाह रही है" चैथी लक्ष्मी बोली "पापा राजू ही तैयार नही हो रहा"

सेठ जी बोले "उसे मेरे पास लाओं मैं उसे तुम्हारे साथ भागने के लिये तैयार कर लं‍ॅूगा।" लड़की ने कहा "वह पूछता है है कि तुम्हे भगाने के लिये तुम्हारे पिताजी कितनपे लाख रूपये देंगें। पड़ोस के बेबी के पिताजी तो उसे भगाने के लिए पांच लाख रूपये तक देने के लिए तैयार है।

कुछ पड़े लिखे लड़के उससे भी ज्यादा समझदार होते है पैसों के इन्तजाम के लिये वे शादी किसी और लड़की से करते है और जो कुछ एन्गेजमेन्ट में मिलता है उसे लेकर अपनी प्रेमिका के साथ साथ भाग जाते है। कई कालेजो के व्यावयाता अमीर लोगो की लड़कियों से नैन मटक्का करते है और गुरू से पति वन जाते हैं।

लव्वो लुआव यह कि प्रेम विवाह के लिये चोरी से प्रेम करना पड़ता है। ये प्रेमी रक्षा बन्धन पर गायब हो जाते है और वेलेन्टाइन डे पर प्रकट हो जाते है। फिर पैसो के लिये चोरी करते है। चोरी से शादी करते है और शादी करने के बाद सीना तान कर प्रकट हो जाते है इसी को कहते है चोरी और सीना जोरी।

तिलक ब्रिज के केक्टस

साहित्यकार रचना लिख कर केवल रचना दान में पटक कर रखे तो किसी को आपत्ति नही होती है पर रचना लिख कर गरम मेल की तरह वलात कानों में पकड कर उढ़ेले तो हत्या या आत्मा करने को मन होता है। पर जब दोनो नही कर कर सकते तो इसी को मलबूरी कहते है।

तो रचना की उपयोगिता तभी होती है जब उसे सुनाया या पढ़वाया जावे। जैसे दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम एसे ही रचना रचना पर लिखा है पढ़ने वाले का नाम और जैसे डंडा पैदा कही और होता है और सर कहीं और फोड़ता है वैसे ही रचना टपकती कहीं और है और चिपकती कही और है।

मुझे क्या मालूम था कि तिलक ब्रिज के कैक्टस नाम बहुमूल्य मगर दुरूह ग्रन्थ मुझे ट्रक ड्रायवर के हाथो मिलेगा । आपको मालूम है कि आर्थिक अल्पता मुझे हवाई जहाज के अलावा धरातल के सभी वाहनो का सुख दे चुकी है। मैं शासकीय सेवक हॅू । चूंकि जनता मेरी सेवा से संतुष्ट रहती है इसलिये उच्चाधिकारी एवं जन प्रतिनिधि असन्तुष्ट है। सामान्यतः हर छः माह में और किस्मत बहुत अच्छी रही तो एक साल में मेरा स्थानान्तरण प्रान्त के घुर उत्तर से घुर दक्षिण या घुर पूर्व से घुर पश्चिम सा यहां से वहां और वहां से यहां होता रहता है।

ड्यूटी के मामलें में, मैं श्रंगारित पत्नी और उसके द्वारा प्रेम से प्रस्तुत दो या तीन भोगो (छप्पन भोग सुने ही है) को भी छोड कर आंधी तूफान और उफनती नदी में भी कूद जाता हूँ। (सन्दर्भ के लिए कृपया तत्सम्बन्धी अप्रकाशित रचनाओं को पड़े) ऐसे ही एक दिन भोपाल से छिन्दवाड़ा आते समय जर्जर सरकारी बस का आगे का हिस्सा आगे निकल गया और पीछे का हिस्सा पीछे रह गया। दोनो भागों को धरती मां ने झेल लिया और धरती पुत्र और पुत्रियां चीख कर स्तम्भित हो गये। अपने अपने संस्कारों के अनुसार सब सरकार को विभिन्न स्तर की गालियां देकर उतर गये।

जैसे चीटिंया एक शक्कर का दाना छिन जाने पर दूसरे की खोज में निकल पड़ती है वैसे हम सब भी अन्य वाहनों की तलाश में चारो ओर बिखर गये किसी को जीप मिल गई तो उससे निकल गया। कोई आते वाहनों को देख कर आकर्ण मुस्कुरा कर रोकने लगा । कुछ तेज रफ्तार वाले वाहनों को बिल्कुल सड़क के बीच खड़े होकर स्वयं की एवं वाहनों में सवार व्यक्तियों की जान जोखिम में डाल कर वाहनों को रोकने का निरर्थक प्रसत्न करने लगे। गोया कोई मुस्कुरा कर, कोई आधरा हाथ हिला कर, कोई पीछे भागकर, कोई अपशब्द कह कर व अन्य सम्भव तरीको से वाहनों को रोकने का एवं अन्दर घुसने का प्रयत्न करने लगा। ट्रक ऐसे मौको पर डूबने को जहाज का सहारा बन कर आते है जैसे एक योग्य शिष्य को गुरू की एवं योग्य गुरू को शिष्य की आवश्यकता होती है वैसे ही असहाय सबारियों को ट्रक की एवं ट्रक को असहाय सवारियों की आवश्यकता होती है।

एक ट्रक ने रूकने का अभिनय किया और एक फर्लांग तक दौड़कर फिर अन्त में रूक गया। मैं हांफते हांफते अन्दर घुसने लगा तो ड्राइवर बोला दो सवारियां एक साथ लंूगा" मैने इच्छुक पति पत्नि से कहा "आप मेडम को मेरे साथ भेज दीजिये और आप किसी टैक्सी से चले आईये

शंकित पति शीघ्र की अजनबियो के इरादे भांप लेते है। वह पति समझ गया कि ट्रक ड्राइवर उसकी सुन्दर पत्नि को देख कर ही दो सवारियों का प्रस्ताव रख रहा है अन्यथा तो ट्रक में एक के लिये भी स्थान नही बचा था। और मेरी मक्कारी तो उसे और भी सावधान कर गई।

ये दोनो पति पत्नी जब नहीं बैठने लगे तो ट्रक के कन्डक्टर ने "जगह नहीं है" कह कर फाटक बन्द कर लिया। ऐसे मौको पर गिड़गिड़ाना एक हथियार बन जाता है और मैं पायदान पर लटक कर गिड़गिड़ाने लगा। इतने में ट्रक चालक चिल्लाया अरे कमीने बाऊ साब को भीतर आने दो एक किताब और बची है। "मैनें सोचा कि ट्रक चालक शायद सीट को किताब कह रहा है अतः जैसे रसगुल्ला गले के अन्दर सरकता है मैं भी अन्दर सरक गया।

ट्रक के अन्दर कोई सीट नही थी। बसो और ट्रको की भाषा में खड़े होने की जगह को स्टेंडिग कहा जाता है अतः मैं खड़ा रहा। ट्रक ड्राइवर ने कहा "बाऊजी दूसरे ट्रक वाले बैतूल से छिन्दवाड़ा का पचास रूपये लेते है मैं केवल पैंतीसं लूगा पांच सौ रूपसे की कीमत की एक किताब फ्री में दूंगा।

इसके बाद उसने पैतालीस रूपये रखवाये एक रूपये पेज के हिसाब से पांच सौ पंज की तिलक ब्रिज के कैक्टस नाम की किताब बोनस में थमा दी। मैने पूछा "उस्ताद, यह किताब आपने कैसे खरीदी।" कहां खरीदी बाऊ साहब ट्रक के धन्धे में बहुत सी बेगार करना पड़ती है। बगैर किसी गलती के भी आर.टी.ओ ने पकड़ लिया, दो हजार रूपये रखवाये और चार किताबे टिका दी । रिश्वत भी नही हुई और किताब भी बिक गई। मैने पन्ने पलटे तो उक्त पुस्तक किसी कलेक्टर ने लिखी थी और आई.ए.एस. के प्रश्न पत्र की तहर दुरूह थी । उसकी कविताऐं नागफनी, बबूल, तपती रेत, दुर्भिक्ष कुपोषण, सूखी नदी, पतझड़, वेताल, अतृप्त आत्मा, इत्यादि वाली थी।

आज कल पुस्तके खरीदी नही जाती बेची जाती है। प्रोफेसर उसकी किताबें यूनीवसिर्टी को बेचता है और उच्चाधिकारी अधीपस्थ कर्मचारियों को। सुधि पाठको का अभाव है आजकल। यदि एक हाथ में चाकू हो

तो ही दूसरे हाथ की किताब बिक पाती है। हुआ यह होगा कि कलेक्टर साहब ने निःशुल्क छपी उस पुस्तक के कोटो को उप जिलाध्यक्षो, फूड आफीसर और आर.टी.ओ. इत्यादि को आवन्टित किया होगा और उन लोगो ने ठेकेदारो और ड्राईवरो इत्यादि को बेच दिया होगा। इस तरह उक्त पुस्तक मेरे हाथ में आ गई।

मैंने इस पुस्तक को ड्राइंग रूप में रखूंगा और मित्रो की बतलाऊंगा कि यह पुस्तक एक आई.ए.एस. के द्वारा लिखी हुई है। आई.ए.एस. की हर गतिविधि गरिमामयी मानी जाती है। और फिर जब ऊब जाऊंगा तो उसे किसी मित्र को उपाहर में दे दंूंगा । फिर वह भी क्रमशः वही करेगा जो मैने किया।

हीरो के भाई का मुण्डन

मैं संगम पर अपना सिर मुंडवा रहा था। मेरे वालिद का इन्तकाल जो हो गया था। अभी आधा सिर ही मुंडा था, कि एक खुशखबरी पास के रखे ट्रान्जिस्टर नें दी । "मेरे आदर्श" "मेरे प्यारे" हीरो बिग ए की मां का देहावसान हो गया। मैनें सिर मूंडने वाले को हाथ के इशारे से रूकने के लिये कहा। मैं अपने पिता के गम से गिरा और हीरो की मां के गम पर अटक गया सिर मंूडने वाले ने कहा- "मैं वेटिंग चार्ज लूंगा"। मैं सहर्ष देने तैयार हो गया।

मैने हीरो जी को फोन लगाया उन्हें पूरे भारत वर्ष से फोन आ रहे थे। अतः उन्होनें मुझे आधा सेकण्ड का ही समय दिया। मैने कहा -"सर जी बधाई।" वे गुस्सा हो गये, दहाडे "यू ब्लडी फूल, मेरी मां मर गई है और तुम बधाई दे रहे हो।" मैने कहा "मेरा आधा सर पिताजी के इंतकाल पर मुंडा हुआ है। बचे आधे को मैं आपकी माता श्री की याद में मुंडाना चाहता हूँ

उन्हें सम्भवतः प्रस्ताव रूचिकर लगा बोले-"कुछ देर रूको मैं बनारस के विद्धानों से पूछता हूँ।" पाॅच मिनट बाद उनका फोन आया -"विद्धानों का कहना है, कि भक्त और भगवान एक ही होते है अतः तुम मेरी मां की याद में सिर मुंडवा सकते हो, बाल हमें भिजवा देना।" मैं पहले सोच रहा था कि मेरी मां की डेथ पर मेरे सेक्रेटरी के बाल मुंडवा दंू । फिर भी मंै एयरोप्लेन से उसे "नेसेसरी आयटम्स" के साथ भिजवा रहा हंॅू।"

मैं उस दुख के मौके पर भी अत्यन्त खुश हो गया । इतनी देर तक मुझे "मेरे आर्दश से" बात करने जो मिल रही थी। इसी को कहते है" ब्लेसिंग्स इन डिस गाइज।" मैं बोला - सही तो है, जब "डुप्लीकेट" आपकी जगह पर स्टन्ट दे सकता है, तो "डुप्लीकेट आपकी मां के मरने पर सिर क्यों नही मंुडवा सकता आप सेक्रेटरी को भिजवा दीजिये ।"

सिर मूंडने वाले ने मेरे आधे सिर पर हल्दी लगाई थी वह मेरे पिताजी वाला हिस्सा था। बचे आधे सिर पर उसने मंहगा वाला शेम्पू लगाया । उसने मेरे पिताजी वाले सिर के चिकने हिस्से से तोे पुराना उस्तरा सााफ किया, मगर हीरो की मां वाले हिस्से को नये और मंहगेे उस्तरे से मंूडा।

मैनें उससे सिर मंूडने के पैसे पूछे तो उसने पांच हजार रूपये बतलाये। मैं भड़क गया मैनें कहा “सौदा मात्र सौ रूपये में तय हुआ था” वह बोला -”वह सौदा तुम्हारे बाप के इन्तकाल पर सिर मंुडवाने का था। आपके हीरो की माता श्री वाले हिस्से का नही । उनकी माता श्री के हिस्से के मुण्डन के चार हजार छः सौ रूपये हुये।”

मैने कहा “ठीक है। बाकी रूपये काहे के ?”

“बाकी रूपये बेटिंग चार्जेज है तो पहले ही तय हो गया था”, वह बोला

दूसरे दिन उनका सेक्रेटरी मेरा पता पूछते पूछते धर्म शाला में आ गया। नाक पर रूमाल रख कर उसने कहा “अब आप इस धर्मशाला में नहीं ठहर सकते । आप “बास” के सिर मंुडाये भाई हो गये है । आपको मेरे साथ अभी थ्रीस्टार होटल में चलना पड़ेगा अब यदि कोई भी पूछे तो आप को कहना पड़ेगा कि बिग ए. की माॅ आपकी भी माॅ थी”

मैने रास्ते में कहा-“बिग. ए. मेरे आदर्श है उनके माॅ-बाप नही”।

सेक्रेटरी ने मुझे बिग देते हुए कहा “अब कुछ नही हो सकता।” मैने पूछा “मैं बिग का क्या करूंगा ? मुझे सिर घुटा होने में शर्म नही आती।” वह बोला-” तुम लोग सिर घुटा कर टोपी पहनते हो कि नहीं ? यह फर वाली टोपी ही समझो । तुम्हे अभी मरे साथ मुम्बई चलना है। यह बिग ए. का मास्क पहन कर।” मैं घबरा गया । मैने कहा -“अभी मुझे मेरे पिताजी का श्राद्ध करना है।”

“भूल जाओं”, वह बोला “तुम बिग ए. के वह बिछुडे हुये भाई हो, जो बचपन में मेला में बिछुड़ गये थे। अब उनकी मां के मरने के बाद मिल गये हो। तुम्हें चान्स जल्दी मिल गया, नहीं तो बिग बाॅस की कितनी ही पूर्व माॅये और पत्नियाॅ घूम रही है, जिन्हें बिग ए. घास भी नही डालते।”

मैं अचकचा गया । मैने सोचा कि मैने किसके शोक में अपने बाल उतरवा लिये ? मैंने पूछा -“तो क्या जो मर गई वे हीरो की सगी मां नही थी ।” “वे उनकी मंुह बोली माॅं थी जिन्हें हीरो जी सगी मां से भी ज्यादा मानते थे” सेक्रेटरी बोले । उधर घर से मेरे भई बहनो के बार बार फोन आ रहे थे । गरूढ पुराण वाले पण्डित जी पैसे मांग रहे थे । जो मेरे भाई बहिन देना नहीं चाह रहे थे । मैे पहुंचता तभी सारे पेमेन्ट होते।

मेरी किस्मत अच्छी थी जो लौटने में हवाई जहाज के टिकिट नहीं मिले । सेक्रेटरी ए.सी.वन के स्लीपर के टिकिट लिये । रास्ते में उन्होने मंहगी शराब निकाली और मुझे साथ देने को कहा। मैने कहा “मैं ने अभी तक चखी नहीं” है, और आप पीने को कह रहे है ! नशे वाले सफर मे मैं आपका हम सफर नहीं बन सकता।”

उन्होंने बुरा नही माना और मेरे हिस्से की भी पी गये । फिर वे सो कर खर्राटे लेने लगे। मैं आधी रात को रास्ते में चुपके से उतर गया। साथ में अपने प्रिय हीरो का मास्क भी ले आया। सुबह मैने टी.व्ही. लगाया उसमें बिग ए का साक्षातकार आ रहा था । पत्रकार ने पूछा - “आपका भाई कहा गया ?”

“वह फिर मेले में बिछड़ गया।” “मेरा आदर्श” बोला।

मैं नहीं जान पाया

मुझे आदमियों से उतना डर नही लगता जितना कि होली से लगता है। होली के दिन मैं बगैर सीड़ी के अपने एक मन्जिला मकान की छत पर येन-केन प्रकारेण चढ़ जाता हॅंू और सोचता हॅू कि काश एक दिन के लिये ही सही, मेरा मकान कुतुबमीनार बन जाता। इस बार की होली पर भी मैं मकान की छत पर भरी दोपहरी में रजाई डाल कर सोया था कि प्रति होली की तरह मुगलकालीन मजबूत दरवाजे पर कोई भैंसे जैसे टक्करे मारने लगा। मैंने अपने दरवाजे को बचाने के लिए कहा ''कौन है जो आदमी होकर भी जानवरों की तरह दरवाजे को तोड़े जा रहा है''

नीचे से चहकने की आवाज आई ''क्यों मियां दरवाजे पर चोट लगी तो दिल में दर्द होने लगा'' मैनें नीचे देखा तो नख से शिख तक कोलटार से पुता रंग से लथपथ फटे कपड़े पहने कोई ? आदमी खड़ा था । मैंने कहा ''लगते तो रामलाल श्यामलाल बांके बिहारी या कल्लन मियां हो'' नीचे से आवाज आई ''मियां नीचे उतरो और टटोल कर पहचान लो''

इतने में कोई कुत्ता फटे कपड़े देख कर उन सज्जन पर भौंकने लगा । जब उन्होेने कुत्ते को घूरा तो कुत्ता उन्हें भूत-प्रेत समझ कर डर कर तेजी से भाग गया । वह फिर ऊपर सिर करके बोला ''देखो मियां मैं तो साम्प्रदायिक सद्भाव के लिये तुम्हारी होली खेलता हॅू जिससे कि ''इंडिया देट इज भारत'' के संविधान की इज्जत बनी रहे''।

मंैने गिडगिड़ा कर कहा ''केवल होली खेलने से ही साम्प्रादायिक सद्भाव नहीं बना रहता मैं बाकी बचे तीन सौ चैसठ दिन संविधान का आदर कर लूंगा।'' नीचे से दमक कर आवाज आई ''मियां हांडी का एक चावल देखा जाता है जो एक दिन सम्बिधान का आदर नहीं कर सकता वह बाकी तीन सौ चैसठ दिन क्या करेगा ? ''तुम नीचे उतरते हो या मैं जबरदस्ती तुमसे साम्प्रदायिक सद्भाव करवाऊंॅ''

मैं डर गया । मैने अधिकतर झगड़े शान्ति समितियों के सदस्यों में ही देखे है। मुझे सकते में देख कर वे बोले ''देखो भाईजान, मैं साम्प्रदायिक सद्भाव के लिये आज भांग तक पीकर आया हॅू हालांकि बाकी दिन शराब पीता हॅू।

मैने हिम्मत से जवाब दिया ''आपका त्याग प्रशंसनीय है मगर मैं होली खेलंूगा तो हो सकता है कि मर ही जाऊॅ'' वह ठहाका मार कर हंसा ''अच्छा तो तुम्हें चिन्ता लगी है कि तुम्हे कन्धा कौन देगा । अरे मर कर तो देख मैं हॅू तेरी मैय्यत में कन्धा देने वाला। और तेरी तेरहवीं में रायता पीने भी आ जाऊंगा ।

मै ऐसे शुभचिन्तक से डर कर थर-थर कांपने लेगा । मैने कहा ''मैं अपने नौ जवान बेटे को तुम्हारे साथ होली खेलने भेज देता हॅंू । आजकल वही मेरी जगह पर शादियों में डिनर खाने जाता है।''

वह शैतान बोला ''तुम्हारा लड़का नहीं हां भाभी-जान को तुम मेरे साथ होली खेलने भेजो तो तुम्हे छोड़ा जा सकता है।'' मैने सूचना दी ''वह वीरांगना पहले से ही मुहल्ले के पन्द्रह बीस हट्टे-कट्टे देवरांे के

साथ होली खेलने गई है। यदि तुम हाथ पैर तुड़वाने का मद्दा रखते हो तो उसको मय देवरों के बुलवा लूॅ। साड़ देवरांे का वर्णन सुन कर वह कालीमूर्ति वहां से भाग गई और मैं नहीं जान पाया कि रामलाल था या श्यामलाल था या बांके बिहारी था याा कल्लन मियां थें।

शपथ पत्र

कुंआरा अन्धाधुन्ध भागा जा रहा था और एक चार की गार्ड उसके पीछे पड़ी थी । पुलिस के कुछ कुत्ते भी उसके पीछे पड़े थे । भागते भागते कुंआरा थक कर हांपने लगा और पत्थर पर बैठ गया। पुलिस ने उसे टांगो की तरफ से घसीटना चालू किया। इस सफलता की सूचना पुलिस ने कलेक्टर को दी। कलेक्टर ने पुलिस बल को बधाई दी कि बगैर गोली चलाये उन्होंने सफलता प्राप्त की है।

उसको घसीट कर पुलिस शादी मण्डप में ले आई। वहां बहुत सारी शादियां एक साथ हो रही थी। चारो तरफ पुलिस का पुख्ता प्रबन्ध था जिससे कि कोई कुंआरा भाग न जावे । हर जोड़े के पास सरकारी दहेज रखा हुआ था। लगभग दो सौ पचास वेदियां जल रही थी पर उनकी आग इतनी तेज न थी कि कोई कुंआरा चिता में कूद कर आत्महत्या कर ले।

घसीटा कुमार को देख कर कुंआरी हंस दी। फिर सहानुभूति जता कर बोली “चूु चू पुलिस वालों ने बेरहमी से घसीटा ! चलो अब जल्दी सात फेरे ले लो नही तो वे तृतीय श्रेणी का व्यौहार करने लगेंगें और सबके सामने रोना बन्द करो पूरी जिन्दगी पड़ी है रोने को।

कुंआरे ने गुस्सा होकर पूछा “पुलिस को कैसे मालूम हुआ कि मैं कुआंरा हूॅ। “मैने बताया” कुआंरी बोली तुम लोगो ने मेरी शादी के लिए मना कर दिया तो हमारी तो हिम्मत ही टूट गई फिर पुलिस गांव में आई और पूछताछ करने लगी कि गांव में कोई कंुवारी तो नहीं बचा। तो मैने बतला दिया कि मुझ कुंआरी के तुम कुंआरे बचे हो।”

इतने में कंुआरे के मां बाप आ गये। वे शोर मचाने लगे के क्या धांधली है मेरे लड़के की जबरदस्ती शादी करवाई जा रही है।

पुलिस उन्हें पकड़कर कलेक्टर के पास ले गई। कलेक्टर ने पूछा “क्यो कुंआरा बाप, क्यों ऊधम मचा रहे हो”। “मैं कुंआरा बाप नहीं हूॅ कुआंरे का बाप हूॅ “क्या तू आई.ए.एस. स ज्यादा जानता है” कलेक्टर ने झिड़का । वह सकपकाकर बोला “हूजूर मेरे नाबालिक लड़के की जबरदस्ती शादी करवाई जा रही है” कलेक्टर ने सरकारी डाक्टर को तलब किया और आज्ञा दी “सरकारी डाक्टर, इनके लड़के को खींच कर बालिग बना दो।” सरकारी डाक्टर झुक कर बोला “सर, अधेड़ बना दंॅू क्या ?” उस लड़के की उम्र 22 वर्ष होने का प्रमाण पत्र सरकारी डाक्टर से ले लिया गया।

कुंआरे के बाप ने फिर प्रतिवाद किया “हूजूर, शादी ब्याह व्यक्तिगत मामला है” “नही है कलेक्टर ने जवाब दिया “जब से मुख्यमंत्री जी ने सामूहिक विवाह करवाना चालू किये है यह एक सरकारी मामला हो गया है और अगर ज्यादा चीं चपड़ की तो सरकारी कामों में हस्तक्षेप करने में अन्दर कर दिये जाओगे।

बाप बड़बड़ाता हुआ वापिस लड़के के पास आ गया। लड़के से बोला “बेटा मुख्यमंत्री कुंआरा नहीं रह पाया तो हरेक कुंआरे से जलता है। चल सात फेरे ले ले।” अकेले सात फेरे नही लेना है” पण्डित जी बोले “हंसते हुये सात फेरे लेना है नहीं तो जिलाद्रोह के मामले में अन्दर कर दिये जाओगे”

"क्या धांधली है" लड़का बुदबुदाया "हरेक अन्दर करने की बात कर रहा है" इतने में तेजी से बाजे बजने लगे। पटाखे चलने लगे। मालूम पड़ा कि मुख्यमंत्री जी आने वाले है। कलेक्टर, एस.पी. तेजी से उन्हें रिसीव करने दौड़े । मुख्यमंत्री फूलों के हारों से लदे हुये थे। पार्टी के कार्यकर्ता उन्हें घेरे हुयें थे। उन्होंने शादी समारोह का फीता काटा । फीता काटने के साथ ही एक्शन चालू हो गया। जोर से मन्त्रोचारण होने लगा और जल्दी जल्दी फेरे लगने लगे।

उन्होंने कलेक्टर से पूछा "कितने जोड़े इकट्ठे हुये है।" कलेक्टर ने जवाब दिया दो सौ इक्यावन सर" "वेरी गुड" मुख्यमंत्री ने बधाई दी "इतने सारे जोडे कैसे इकट्ठे कर लिये" ? "सर हमने हर विभाग को लक्ष्य दिये थे। साथ ही जो ट्रेन या बस से उतर रहा था उसकी शादी का प्रमाण पत्र देखा जा रहा था। जो गैर शादी शुदा था उसको ट्रक में ठूंस कर विवाह मण्डप में लाया जा रहा था। उनकी शादी करके ही शहर में जाने दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री जी ने हंस कर कहा ठीक है । हर कुंवारे की शादी करवा दो जिससे नौ जवान सरकार नीतियों का विरोध करने के काबिल न बचे। पुतले जलाने की हिम्मत न करें। इमरर्जेन्सी में तो विद्राहियों को जल में ठंूसा गया था, हम हर घर में एक जेलर घुसा देंगें। और हांलाकि दहेज देना एक अपराध है पर हम हरेक जोड़े को सरकारी दहेज देंगे।

"जी" कलेक्टर ने बोलना जारी रखा "हमने हरेक समाज को भी सामूहिक विवाह करवा कर शादियों के लक्ष्य बांट रखे है। अगर इतनी शादियां नही होगी तो परिवार नियोजन के लक्ष्य पूरे कैसे होंगें।"

इतने में पार्टी का कार्यकर्ता एक जोड़े को पकड़ कर ले आया और चिल्लाकर बोला "मुख्यमंत्री जी, इस जोड़े ने सरकारी दहेज के लालच में ये तीसरा विवाह रचाया है। पहले दो विवाह यह बाजू के जिले में करवा चुका है।"

मुख्यमंत्री जी ने कलेक्टर से कहा "एक शपथ पत्र छपवा लो जिसमें छपा हो कि यह हमारी पहली और आखिरी शादी है। इसके बाद में शादी नहीं करवायेंगे।

(उपरोक्त उदाहरण जैसी घटनायें न हो तो सामूहिक विवाह समाज में प्रचलित दहेज के कोढ़ को मिटाने का एक सार्थक कदम है)

माॅ का आर्शीवाद

दिन में तीन या चार बार गरमागरम खाने से औलाद का पेट भरने के साथ साथ मां पर यह कर्तव्य भी निर्धारित किया गया है कि वह पुत्र को आर्शीवाद भी दे।

वेदों और पुराणों में माॅ का आर्शीवाद दो तरह का बतलाया गया है। पहला है ''श्रेय'' आर्शीवाद जो औलादों को अस्वीकार्य होता है। श्रेय आर्शीवाद होता है भक्ति की पराकाष्ठा यथा भगवदर्शन या मुक्ति जिससे सब थरथर कांपते है। प्रेय आर्शीवाद स्थूल होता है जो हर पुत्र को प्रिय होता है । यह आर्शीवाद वाहनों और भवनों के रूप में होता है। जैसे ट्रकों और कारों के पीछे और बिल्डिगों के सामने लिखा होता माॅ का आर्शीवाद या आई तुझा आर्शीवाद। किसी भी ट्रक के पीछे या बिल्डिंग के सामने बाप को आर्शीवाद लिखा नही मिलता।

जब मेरी साइकिल किसी ट्रक के पीछे चलती है जिस पर मां का आर्शीवद और बुरी नजर वाले तेरा मंुह काला लिखा रहता है तो मुझे वाजिब ही अपनी मां पर शर्म और गुस्सा एक साथ आता है जिसने ट्रको की जगह दूधो नहाओ और पूतो फलों का आर्शीवाद बरसा। काश उसने औलादों की जगह पर उतने ट्रक या कारें बक्शी होंती। धन्य हैं वे मायें जो औलादों के लिए ट्रक, कारें और बिल्डिंग भी जनती है। मां का आर्शीवाद लड़कियों के लिये नहीं होता अपने धन के लिये ही होता है।

एक दिन मैने पेट का गड्ढा भरते समय अपनी अम्मा से कहा बाई सबकी मांये अपनी औलादों के लिये सब कुछ देती है और एक तू है जो मुझे कुछ नहीं देती । आई ने तुर्क व तुर्क जवाब दिया नास पीटे, सब लडके अपनी मां को रिश्वत लाकर देती है एक तू करम जला है तो तनखा से गुजारा करता है । माॅ का आर्शीवाद रिश्वत खोंरो और काले धन वालों के लिए होता है । काला धन कमाने वालों को बच्चे पैदा करने की फुरसत ही कहां मिलती है । और ईमानदार लोगों को बच्चे पैदा करने से फुरसत कहां मिलती है।

तो मेरी मां मुझे मांगने पर झिड़की ही देती है, कार ट्रक या बिल्डिगे नहीं। मैं सोचता हॅू कि मेरे बच्चों के पीछे ही मैं माॅं का आर्शीवाद की तख्ती लटका दंॅू पर मेरी बीबी मुझ से और मेरी मां से महाभारत करने लगेगी।

मेरा एक मुंह बोला मित्र है । उसे कजिन दोस्त भी कह सकते है। जब उसे मुझसे काम होता है तो मैं उसका गहरा दोस्त हो जाता हूॅं ओर जब मुझे उससे काम होता है तो वह मुझसे परिचय मांगता है। उसके, मेरी नजरो में अनगिनत ट्रक चलते है और उसकी नजरों में कुछ ही ट्रक चलते है। वह माॅ के आर्शीवाद से ही ट्रक खरीदता है और माॅ के आर्शीवाद से ही आय कर की चोरी करता है। उसके एक ट्रक का पीछा करते करते मैं उसकी मां तक पहुंच गया।

अहा, क्या शानदार मां थी उसकी । बिल्कुल फिल्मी या दूरदर्शिनी मां । जैसे सुषमा सेठ या तुलसी ईरानी ही उसकी मां का रोल कर रही हो। उसने रामू दादा से कहा रामू काका, किचन के लाफ्ट पर जों पांचवा पीपा है उसमें बूंदी के लड्डू और मठरी रखे है। जरा महेश को लाना तो। कैसा मीठा बोलती है मैने सोचा । लगता है कला और संस्कृति काले धन की ही औलादें है। मुझे तो रामू काका के द्वारा मठरी खिला रही है और अमीरो और अधिकारियों को भुने काजू श्रंगारित वदू के साथ प्रस्तुत करवाये जाते है।

“कैसे आया रे”? उन्होने प्लांटिंग पेपर चाशनी में लपेट कर पूछा । मैने शिकायत की “मेरी मां” तो मुझे गालियां ही देती है। घर या कार नहीं देती आप ही एकाध ट्रक का आर्शीवाद दे दे” वह बोली बहू तेरा इन्तजार करती होगी। मेरे घर में एक गाय है मैं सोचता हॅू उसके पीछे ही मां का आर्शीवद की तख्ती लटका

दं्ू पर सोचा कि मां का आर्शीवाद मां कैसे हो सकती है । हा एकाध गधा होता है तो मां को चिढ़ाने के लिए उसके पीछे मां का आर्शीवाद जरूर लिखवाता।

व्यवस्था का कानून

कानून मंत्रियों और प्रशासनिक अधिकारियों के दरवाजे पर मशीन गन लेकर और आम आदमियों के दरवाजे पर हथकड़ी लेकर खडा रहता है। उसकी हरकत पर मरन आम आदमी का ही होता है।

मेरे घर के बाहर भी कानून की दस बारह धारायें बैठी ही रहती है । जैसे ही मैं बाहर निकलता हूॅ वे मेरे पीछे लग जाती है। मैं सड़क के दाहिने तरफ चला तो एक धारा, मैने थूका तो दूसरी धारा, मैनें बीड़ी पीना चालू किया जो तीसरा धारा, मैं चिल्लाया तो चैथी धारा, मैने इशारा किया तो पांचवीं धारा, मुझे जकड़ लेती है। मेरे इत्यादि करने पर इत्यादि धारायें मुझे पकड़ लेती है। मैं घर में बच्चे के कान खींचता हूॅ तो कानून मुझसे नाराज हो जाता है और यदि मेरा कुत्ता चोर पर भोंकता है तो कानून की भौंहे े फड़कने लगती है । अन्याय का प्रतिरोध करने पर तो कानून मुझ पर गुस्सा होता ही है मेरे चुपचाप पिटने पर भी उसे आपत्ति होती है । मेरा सांस लेना गुनाह है तो तेरा आत्म हत्या करना भी कानूनन घोर अपराध है।

गरीबी के कारण यदि पजामा नीचे से फटा है तो उन्हें असहनीय है ही मगर ऊपर से फटा है तो अश्लीलता है जो कि कानूनन सजा दिला सकता है।

मैं किसी महिला को देखकर यदि अभिवादन नही करता हो असभ्यता है और यदि मुस्कुराता हूॅ तो “टार्ट” । आज कल तो जंगल में रहकर भी कानूुन से नही बचा जा सकता, वहां वन विभाग के कानून चलते है।

दस्तावेजी कानून व्यक्ति से बड़ा है। यदि मेरा जन्म प्रमाण पत्र गुम गया तो मेरा जन्म ही नहीं हुआ और यदि मेरे पिताजी का मरणोंपरांत मृत्यु प्रमाण पत्र नहीं बना तो वह मर ही नही सकते । मेरी पत्नी लाख मांग में सिन्दूर भरे पर शादी के प्रमाण पत्र के बगैर कानून उसे मेरी रखैल ही मानेगा और यदि मेरे पास मतदाता प्रमाण पत्र नही है तो मुझे भारत का नागरिक ही नही माना जायेगा, मैं अपने मत का उपयोग नहीं कर सकता । हो सकता है मुझे बंगला देश का नागरिक घोषित कर दिया जावे। चाहे सृष्टि के प्रारम्भ से मेरे पूर्वज और मैं छिन्दवाडा के बाहर ही न गये हो।

कानून एक मकड़ी का जाला है जिसमें गरीब आदमी कीडे मकोड़ो की तरह फंस जाता है मगर अमीर की नौकरानी उसे झांडू से साफ कर देती है । इसलिये लोग बाग कानून का सहारा लेने के बजाय अमीर आदमी का सहारा लेना पसन्द करते हैं। एक आम आदमी कानून के जाले से जितना बाहर निकलने को छटपटाता है उतना ही उलझता जाता है और व्यवस्था उतने की शीघ्र मकड़ी की तरह उस पर झपटती है। कानून और व्यवस्था की आदर्श स्थिति व्यवस्था की दृष्टि में वह होती है जहां कानून उठकर व्यवस्था को नमस्ते करता है।

ऐसे ही एक अजनबी शहर में घूमता हुआ एक बड़े शो रूम में पहंुंच कर छोटी चीज खरीद कर बिल मांगने लगा । अचानक शो रूम में शटर गिर गये। उसकी धुनाई की जाने लगी और जेबे े लूट कर उसे शटर खोल कर बाहर फेंक दिया गया । न सामने की दुकान कुछ बोली न बाजू की दुकान । अजनबी के फटे कपड़े देख कर जिनके कपड़े फठने से बच गये थे वे उसका मजाक उड़ाने लगे ।

अजनबी ने सहायता पाने की दृष्टि से एक गुण्डे से कातर स्वर में पूछा “यहां कौन सी सड़क कानून की तरफ जाती है ? गुण्डा, जो कि दुकानो पर पलता था उसको फिर पीटने लगा और बोला “मैं ही यहां का कानून हंॅू”। अकंेले आदमी पर दो आदमी कानून बन जाते है । अजनबी पूछता पूछता मुश्किल से पुलिस स्टेशन पहुंचा और रिपोर्ट लिखे जाने की मिन्नत करने लगा । पुलिस स्टेशन झण्डो, डंडो, पंडो , बंगलो और दुकानो से दबा हुआ था। तब भी बोला “देखो कानून और आयोग जेल में चोर उचक्को, बंगलो में मंत्री अधिकारियो और सड़क पर गुण्डो की रक्षा के लिये है हम तुम्हारी रिपोर्ट लिख तो लेते है पर शक है कि मामला यहां से आगे बढ़ पायेगा क्योंकि तराजू तराजू भाई भाई”।

इसके बाद मामला न्यायालय पहुंच गया फिर पेशी दर पेशी दस साल बीत गये । अन्त में साक्ष्य के अभाव में अजनबी के अलावा सब बरी हो गये । शहर में अब भी झण्डा, डण्डा, पण्डा, और दुकाने राज्य कर रही है । यही होता आया है और यही जब तक सूरज चांद रहंेगा होता रहेगा ।

अन्तराष्ट्रीय गजल गायक

उद्घोषक ने उद्घोषणा की अब हम आपके सामने विश्व के मशहूर गजल गायक को प्रस्तुत करने जा रहे है । वह इसके पहले श्रोताओं को उस छोटे से कस्बे में विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत गायक, वीणा

वादक, तबला वादक, इत्यादि तश्तरी में रखकर परोस चुका था। श्रोताओं ने उन्हें चटखारे ले लेकर कानों के माध्यम से खाया था और तालियों के माध्यम से प्रशंसा की थी। श्रोताओं को शास्त्रीय संगीत की समझ नहीं थी और गायको को श्रोताओं के समझ की । पर चूंकि महाराज अकबर के जमाने से गायको को दाद दी जा रही थी । अतः सन दो हजार सात के श्रोता भी दे रहे थे ।

उदघोषक कहता गया "उन्हें आप सब जानते ही है उनका नाम है उस्ताद सा.रे.गा । जोरदार तालियों से उनका इस्तकबाल किया जाये । तबले पर उनका साथ दें रहें है मशहूर तबला वादक त.थ.द. और सारंगी पर उनका साथ दे रही है सुदर्शना प.फ.ब.।"

उस अन्त्रराष्ट्रीय गजल गायक को सुनने मात्र तीस व्यक्ति बचे थे । सामने की कुर्सियों पर बैठी कुछ श्रंृगारित अधेड़ महिलाएं थी। उनके पीछे उस कार्यक्रम में आयोजक उनके पति लोग थे और सबसे पीछे छींट की बुश्शर्ट पहने छींटा कशी करने वाले लुच्चे लोग थें।

वह अन्तर्राष्ट्रीय गजल गायक झकाझक कुर्ता और पायजामा से वस्त्रायमान था। ऊपर से लाल बंडी संगमरमर के फर्श पर बीर बहूटी का भ्रम उत्पन्न करती थी। उसकी आॅखे किसी गला तर करने वाले द्रव के कारण लाल हो रही थी। वह स्टेज के पीछे तो ठीक ठाक गया था पर स्टेज के पीछे से लड़खड़ाता हुआ वापिस आया।

मन्च पर आकर उसने उन थोड़े से लोगों के हाथ जोड़े जिन्हें वह भीड़ समझ रहा था फिर मुस्कुरा कर तबले वाले को देखा जिसने प्रसन्न होकर लचक कर तबले पर थाप दी । अन्त में उसने तिरछी नजरो से सारंगी बजाने वाली को देखा तो उसने शरमानेे का अभिनय किया

कुछ देर तक वह स, स, रे, रे, ग, ग करता रहा फिर गजल गाने के अन्दाज में बोला मैं जो गजल आपको सुनाने जा रहा हॅू वह मेरी पसंदीदा गजल है। उसकी पहली दो लाइनें जनाब बशीर बद्र की है दूसरी दो लाइने मरहूम दुष्यंत कुमार की है और आखिरी दो लाइने उस्ताद शायर मिर्जा गालिब की है।

आगे की पंक्ति वालों को इस प्रस्तुति में प्रयोग दिखा कर पीछे वालों को यह केमिस्ट्री बे तुकी लगी । उनमें से एक ने खड़े होकर पूछा क्या "किसी एक की पूरी गजल याद नही है?"

अन्तर्राष्ट्रीय गजल गायक ने उस फिरके को बदन पर गिरी हुई छिपकली की तरह झड़ा दिया और बशीर बद्र की दो लाइने गीली जमीन पर कीले की तरह धंसा दी । न जी भरकर देखा ना कुछ बात की। बडी आरजू थी मुलाकात की । बशीर बद्र के मुरीद सीटियां बजा बजा कर खुशी का इजहार करने लगे ।

मगर एक पत्रकार ने संयोजक से पूछा क्या इन्होंने बशीर बद, दुष्यप्त कुमार और मिर्जा गालिब से इस खिचड़ी के लिए इजाजत ले ली थी ?

संयोजक थोड़ा परेशान दिखा फिर बोला "शायद ले ली होगी"

तभी गजल गायक ने मरहम दुष्यन्त कुमार की दो लाइने प्याले में उढेली ।

तू किसी सा.रे.गा.सा.रें.गा ट्रेन सी गुजरती है मैं, मैं, मैं, किसी पुल सा थरथराता हॅॅू

इस गजल का मिजाज शायराना नहीं था पर दाद देने वालों ने फर्ज अदाई की।

एक साहब उठकर बोले यह मिक्सचर तो वैसा ही हुआ जैसे राज मार्ग पर शुद्ध शाकाहारी एवं मासांाहरी ढाबा हो ।

गजल गायक साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रणेता मालुम होता था। ये प्रयोग उसने जामालय के पास में बिकने वाले नमकीन मिक्सचर से सीखे थे जिससे बादाम पसन्द हो वह बादाम चुन ले और जिसे नमकीन खाना हो वह नमकीन खाले । इस साम्प्रदायिक चूड़े के ही कारण उसे पद्म विभूषण की उपाधि मिली हुई थी । अन्त में उसके माध्यम से मिर्जा गालिब जन्नत से महफिल में तशरीफ लाये वे गाकर बोले

सुनते आये थे आदम का निकलना खुल्द से अब तक, खुल्द से अब तक, खुल्द से अब तक । बड़े वे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।
मगर हाजरीनो खवातीन तब तक धीरे धीरे मैदान खाली कर चुके थे।

दूरस्थ दर्शन

दूरदर्शन वालों ने हमें दिखने का हक नही दिया केवल देखने का हक दिया है। उन्हे रंगीन देखने के लिये हमें सात हजार रूपये खर्च करना पडे । हमारी भी इच्छा है कि हमारे घर वाले और मोहल्ले वाले हमें मूर्ख डिब्बे में देखे।

आंचलिक आम आदमी, आंचलिक साहित्यकार, आंचलिक कलाकार होने से क्या लाभ जिसे दूरदर्शन पर न दिखाया गया हो । निरर्थक है हमारा साठ वर्ष का होना और साधना करना। इससे तो अच्छा था कि किसी कव्वाल की पार्टी का तबलची हो जाता या किसी चल समारोह का चल व्यक्ति हो जाता, जिससे कि मटककर टेलीविजन पर दिखने का मौका तो मिल जाता। मुझे तो लगता है सभी चेनलों का यह अन्तरराष्ट्रीय षड़यंत्र है कि मुझे दूरदर्शन पर न दिखाया जावे।

ये सारी चेनलें कुत्ते बिल्ली और कीडे मकोडो तक को दिखला देती है सिवाय हमारे। धन्य है उन कीड़े मकोड़ो की माताएं जिनके बच्चे दूरदर्शन पर दिख जाते है । उन्होने मां के दूध का हक अदा कर दिया।

मुझे तो मेरन्ट जी से जलन होती है जो हमारे पड़ोस में रहते है । वे एक रैली में ठेके पर घटना से दिल्ली गये थे । रेल में मुफ्त में बैठे । रास्ते भर लूट कर मुफ्त की चाट खाते गये । षोडषियों पर दृष्टि चिपकाते-चिपकाते दिल्ली पहुंच गये । जब समाचार खुद ही दिल्ली पहुंच जावे तो दूरदर्शन वाले दूर क्यों जावे । वे उटपटांग हरकते करते करते आ गये कैमरे के फोकस में। दरदर्शन वालों ने उन्हें क्या दिखलाया वे हो गयेे आल पटना और आल मोहल्ला फेमस। हरेक आदमी से मुझे नीचा दिखाने के लिए कहते है तुमने मुझे फलां दिन देखा था रैली में। स्पष्ट तस्वीर थी। उन्होंने खुद के सम्मान में एक विशाल भोज दे डाला । मैं दूरदर्शन चैनलों की अकर्मण्यता के कारण उस नकारा आदमी के नीचे पिच गया।

एक हम है जो अक्सर लिखते और कभी कभी छपते रहते है। दूरदर्शन वालों ने आविष्कार होने के बाद से अभी तक हमारी मदद नही ली । तब से अब तक गंगा से मालुम नहीं कितना पानी फालतू बह गया । कोई दूरदर्शन वाले को बताओं रे कि हम उस पर दिखने के लिए कब से मूक साधना कर रहे है। सम्पादक महोदय, हमारा ये लेख उन तक पहुंचा देना। मैं आपको एक प्रति और डाक खर्च के पैसे संलग्न कर रहा हॅ़ू ।

अब मैं दूरदर्शन पर दिखने के लिए पांच साला योजना पर कार्य कर रहा हूॅ। मैं ने कुछ भजन मण्डलियों में नाम लिखवा लिया है जिससे आस्था सा संस्कार चेनल पर आ सकंू। कुछ कव्वालियों की पल्टन में टोपी लगा कर बैटने लगा हूॅ । हमारे क्षेत्र की नृत्य एवं नाटक मण्डलियों में हिस्सा बढ़चढ़ कर लेने लगा हूॅ। मेरी शर्त यह है कि मैं दरवान या भगवान बनने पर भी अपना चेहरा नहीं पोतूंगा। ऐसा न हो कि नाटक में भाग मैं लूॅ और कलुआ कहे कि देखो वो मैं हूॅ । नियमित रूप से नेताजी की सभाओं में जाने लगा हूॅ और आगे बैठ कर मटक मटक कर उनका भाषण सुनता हूॅ, और जोर जोर से तालियां बजाता हूॅ । आगे बैठने के सिलसिले में कई बार झगड़ कर पिट चुका हूॅ । मैं नहीं चाहता कि मुझे कहना पड़े की नेताजी की सभा में पीछे से तीसरी पंक्ति में बायें से पांचवां धब्बा मैं हॅ।

हमारे मन्त्रीजी दूरदर्शन पर कितने अच्छे लगते है। वे कैमरे की तरफ ही देखते रहते है। पब्लिक की तरफ नहीं देखते। आखिरकार वे डेढ़ सौ लोगो की तरफ देखें या एक अरब लोगो की तरफ। मेरी तरफ कैमरा आता है तो मैं हाथ ऊॅचे करके जोर जोर से जय जयकार करने लगता हूॅ पर कैमरा हर बार मुझे छोड़ देता है।

क्विज प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए मैं मनोरमा, जनरल नालेज की पुस्तके, लिम्का बुक आफ वल्र्ड रिकार्ड और गिनीज बुक आॅफ वल्र्ड रिकार्ड पढ़ने लगा हूॅ। मेरा सामान्य ज्ञान तो बढ़ गया, मैं दूरदर्शन पर नहीं आ पाया । मयाप्तम रामत्वम् कुशल वसुता न एवधिगता।

हमारे सारे अधिकारों की तरह दूरदर्शन पर आने के हमारे अधिकार भी मन्त्रीजी, नेताजी, चन्द मटक कवियों, चन्द गायको, अभिनेताओं, राजनायिको, सचिवों इत्यादि ने झटक लिये है । ऐसा नही है कि थोड़ा खिसक जावें और हमें भी जगह दे देवें ।

मैं दूरदर्शन पर दिखने के लिये अब काॅच चबाने लगा हॅ़ू, ऊपर से सिर के बल कूदने लगा हॅ़ू, इल्लियां खाने लगा हूॅ, मिट्टी में गड़कर समाधि लगाने लगा हूॅ। आदि से इत्यादि तक खतरनाक कर्तव्य करने लगा हूॅ। मेरी जान जाना सार्थक हो जायेगा यदि मैं दूरदर्शन पर दिख जांऊ।

बगैर चड्डी का बच्चा

भारत सरकार के पहिए के नीचे एक बच्चा पिच गया । जिस एम्बेसेडर कार से उक्त दुर्घटना हुई उसमें भारत सरकार सपरिवार दौरे के बहाने तफरीह करने जा रही थी । वाहन-चालक के स्थान पर रंगीन चश्मा लगाये केन्द्रीय-सरकार के जिला-स्थित नुमाइंदे बैठे थे। वाहन-चालक को डिक्की में ढकेल दिया गया था। उनके बाजू में उनका बेहतर (बैटर) "हाफ" बैठा था और दरअसल यही वजह थी कि भारत-सरकार स्चय वाहन चला रही थी। बच्चे के पिच जाने पर नपंुसक भीड़ इकट्ठा हो गई । साहब ने बाहर निकलकर इंगलियश में गाली देते रोबीली आवाज में पूछा ।

"यह बंदर किसका है और सरकारी रास्ते में क्योकर आया ?"

"हुजूर ! यह बंदर नही मेरा बेटा था।" एक आदिवासी डरते डरते बोला

" ऐसे कैसे हो सकता है अगर यह आदमी का बच्चा है तो इसने कपडे क्यो नहीं पहन रखे है ? उन्होने पूछा ।

हुजूर ! हमको खाने तक को तो मिलता नही है । कपडे कहां से आयेंगें ? उसने करबद्ध कांपते स्वर में जवाब दिया।

" अरे पिछले साल ही तोे मैने इस गांव की गरीबी हटाने के लिए अनुविभागीय अधिकारी के माध्यम से पंचायत को पांच लाख रूपये आवंटित किये थे। कहां गये वो रूपये ? क्या उनसे एक चड्डी भी नही खरीदी गई।" उन्होंने भीड़ को एहसान तले रौदा।

अब तक डिप्टी कलेक्टर को मालूम पड़ गया था कि भारत-सरकार से एक आदिवासी लड़का पिच गया है । अतः भारत-सरकार को भीड़ से बचाना उनका दायित्च था । वे भागे- भागे आये। केन्द्र सरकार प्रांत-सरकार को नौकर समझती है। इस समीकरण के तहत राज्य प्रशासनिक-सेवा के अधिकारी भारतीय

प्रशासनिक सेवा के गुलाम हुए। राज्य सरकार का अपना आदमी आ जाने पर केन्द्रीय सरकार को च्यवनप्राश प्राप्त हो गया ।

“एस.डी.ओ साहब ! आपको यहां से गरीबी हटवाने के लिए पिछले साल पांच लाख रूपये आबंटित किये थे वे कहा है ?” केन्द्र ने पूछा

”सर उससे यहां की सड़के पर खरन्जे और मिट्टी डलवा दी गई जिसका ठेका आपके हैदराबाद वाने ब्रदर-दन-लाॅ जी को दिया गया था।” प्रान्त ने गेंद केन्द्र के पाले में ही फेंक दी ।

”ओह ! हां याद आ गया । बहुत अच्छे ! उससे यहाॅ की गरीबी हट गई ना ?” यस सर ! मैंने आंकडे भी भिजवा दिये थे” उन्होने जवाब दिया । “पर यहां के आदमी के बच्चे चड्डी क्यों नही पहनते ? मालूम नही पड़ता कि जानवर चला आ रहा है या आदमी का बच्चा। यदि यह लड़का चड्डी पहने होता जो मेरा ड्राइवर गाड़ी धीमी कर देता।” उन्होने स्पष्टीकरण दिया ।

अब डिक्की में बैठा वाहन चालक सकपकाया । वह समझ गया कि यदि वह भागता है तो पकडा जाता है। और यदि वहीं रहता है तो पकड़ाया हुआ ही है। इतने में सीटी बजाती हुई वर्दीधारी कानून व्यवस्था वहां नामूदार हो गई पहले कानून ने व्यवस्था को सलाम ठोका । फिर आदिवासियों को डंडे ठोंके।

इस प्रशासनिक अधिकारी को मालूम था कि जनता से बचने के लिए जनता की आवाज में बोलना चाहिए । “दरोगा जी ! इस ड्राइवर को पकड़ लीजिए । कुछ लिहाज करने की जरूरत नहीं ।” साहब सरकी हुई भीड़ को देखकर बोला।

मगर सब इंस्पेक्टर को मालूम था कि लिहाज करने की जरूरत है । अतः वहीं ड्राइवर की गिरफ्तारी और जमानत पर छूटना दर्शा दिया गया ।

अब प्रथम -पुरूघ प्रथम महिला एवं उनके दोनो प्रथम-बच्चों को मक्खन पर चलाते हुए सादर विश्राम गृह लाया गया । इसी आनंद-क्रिया के दौरान जिला प्रमुख ने रहस्योघाटन किया कि अनुविभाग में कानून व्यवस्था की स्थिति ठीक नही है ।

अपराधबोध से ग्रस्त अनुविभागीय अधिकरी ने सादर पूछा “क्यो सर‘ ?

कानून व्यवस्था की अच्छी स्थिति का मतलब है हर आदमी का कानूनी शिकंजे में जकड़ा होना शंाति नही। हरेक के ऊपर धारा पाॅच सौ लगा दो उन्होने आदेश दिया।

और सुनों प्रशासन कभी गलती नही करता। इस दुर्घटना की जिम्मेदारी शिक्षा-विभाग और नसबंदी (स्वास्थ्य) विभाग पर है। शिक्षा विभाग ढंग से नागरिक-शास्त्र नही पढ़ा रहा अतः उनसे स्पष्टीकरण मांगा जाये । और नसबंदी में कोताही बरतने के लिए ची.एम.ओ और सीएमओ को निलंबित कर अन्यत्र संबंद्ध करवा दो।

प्रशासन के गुर सीखते हुए दोनो ने दैनंदिनी में नोट कर लिया। कुर्सी फिर बोली “प्रभारी मंत्री से एक चड्डी-वितरण का आयोजन स्थानीय क्लबो के माध्यम से करवा दो । मैं दूरदर्शन के लोगों को बुलवा दूंगा ।”

इतने में सुगंधित हवा का झोका अंदर आया । सरकारनी समझ गयी कि कोई महिला बाल-विकास अधिकारी आ रही है। उसके नथुने फडफडाने लगे । वह समझ गई कि उसके हसबेंड अब इंग्लैण्ड के संस्मरण के साथ शैली और कीट्स का ठेका लगाकर अंग्रेजी में नाचने वाले है। वह वापसी की जल्दी करने लगी ।

घोड़ो की नीलामी

हर दिशा के घोड़ो को इकट्ठा किया गया था । उनको हिदायत दी गई थी कि नीलामी स्थल पर वे लीद न करें। घोड़ो के गरदन पर उनके भागने की गति लिखी हुई थी । ताज्जुब तो यह था कि घोडोे को मालूम था कि उनकी नीलामी होने जा रही है ।

एक सीनियर घोड़े ने कहा “ऐसा तो कभी नहीं हुआ । अरब देशों में गुलामों की नीलामी होती थी। हम जिनके साथ चाय पीते थे क्या उनके गुलाम हो जायेंगें ?”

एक तेज दौड़ने वाला घोड़ा बोला “दुर्लभ कला कृतियों की भी नीलामी होती है। वह सीनियर घोड़ा बोला “कला कृतियां निर्जीव होती है और वे जितनी पुरानी होती है उनकी कीमत बढ़ती जाती है । हमारी तो घट रही है।”

तेज दौड़ने वाला बोला हम भी निर्जीवो की तरह बिक जायेंगें । पैसों के लिये और पुराने कपड़ों की कीमत नही होती तुम लोगो की तरह। जिन्होने उन्हें दौड़ना सिखाया था वे आदमी थे। उनमें से एक ने कहा नीलाम नहीं होते तो क्या भूखों मरते ?

उसने तर्क व तुर्क जवाब दिया कुछ मर गये है। उत्तर वालों के लिये देश खड़ा था। देश का सिर उत्तर और पैर समुद्र की तरफ थे। दक्षिण वालों का कहना था कि देश समुद्र की तरफ शीर्षासन करके सो रहा है । आखिर दिमाग वालों को ही नोबल इनाम मिलता है। देश के पैर उत्तर की तरफ हैं। पूरब वाले कहते है कि देश का सिर पूरब की तरफ है । पूरब वालों को दो दो नोबल इनाम मिले है। देश के पैर पश्चिम में और भुजाऐं उत्तर दक्षिण में है। पश्चिम वाले कहते है हम पैरो को यहां नही रहने देगें । सिर हमारा है । नीलामी लगाने वाले हालांकि हर जगह से इकट्ठे हुये थे।

ऊपर पैसा बोल रहा था । पैसा फिल्म उद्योग से आया था। उन्हें घुडदौड़ का बहुत शौक था वे अब दो पैरों के घोड़ों की बोली लगा रहे थे । पैसा उद्योगपतियों से आया था। वे घुड दौड का उद्योग लगाने चले थे पैसा कलाकारो से भी आया था । मगर सारे पैसो की खनक एक सी थी ।

कुछ सट्टे बाज भी बैठे थे। वे ही विश्व की गेंद को लुडका रहे थे । उनका मत था कि भारत के घोड़ो पर पैसा लगाना लगाना जोखिम का खेल है । वे कब खड़े होकर मैदान गन्दा कर दें कहा नहीं जा सकता ।

उनके जीतने पर पैसा लगाने से अच्छा है कि विदेशी घोड़ो के हारने पर पैसा लगाया जाये । वे विश्वासनीय है।

सीनियर घोड़े भारत को भारतीयों के हाथ ही बिकता हुआ देख रहे थे । उन्हें डर था कि पैसा जीत जाएगा और भारत हार जायेगा। अब ये घोड़े भारत के लिये नही दौड़ेगे बल्कि खुद के लिये दौड़ेगे । नम्बर दो का घोड़ा खुद दौउने के बजाय नम्बर एक के घोड़े की टांगे खीचेगा । यह सम्य आदमियों का खेल अब जंगली जानवरों का खेल हो जायेगा ।

ये लोग विकेट की बीच में दौड़ते दौड़ते रिंग में दौड़ने लगे । देखो इनके मंुह से फेन की जगह लार टपकने लगी है और पूंछ कुत्तो की तरह हिलने लगी है ।

एक बूढ़ा घोड़ा पैसे की थैली से मानिनी की तरह नाराज हो गया बोला "अभी तक तो तुम हमारी पीठ पर लदे रहते थे अब षोडषी को देख कर फिसल गये । हमें देख कर जो मंुह ख्ुाल जाता था अब हमें देख कर बन्द होने लगा और नवेलियों को देख कर खुलने लगा । अरे कुछ जो शरम करो । ऐसा न हो कि सिक्का पलट जाये, फिर हमारे साथ फोटो खिचवाने मत आना थैली को मालूम था कि सिक्के के दो पहलू होतें है अतः वह दोनो टीमो पर एक साथ दाव लगाती थी । दो में से तो जीतेंगी । वह हार की भरपाई कर देगा । अतः थैली बूढ़ी घोड़ी की लाल लगाम दिखाती हुई बोली अरे ये लाल लगाम तो हमारे तुम्हारे लिये ही रख छोड़ी है। उस नयी घोड़ी को तो फांसने के लिए नया जाल बिछाया है । गुस्सा छोड़ो चलो अब साथ साथ चाय जो जाये।

एक साठ साल का जवान घोड़ा बोला ठीक है नये घोड़ो पर दवा लगा रहे हो पर पुराने घोड़ो को मत भूल जाना । ऐसा न हो कि वे नये घोड़ो को रिंग में दौड़ना ही न सिखाये ।

एक कद्दावर बूढ़े घोड़े ने तो खुद का ही ही रिंग खोल लिया जिसमे देशी और विदेशी नये और पुराने घोडे एडमीशन लेने लगे है। उसकी रिंग में घुडदौड़ के पहले अल्प वासनाये नृत्य करती है जिससे कि घोडें वार्मअप हो जाये जैसे सांडो को लाल कपड़ा दिखाया जाता है। देश में घुड़दौड के अलावा सारे खेल धीरे धीरे बन्द होते जा रहे है। घोड़ो ने उनका चारा भी खा लिया है।

अमीर आदमी का स्वर्गारोहण

आज एक अमीर आदमी का स्वर्गारोहण हो गया । गरीब आदमी मरता है पर अमीर आदमी की आत्मा अमर होती है कल अखबारों में उसके मुस्कुराते हुये फोटो के साथ छपेगा।
वसांरी जीर्णानि यथा विहाय नवाणि गृहणाति नरोपराणि ।
तथा शरीरनि विहाय जीर्णाणि अन्याति संयाति नावाणि देही
तो उसका यह पुराना शरीर फट गया था अतः उसकी आत्मा नये कपड़े पहनने चले गयी । मगर गरीब आदमी की आत्मा लंगोटी वाला शरीर छोड़ कर लंगोटी वाला शरीर ही पहनती है। उस अमीर आदमी का देहावसान से गरीब आदमी दुखी हो गये । वे हमेशा अकारण दुखी ही रहते है। इस बार भी हिचक हिचक कर रोने लगे । देश का प्रधानमंत्री मर जाता है तब भी वे रोते है फिर तो यह शहर वह अमीर आदमी था जो उनसे बेरहमी से ब्याज वसूलता था ।

अमीर आदमियों को दुख मिश्रित प्रसन्नता हुई वे प्रसन्न ही रहते है कही कहीं तो उनकी शव यात्राओं में डिस्को डांस भी होते है। अमीर आदमियों को इस लिये भी प्रसन्न्ता हुई कि उसके छोड़े हुये ग्राहको के ऊपर अब वे भेडियों की तरह छीना झपटी कर सकेगें।

अन्दर अमीर आदमी का शव रखा हुआ था तेजी से उसके वारिस वकील और डाक्टर आ जा रहे थे। डाक्टर यह प्रमाण पत्र दे रहे थे कि वह मृत व्यक्ति होश में था और वसीयत लिखवा सकता था। वकील और वारिस तो अब समझ ही सकते है कि क्यों आ जा रहे थे उस मृत अमीर के अंगूठे पर अंगूठे लगवाये जा रहे थे । मगर वह कुछ नहीं कर पा रहा था। उस तीन दिन पुराने मृत के घावों से यू.डी. कोलोन की सुगन्ध आ रही थी जबकि गरीब आदमी की मिट्‌ठी 6 घ्ंाटे बाद ही बदबू मारने लगती है।

शव ले जाने के लिये शव वाहनो का इन्तजाम किया जाने लगा । आनन फालन छः शव वाहन इकट्‌टे हो गये। यदि शहर मे सौ शव वाहन भी होते तब भी उसे कम पडते ।

अन्दर से फूलो से लदा ढका एक देर ढेर निकाला गया । वातावरण में गुलाब की खुशबू फैल गई । फिर धीरे धीरे उसे फूलो से सजे हुसे खुले ट्रक की अत्यन्त धीरे से रखा गया। यदि गरीब की गठरी होती तो उसे दौड़ते हुए मरघट ले जाते । वह एक ही जगह अमीर आदमी
के लिए मुक्तिधाम और गरीब के लिए मरघट थी। अमीर आदमी सिर झुका कर मुस्कुरा कर चल रहे थे उस सम्वेदना और शालीनता दोनो कमरे में आये। वे गरीबो की तरह छाती पीट पीट कर रो रहे थे। अमीर की शव यात्रा में अमीर लोग कारो से उसे छोडने जाते है । ऊपर यमराज जी जो गिनते है कि कितनी कारे उसे छोड़ने आई थी उसी हिसाब से उन्हें वहां उसकी सुख सुविधाओं का ख्याल रखना पड़ता है ।

छोड़ने वाले लोग झका झक कुरता पायजामा या सूट और टाई में आये थे वैसे तो येे लोग हमेशा ही सूट और टाई में रहते है पर इस वार शवयात्रा का टेलीविजन से प्रसारण भी होंने वाला था अतः लिबास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा था ।उधर गरीब की अर्थी में एक तौलिया पहन कर ही भीड़ जाती है रामनाम सत कहते हुये मगर अमीर आदमी की शव यात्रा में धर्म निरपेक्ष अल्लाह तेरे नाम ईश्वर तेरे नाम का रिकार्ड बजता हुआ जाता है ।

लोगो ने मांग उठाई थी कि शवों केे हिसाब से शमशान घाट कम है आगे एक सजंे हुए ट्रक में मिट्टी के कलश में अग्नि लंे जायी जा रही थी । उस शमशाम घाट में शवों की लाईन लगी हुई थी । यह शहर के अविकसित होने की निशानी थी । कुछ अमीरो ने मांग उठाई कि शहर में चार या पाॅच शमशान घाट होने चाहिये और हर मरने वाले के श्मशाम घाट का चयन लाटरी से होना चाहिए ।

फिलहाल चंूकि अमीरों के पाय समय नही था अतः बलात एक गरीब की अर्थी मय शव के हटा दी गई एवं उस अमीर का शव लाइन में पहले लगा दिया गया ।

व्यवस्थाओं के होते होते सब समूहों में वह बहकर वार्तालाप करने लगे। एक ने कहा हिलेरी क्लिन्टन हमारे यहां की कई पतिव्रताओं से श्रेष्ठ है। दूसरे ने कहा हमारे यहां की पतिव्रताऐं सौत की अनुपस्थिति में ही पतिव्रताऐ रहती है जबकि हिलेरी क्लिन्टन को मालूम था कि बिल क्विंटन को कपड़ो का लेविन्सकी के कपडो से कुछ चक्कर है तब भी उसने बिल क्लिन्टन को नही छोड़ा ।

तीसरे ने कहा इसलिए हिलेरी किलन्टन एडस नियन्त्रण के लिये भारत को अरबों रूपए दे रही है। चैथे ने कहा इसीलिये आनन्द दायक क्रियाओं के समय वह कन्डोम का उपयोग करता है। अमीर आदमी के शव को इन बातों को श्मशान घाट में सुन कर झुरझुरी आ गई उसने सोचा कि शायद दूसरे समूह में वैराग्य की बातें ही रही होगी अतः आत्मा वहांॅ पहुंची।

वहां से वह दूसरे समूह के ऊपर मंडराने लगी। उस समूह में ऐश्वर्या राय, सलमान खान विवेक ओबेराय और अभिषेक बच्चन की बातें हो रही थी जिसका केन्द्र ऐश्वर्या राय ही थी ।
आत्मा ने हाथ जोड़ कर भगवान से प्रार्थना की हे भगवान मेरी मिट्टी को जल्दी से आग लाग दी जावे। भगवान ने उसकी सुन ली उसके वारिसों ने यथा समय चिता में आग लगा दी ।जैसे नयी फिल्म की टिकिट लेने भीड़ टूट पड़ती है उसी तरह अमीरों ने लकड़ी को टुकडे उस चिता पर डाले । एक संक्षिप्त शोक सभा का वहां आयोजन किया गया था।

प्रवाचक को अमीर आदमी के कोई सदगुण याद नहीं आये । उसनें मां सरस्वती से प्रार्थना की कि कोई तो सदगुण मृतक के याद आ जावे। मां सरस्वती ने उसकी सुन ली । कक्षा तीन में महात्मा गांधी का पाठ उसे याद आ गया। उसने बापू के सदगुण अमीर आदमी के साथ मिला दिये। फिर आया आधा मिनट तक दो मिनिट का मौन रखा गया । तत्पश्चात सभी बचे हुये अमीर आदमी अपनी अपनी कारों की तरफ भागे जैसे कि मृतक भी किया करता था।

शहर की बारात गांव में

उन्होंने निमंत्रण पत्र भेज कर परम्परा का निर्वाह किया था । उनकी अपेक्षा थी कि मैं भी न पहँच कर परम्परा का निर्वाह करूंगा । मगर मैं ने पहुंच कर परत्परा तोड़ दी । इससे वे असन्तुष्ट हो गये। मगर मुस्करा कर बोले "बाल बच्चे कैसे है"।

उनका ख्याल गलत था कि बाल बच्चों की याद में मैं वापिस चला जाऊंगा । मैनें जवाब दिया कि "घर में सब ठीक ठाक है"। वे मेरे बच्चों के ठीक ठीक होने पर मायूस हों गये बोले "शिमला में बर्फ गिर रही है।"

बारात "मोरडोंगरी" जा रही थी मगर वे बात शिमला की कर रहे थे । सुबह से अखबार में पड़ कर वे पचास बार शिमला को याद का चुके थे । मैनें कहा "आप चिन्ता न करें मैं पर्याप्त गरम कपड़े लाया हूँ । नाश्ते में उन्होंने लड्डू दिये जिनमें "बेडबू" आ रही थी । लड्डू सम्भवतः फलदान के समय के थे।

बस जो छप्पन यात्रियों के लिसे थी पूरी भर गई थी । उन्होने दस मिनिट के लिये बस छिन्दवाड़ा में कनिष्ठा एवं कर्ण जनेऊ क्रिया के लिये रोकी । सब यात्री भर भरा कर उतर गये। उनका ख्याल था कि वे बस पांच मिनट में चालू करवा देंगें तो न चढ़ पाने की वजह से आधे यात्री कम हो जायेंगे पर किसी समझदार अनुभवी ने उतर कर पीछे के पहिए में कील ठोक दी थी । पन्द्रह मिनट बाद जब बस चली जो उसमंे सत्तर बाराती हो गये। बारात मोर डोंगरी से तीन किलोमीटर पहले नाले के पास रूक गई । अब सबको अपना अपना सामान लाद कर तीन किलोमीटर दोपहर में पैदल चलना था। जो सबने सहर्ष किया। उनका कहना था कि तीन किलो मीटर की दूरी ज्यादा नहीं होती (क्योंकि उन्होने लडकी वालों से दो लाख रूपये रिश्वत (दहेज) में खाये थे) उन्हें वह पेड़ स्पस्ट दिख रहा था जो मोर डोंगरी की पहचान था।

एक किलोमीटर पहले ही लड़की वाले एक ढोल और फूल मालाएं लेकर खडे थे । हमें देखेते ही ढ़ोल वाले ने ढ़ोल और हमारे कान फोड़ना चालू कर दिये। हमारे गले में वह सूत्र जिसमें चार गेंदें के फूल थे माला कह कर डाले गये। अब बारात जनवासे की ओर प्रस्थान कर रही थी।

एक मन्दिर के चबूतरे पर हमें ढीला होने को कहा गया । अब तक शाम हो चुकी थी। हमसे कहा गया कि वह मन्दिर ही जनवासा (बारात ठहरने का स्थान) है हममें से कुछ बिदक गये मगर जंगल के रास्ते वापिस नहीं जा सकते थे । कुछ कालेज के लड़को (स्पष्टतः दूल्हे के मित्र) ने पूछा कि टायलेट कहां है ? तो समधी (एक सी बुद्धि) ने कहा कि यहां उस क्रिया को दिशा मैदान कहते है और उसके तीन फायदे है एक तो शुद्ध आक्सीजन मिलती है दूसरे "क्यू" में खड़ा नहीं होना पड़ता और तीसरे फसल को खाद निर्मूल्य प्राप्त हो जाती है।"

रात को लालटेनों के साये में बारात लगने लगी तो दूल्हा बोला कि वह बगैर घोड़ी के बारात नहीं चढेगा। लड़की का बाप चीखा "छुटके खेतों में जाकर एक घुड़िया तो पकड़ ला। फिर दूल्हे से बोला "कुंवर साब आधी दूरी साइकिल से तय कर लेते है घन्टी बजाते चलेंगें जो बाजे का साथ भी देगी।"

बारात में आगे गाना बज रहा था "ऊँची नीची है डगरिया जरा धीरे चलो री"। कुछ दूरी पर दूल्हे का बाप हाय हाय करने लगा । मालुम पड़ा उसका पैर मोच गया था । अब उसे साइकिल पर बिठा दिया गया दूल्हा पैदल हो गया। और कुछ दूरी तय करने के बाद अन्धेरे में एक जानवर लाया गया जो बाजे सुनकर रेंकने लगा । लड़की का बाप चीखा "असगुन होते होते बच गया । क्या कंुवर को गधे पर बिठाल रहा था" फिर चीखा मंझले तू जाकर दूसरा जानवर पकड़ कर ला" मंझला घोड़े से छोटा और गधे से बड़ा जानवर पकड़ लाया । उस पर दूल्हे को बिठाला गया । तब पहली बार हमने घोड़े पर गधा बैठा देखा । दूल्हें को पूरें गांव में घुमाया जा रहा था । गांव की गलियां क्या थी घरों के बीच में घाटियां थी जिनके बीच में कीचड़ नाम की नदी बह रही थी । कच्चे घरों के एक से पेटर्न थे आगे की दालान के पीछे का कमरा जानवरों और

बूढ़ों लोगो के लिये था कि यदि डाका भी डले तो बूढ़े लोगों और जानवरों पर पहले हमला हो। फिर आंगन जिसके चारो तरफ कच्ची मिट्टी के कमरे प्रति परिवार के लियें बने हुये थे । बड़ी दालान का मतलब बड़ा आदमी।

लड़की का बाप ध्यान से देखता जा रहा था हर मकान टीका कर रहा है या नहीं । हर घर से पचास पैसे से लेकर दस रूपये तक का टीका हो रहा था । जिस कीचड के बहाव का मैं जिक्र कर चुका हूॅ वह गांव के बाहर एक बड़े नालें में बदल गया था जों गांव को चारो
ओर से उसी तरह से घेरे था जैसे लंका को समुद्र ने घेर रखा था। गांव के प्रवेश पर समान रूप से चारो तरफ किरणों की तरह लोगों ने शौच कर रखा था जिससे कोई भी आंख बन्द कर नर्क की सहायता से बतला सकता था कि अब गांव आ गया

दरवाजे पर दूल्हें ने तलवार निकाल ली । हमें लगा कि अब पृथ्वीराज संयोगिता वाला युद्ध होगा पर नहीं हुआ। दूल्हें ने दीवार पर तलवार मार कर वापिस रख ली । हमें नाश्ते में पूड़ी आलू लंच में आलू पूड़ी और डिनर में भी पूड़ी आलू दिये गये । एक मिठाई भी थी जिसे खाने के लिये मुझमें और मक्खियों में जंग छिडी हुई थी मक्खियों ने उसे सब तरफ से ढ़का हुआ था । वे अनेक थी और मैं एक था। मैनें मिठाई उठाई फिर उसे तेजी से गोल गोल घुमाया जिससे मक्खियां पीछे रह गई और गपाक से मंुह के अन्दर डाल लिया ।

आखिरी पंगत में दूल्हें का बाप अड़ गया बोला “फ्रिज लेंगे।“ लड़की का बाप बोला ये फ्रिज क्या होता है ? जब उसे बतलाया गया कि फ्रिज से पानी ठण्डा करते है तो उसने चार पाॅच मिट्टी के मटके ला कर दिये । हठ करने का प्रश्न ही नही था चारो तरफ लठैत खडे थे जब कूलर मांगा गया तो उसने वीजने (हाथ का पंखा) ला दिये।

दूल्हे का बाप इस पर उखड गया बोला हम लड़की नहीं ले जायेंगे तब लड़की का बाप बोला ठीक है हम दूल्हें का रख लेते है जब उससे कहा गया कि यह तो उल्टा होगा तब उसने कहा यही सीधा है क्या भगवान शंकर पर्वतो के घर नहीं रहते और क्या भगवान विष्णु समुद्र में नही रहते ?

हाईकमान का गोपनीय पत्र लो कमान के नाम

प्रिय लो कमान,

मैं तुम्हारे क्षेत्र में चुनाव प्रचार करने आ रहा हूँ । मेरे स्वागत के लिए पार्टी के झण्डे बेनर और कार्यकर्ता प्रचुर मात्रा में रख लेना। क्योंकि इच्छावों फैलाव ही राजनीति है और संकोचन ही आध्यात्म। कुछ मरियल से गन्दे बच्चे यू डी कोलान में धुलवा कर आगे की पंक्ति में उनकी माओं के साथ रखवा लेना । जब मैं वहाॅ पहुॅचू तो मुझे रोक लिया जाना चाहिए । वहां सकेंत के लिए या तो कार्यकर्ताओं को झण्डे लेकर खडा कर देना या उनसे कह देना कि अतिरिक्त उत्साह के साथ नारे लगाते मिले ।

बीच बीच में एक दो लंगडे लूले लोगों को खड़ा कर देना । वे लोंग आगे की पंक्ति में होना चाहिये। यहां यह तर्क करनें की जरूरत नही है कि हट्टे-कट्टे लोगो की पीछे धका कर वे विकलांग आगे कैसे आ गये। हालांकि पूरी भीड़ और उन मरियल बच्चों और लूले लंगडों को तुम पैसे देकर इकट्ठे करोगे पर मेरे आने तक बच्चों को दूध और विकलांगो को खाना मत देना जिससे सही वेदना उनके चेहरों पर स्पष्ट झलके ।

इस बार सट्टे बाजों ने मुझे ही प्रधानमंत्री बनाने का वादा किया है । चैकना मत। बचपन में जब हम दारसिंह और किंगकांग की कुश्ती में किंगकांग को हारते देखते थे तो हमारी श्रद्धा दारासिंह पर बढ़ जाती थी। हम सोचते कि यदि दारासिंह सचमुच में ही किगकांग से ज्यादा ताकतवर है, जो हर जगह और हर फिल्म में वह किंगकांग को हरा देता है और किसी किसी फिल्म में उसे जान से भी मार देता है । बाद में समझ में आया कि किंगकांग को दारासिंह नही डायरेक्टर मारता है, जैसे कि शोले में गब्बर सिंह को ठाकुर ने नही चोपड़ा ने मारा था।

क्या तुम्हारा ख्याल है कि क्रिकेट में कोई टीम स्वयं के बल पर जीतती है ? नहीं । वह सट्टेबाजों की ताकत से जीतती है। दुनिया में सट्टेबाज सबसे ज्यादा ताकतवर है। वही किसी देश का राष्ट्रपति बनाते है और मिटाते है।

मैं चाहता हंॅू कि लोग मुझे किसी गरीब के घर खाना खाते हुए टी.व्ही. पर देखे । तुम्हारे कस्बे में गर्मी बहुत पड़ती है। अतः किसी झोपड़ी का सेट लगवा कर उसमें ए.सी. लगवा लेना उस ए.सी. को पत्तियों से छिपा देना। जिससें कैमरा उसे न पकड़ पाये । वहां किसी बड़ी होटल से पचास लोगो के लिये चिकन बिरयानी और बटर नान मंगवा कर पत्तलों में परसवा देना। मीडिया में कोई ये प्रश्न नही उठायेगा कि एक गरीब आदमी के घर एक दम पचास लोगो का खाना कहां से आया ?

ये झोपड़ियां ये मरियल नाक बहाते बच्चे, ये लंगडे लूले लोग मासिक वेतन पर रख लो ये राजनीतिक पार्टियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और धार्मिक संस्थाओं के लिए शो केश में रखे हुए समान है जो ग्राहको को फंसाते है। स्थाई वेतनभोगी विकलांगो को हम रथ यात्रा या रोड शो के साथ ही ले जा सकते है और रेलियों में खड़ा कर सकते है उन्हें अभिनय और डायलाग सिखाये जा सकते है।

तुम जन की चिन्ता मत करना। सूटकेसो का आदान-प्रदान हम हवाई पट्टी पर ही कर लेंगें। स्लेटी रंग के सफारी में मेरे दो आदमी सूटकेस लिये हवाई जहाज से उतरेंगें और तुम्हारे   दो आदमी उसी रंग के कपड़ों में सूटकेस लिये हुये चढ़ेगें।

आजकल समाचार तक पत्रकार नही जाते है समाचारों हो ही पत्रकार तक पहुंचना पड़ता है। विभिन्न चैनलों के कैमरामेनो और पत्रकारों को मैं ही पूरी रथयात्रा और रोड शो के दौरान साथ में लेकर चलता हंॅू। आजकल व्यक्ति का नही, उसकी छाया का महत्व है। मुझे मालूम है कि यदि तुम मुझसे बचे रहे तो तुम्ही मुझे नेस्तनाबूत कराागे । राजनीति में ये चलता ही रहता है।

मंहगाई रोंकनें के सरकारी तरीके

मंहगाई पैदा हुई है तो बढ़ना भी चाहिए। वह दिन दूनी और रात चैगुनी बढ़ती भी है प्रसन्नता की बात यह है कि अब जनता की सामूहिक चेतना नष्ट प्रायः हो गई है। जो गेहूॅ आजादी के तत्काल बाद 75 रू. क्विंटल था अब पन्द्रह सौ रू. क्विंटल हो गया है हालांकि जनसंख्या मात्र चार गुना बढ़ी है। उन्हें नये "माल्थस" खोजने होंगें जो इस गैर समानुपातिक मंहगाई का स्पष्टीकरण खोज सके और वे खोज भी लेंगें।

मैं बहुत संवेदनशील हूॅ इसलिये लोग मुझे पागल कहते है "क" से आरम्भ होने वाले टीवी धारावाहिक इसलिये नहीं देखता कि रोने न लगूॅ। इस साल तो मंहगाई रूपी बम का विस्फोट ही हो गया इस विस्फोट से मेरा तो चेहरा, हाथ, पैर, पेट सब ही झुलस गये मैं रोनी सुरत तार तार कपड़े और भूखा पेट लेकर जब मंत्रीजी के बंगले पर पहुंचा तो मंत्री जी पी.ए से बोले लो आ ही गया ये भूखा रूदाला। मरता ही नहीं है गजब की जीवन शक्ति है इस आम आदमी में। खैर है खुदा का कि अब ये अकेला अकेला ही आता है। पहले तो पूरा भिखारी समाज ही आ जाता था । अब व्यंग्यकारो ने भी इसके बारे में लिखना बंद कर दिया है।

प्रकट में बोले "क्यों मतदाता सब खैरियत तो है ?" मैं रोते रोते बोला खैरियत तो चिथडे चिथड़े हो गई है साहब और आप कुछ करते ही नही। हम मर जायेंगे तो आपको वोट कौन देगा ?

"दूसरे पैदा हो जायेंगे तुम तो अपनी कहो" वे बोले, मैं बोला "आपने कहा था कि हम आपकी फोटो घर पे टागेंगे तो सारी अलाएं बलाएं दूर हो जायेगी । हमें तो लगता है कि आप की फोटो की पूजा करने से ही सारी अलाएं बलाएं बस्ती में आ गई है। आप कुछ करते क्यों नही ? "तुम कुछ मत करना हमी सब कुछ करें, हमने टैक्स तो लगा दिये, वेट भी लागू कर दया और क्या करें" मंत्रीजी बोले, "आपने तो कहा था कि वेट लगाने से मंहगाई नही बढ़ेगी समृद्धि बढ़ेगी मगर यहां तो मंहगाई हिमालय की तरह बढ़ गई।" हम बोले (अब तक मैं हम हो गया था)

"समृद्धि बढ़ेगी ये तो हमने कहा था मगर तुम्हारी बढ़ेगी ये कब कहा था ? बढ़ेगी तुम्हारी मंहगाई हमारी समृद्धि बढ़ेगी तभी बैलेन्स रहेगा हिम्मत है तो तुम मंहगाई रोक कर रखो हम समृद्धि रोक कर रखेंगें" वे बोले। "अब तो आपको ही कुछ करना पडेगा", हम घिघियाने पर उतर आये। "ठीक है हम मानव श्रृंखला आयोजित करते है हर अंर्तराष्ट्रीय समस्या पर हम यही करते है। "कुछ ठोस करे, मानव श्रृंखलाएं पिलपिली होती है" हम बोले चलो हम मैराथन दौड़ आयोजित करते है जिसमें किसी विदेशी को पुरस्कृत कर देंगें।" वे बोले। "नहीं आपने तो मंहगाई के समाचार देना भी बंद करवा दिये साहित्य को अपने गुलाम बना दिया।" हमनें रोष से कहा। "हम आमृत्र्य सेन से मंहगाई एवं अमूल्य उपहार पर कार्यशाला में भाषण दिलवा देते है। वह हमें गाली देगा तुम खुश हो लेना फिर हम और आमृत्र्य सेन किसी पांच सितारा होटल में लंच ले लेंगें। आजकल तो मेघा पाटकर भी आदमी बचाओं की जगह पर नर्मदा बचाओं आन्दोलन कर रही है।" हमने कहा हमी यह आन्दोलन करवाते है ये आन्दोलन स्पान्सर्ड होते है मूर्ख वे बोले हमारा चेहरा लटक गया हम कुछ नही बोले।

"तब क्या साम्प्रदायिक दंगे करवा दें मंहगाई रोकने के लिए एहसान फरामोश ।" हमारे मंत्री झल्लाये हमें तो मंहगाई नही दिखती तुम्हें कहां से दिख जाती है। वे बोलते गये जाओं क्रिकेट देखो फैशन शो देखो कितना करें तुम्हारे मनोरंजन के लिए ? उसमें भी मन न भरे तो हमारा जन्मिदन मनाओ विरोधी पार्टी के लीडर का जन्मदिन मनाओं आधुनिक तरीके तो अपनाते नहीं। वही पुरानी खेती करते रहते हो या

मजदूरी करते रहते हो। फिर मंहगाई से डरते हो वह तो तुम्हे डराएगी ही।" इतना कहकर मंत्रीजी ने अर्दली को कुछ इशारा किया। हम उनके इशारें खूब समझते है इसलिए उनसे दूरी कुछ रखते है।

जनहित में

प्रजातंत्र में तंत्र का हर कार्य जनहित में होता है यानि तंत्र जो भी उचित अनुचित कानूनी गैर कानूनी साफ या गंदा काम करता है उससे जनहित होना चाहिए और यदि उन अनैतिक कार्यो से जनहित नही होता है तब भी जनहित होना चाहिए। तंत्र में तन अफसर का और त्र मंत्री का होता है यदि दोनो सर्किट हाउस में नाश्ता और डिनर करते है तो जनहित के लिए करते है और नित्य क्रिया करते है तो वह भी जनहित के लिये करते है। अधिकारी घपला करता है तो वह भी जनहित के लिये होता है विभागो और मंत्रियों में जो पत्राचार होता है वह भी कुछ इस प्रकार का होता है जनहित के लिए

मंत्रीः- घोटाले के लिए विदेशो से जनहित में तीन जहाज चारा मंगवाने की आवश्यकता है।
अधिकारी:- तीन जहाज के चारे में तीन करोड़ का घपला जनहित में करना आवश्यक है
मंत्री उस तीन करोड़ घपले में से दो करोड़ जनहित में मुझे दिये जायेंगें तभी मैं जनहित में स्वीकृति दूंगा।
अधिकारी:- सर, आप तीन करोड में से दो करोड़ मांग रहे है और मुझे मात्र एक करोड़ रू छोड रहे है यह जनहित में नही है मुझे भी कम से कम डेढ़ करोड़ जनहित में दिये जावे मगर वह तीनों के तीनों जहाज चारा भुगतान के बावजूद देश में नही आता है।

भुगतान से चंद दिनों जनों का हित हो जाता है और जानवरों के हित की शपथ तो मुख्यमंत्री ने नहीं ली होती है। एक मनोरंजक समाचार एक दैनिक में पढ़ने को मिला था कि एक मंत्री ने जनहित में एक थानेदार को थप्पड़ मारा था इस बयान पर शासन ने एक जाॅच आयोग बिठा दिया था। यह घटना मध्यप्रदेश की है एक प्रांत के मुख्यमंत्री ने जनहित में दंगे करवाये थे । जनहित में भाई भतीजावाद होता है । जनहित में भ्रष्टाचार होता है। जनहित में सैक्स स्कैण्डल होता है। जनहित में कितने कितने शुभ कार्य मजबूरी में नहीं करना पड़ते ? जनहित में बनाये कानून ताक में रखकर मुख्यमंत्री की लड़की का एडमीशन मेडिकल काॅलेज में हों जाता है और लड़का रंजीत टीम में रन न बनाकर भी चुन लिया जाता है बैंक एक अधिकारी से मैं पिछले दिनो मजबूरी में मिला । मेरी मजबूरी का हल उनके पास नही था । क्योंकि मैं ईमानदार आदमी था । पर ऋण लेकर पचा जाने वालो को वे ऋण देने के लिए ढूंढते फिरते थे । उन्होंने विन्रमता से बतलाया कि वे मलेशिया इण्डोनेशिया सिंगापुर एल.टी.सी के माध्यम से घूमकर आयें है मैं सामान्य पाठक को बतला दूॅ कि एल.टी.सी का मतलब होता है लीव ट्रेवल कनेसेशन यानि सरकार उन्हें हर दो साल में घूमने का पैसा देती है मैने पूछा कि जो वेतन उन्हें मिलता है उसी से वे क्यांें नहीं घूमते ? क्योंकि उन्हें वेतन भी कम नहीं मिलता । यदि हिसाब लगाया जाए कि हर तहसील के तीन चार केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी, हर जिले के पाॅच दस और हर महानगर के सौ दो सौ कर्मचारी इस तरह गरीब जनता से वसूला गया रूपया गुलछर्रे में उड़ाते है तो खरबो रूपया इस गरीब देश का मलेशिया में मालिश करने वाली महिलाओं के पास इनके माध्यम से चला जाता है। इसे सरकार बंद नही कर सकती और इन नौकरों में इतना नैतिक बल नहीं कि वह इसे स्वयं बंद करने की आवाज उठाये । क्योकि वह तो जनहित में हर वर्ष स्वयं का वेतन बढाने के लिए हड़ताल करते रहते है। सरकार जनहित में रसोई गैस की कीमत बढ़ा देती है गेहूॅ जनहित में सोने की कीमत कें बराबर हो गया है जनहित में कई लोग भूखे मर जाते है, बाढ़ से मर जाते है, भूकम्प से मर जाते है, महामारियों से मर जाते है। हमारे शहर का मशहूर स्मगलर चुनाव लड़ रहा था, मैने डरते डरते उससे पूछा “दादा आप चुनाव क्यों लड़ रहे है ? उन्होंने रटा रटाया जवाब दिया “हम जनहित में गरीबो” की सेवा के लिए चुनाव लड़ रहे है ? हर हत्यारा, गुण्डा स्मगलर, भ्रष्ट, बेईमान आदमी जनहित करना चाह रहा है समाज सुधारना चाह रहा है, समाज सेवा करना चाह रहा है पहले उन्होने ईमानदार और निर्दोष लोगो की हत्याएं करके समाज सुधरा अब बचने के लिए जनहित में विधायक या सांसद बनना चाह रहे हैं उन्हें जनहित में चुनाव जीतने से कौन रोक सकता है।

सिद्धान्तो की लडाई

लडाई सिद्धातों की थी । सिद्धांत न होते तो लड़ाई की कोई बात नही थी। चूंकि सिद्धांत थे इसलिये लड़ाई थी। लड़ाई के लिए दो सिद्वांत जरूरी थे, दोनो का एक ही सिद्धान्त होता तो लड़ाई का कोई मुद्दा ही नही था मगर सिद्धान्त तो एक ही था । एक ही सिद्धान्त पर दोनो लड़ रहे थे, बस उस एक सिद्धान्त के रंग दो थे । अतः वह सिद्वांतों की लड़ाई न होकर रंगो की लड़ाई थी।

खडे खडे लडने में दोनो थक गये थे अतः उन्हें बैठने के लिये कुर्सी चाहिए थी वह लड़ाई सिद्धान्तों से रंगो पर आई और रंगो से कुर्सियों पर आ गई। दरअसल वह लड़ाई कुर्सियों के लिए ही थी। मगर उसे सिद्धान्तों का रंग दे दिया था । कुर्सी चूंकि एक थी और बैठने वाले दो इसलिये लड़ाई हो रही थी। यदि दो कुर्सियां होती तो लड़ाई न होती । मगर उन्हें लड़ना था, अतः उन्होने एक कुर्सी हटा दी।

उन्हे मालूम थाकि वे कुर्सी के लिये लड़ रहे है । वे समझ रहे थे कि वे रंगो एवं रंगो के सिद्धान्तों के लिये लड़ रहे है। मगर वे कुर्सी के लिये ही लड़ रहे थे। वे उस कुर्सी के लिये ही लड़ रहे थे कुर्सी आरामदायक थी । उस पर कुशन लगा हुआ था। उस कुर्सी के सामने एक डायनिंग टेबिल थी। उस डायनिंग टेबिल पर लजीज खाना रखा हुआ था। मगर उसे कुर्सी पर बैठने वाला ही खा सकता था । इसलिये वह लड़ाई लजीज खाने के लिये थी कुर्सी के लिये नहीं थी उन्हें लग रहा था कि वे सिद्धान्तों के लिए लड़ रहे हैं पर वे लजीज खाने के लिए लड़ रहे थे।

सूखी रोटी तो सूखे खेत से भी मिल जाती थी। मगर उसे निकालने के लिए सूखी जमीन को हाड़तोड़ मेहनत से तोड़ना पड़ता जिसमें पसीना बहता। उन्हीे पसीने की बदबू से नफरत थी । इसलिये वे मेहनत करने के बजाय लड़ रहे थे। उनकी लड़ाई मेहनत से बचने की लड़ाई थी और वे समझ रहे थे कि वे सिद्धान्तों की लड़ाई लड रहे थे।

लड़ते-लड़ते वे गांवों से शहरों में आये और शहरो से विधानसभा पहुंच गये। वहां भी वे लजीज खाने के लिये ही लड़ रहे थे। मगर अखबारों के जरिये वे बतला रहे थे कि वे जनता के हकों के लिए लड़ रहे है वे जनता को खुद के लजीज खाने के लिए लडा रहे थे जनता समझ नहीं पा रही थी कि वह आपस में क्यों लड़ रही है। विधानसभा में लड़ने के लिए दो दल थे। सत्तादल और विरोधी दल। सत्ता दल का नेता मुचयमंत्री बनना चाह रहा था। विरोधी दल के नेता ने दहाड कर कहा कि नैतिकता के आधार पर मुख्यमंत्री को इस्तीफा देना चाहिए ।

मुख्यमंत्री ने आगे देखा पीछे देखा, ऊपर देखा नीचे देखा दायें देखा बायें देखा किसी तरफ देखा सब तरफ देखा उसे नैतिकता नहीं दिखी । अतः उसका आधार भी नही दिखा। चूंकि इस्तीफा नैतिकता के आधार पर मांगा गया था और उसके पास नैतिकता नही थी अतः उसने सप्रसन्न इस्तीफा नही दिया। मगर

मुख्यमंत्री चुप नही रहा। वह बोला अगर तुम्हारे पास ही नैतिकता या उसका आधार हो तो तुम्ही इस्तीफा दे दो ।

नैतिकता इनके पास भी नही थी मगर उसके आधार पर इस्तीफा मांग रहे थे। नैतिकता के कटोरे में कोई भी भीख नही डाल रहा था । मुख्यमंत्री ने पूछा अगर मैं इस्तीफा नहीं दे रहा हूॅ तो तुम आमरण अनशन क्यों नही करते।

पिछली बार इन्होने आमरण अनशन किया था। मगर क्रूर मुख्यमंत्री ने उन तक खाना न पहुंचाने के पुख्ता इन्तजाम करवा दिये थे । वे मरते मरते बाल बाल बचे। इन्हीे की पार्टी के लोगो ने मांगे पूरी न होने के बावजूद उन्हे फलों का रस पिला कर बचा लिया। आखिर अपने ही काम आते है । उसके बाद से आमरण अनशन के नाम से उनकी रूह कांप कर और अन्दर तक धसक जाती है।

उनका दल इस बार महामहिम के पास गया। महामहिम भी सत्ता दल ने बनाया था अतः सत्ता दल को सहारा देना महामहिम का दायित्व था। फिर भी वे महामहिम के पास गये। उन्होेने शिकायत की कि मुख्यमंत्री नैतिकता के आधार पर इस्तीफा नही दे रहा । महामहिम ने सुझाव दिया तो तुम किसी और आधार पर मांग लो । हमने मांगा था । हमने पूछा बाढ़ में सैकड़ो आदमी और मवेशी मर गये तो सरकार क्या कर रही है मुख्यमंत्री ने जवाब दिया कि सरकार उद्घाटन कर रही है।

“हमने पूछा कि भुखमरी से सैकडो लोग मरे गये तो सरकार क्या व्यवस्था कर रही है। मुख्यमंत्री ने जवाब दिया कि सरकार शिलान्यास कर रही है।

हमनें पूछा कि हजारो नौजवान बेरोजगार है सरकार उन्हें रोजगार देने के लिए क्या कर रही है ?” तो उन्होने जवाब दिया कि सरकार विधायको की खरीद फरोख्त कर रही है। हमने पूछा कि “बिजली के हालात कैसे सुधरेंगंे ?” तो उन्होने कहा कि उनके विदेशी दौरे से बिजली के हालाल सुधर जायेंगे।

“हमने पूछा कि प्रान्त की कानून व्यवस्था कैसे सुधरेगी ?“ उन्होने जवाब दिया कि टेक्स लगाने और आश्वासन देने से कानून एवं व्यवस्था के हालत सुधर जायेंगे। यह सब सुनकर महामहिम ने जवाब दिया ”हमारी सरकार इतना कुछ तो कर ही रही है आप लोग और क्या चाहते है ? आपकी सरकार होती तो वह भी यह करती।”

सास भी बहू क्यों थी ?

यदि उनका सरनेम “त्रिपाठी” होता तो वे “त्र” से आरम्भ होने वाले धारावाहिक बनाती यथा “त्रिशूल” सास के कमरे में । मगर चूंकि (1) उनका सरनेम कपूर है और (2) महिला ज्योतिषी ने उनसे कहा है, अतः उनके धारावाहिक “क” से आरम्भ होते है यथा क्योंकि सास भी कभी बहू थी, कुसुम, कहानी घर-घर की आदि।

और वे घर क्या है, मुगलकालीन महल है। भोपाल, नागपुर या इन्दौर में तो ऐसे घर एकाध ही होंगे। फिर वह कहानी, घर-घर की कैसे हुई ? यदि वे “कहानी झोपड़ी झोपड़ी” की भी बनाती तो उनकी झोपड़ी से हमारे घर शर्मिन्दा होते। उनके घर घर के पात्र तो महंगी साड़ियाॅं या सूट पहनते है । उन्हें हमारे घर की महिलाएं और हम सपने में भी छूने या देखने से डर जायें। उनके महलों और हमारे घर में एक ही साम्य है, वह यह कि नौकर दोनो जगह नही दिखते। भगवान जाने उनके घर में पार्वती भाभी पोंछा कब लगाती होगी।

बहरहाल, रात्रि के नौ बजे के बाद हमारे घर में महिला सशक्तिकरण प्रहर चालू हो जाता है नौ बजे तक यदि मैंने खाना खा लिया तो खा लिया, नहीं तो मेरी श्रीमती और मेरी दोनो बच्चियाॅं सोफें पर दचक कर खाने की प्लेट लगाकर और दो तीन रूमाल रखकर दूर दर्शन के सामने बैठ जाती है। उस समय उनसे एक गिलास पानी भी मिलना मुहाल हो जाता है। उस इडियट बाक्स से पार्वती भाभी, तुलसी, इत्यादि बार-बार आहर आकर उन बेचारियों को रूला जाती है। आंसू पोछने के लिए रूमालों की अदला बदली होने लगती है। हर सीरियल के लिए ताजा रूमाल निकाला जाता है।

मेरे घर के सदस्यों की मानसिक दशा पार्वती भाभी की मानसिक दशा पर निर्भर रहती है। तुलसी दुखी तो मेरी पत्नी महादुखी । मेरी शामत आ जाती है । मुझे वे दिन स्मरण कराये जाते है तब मैेने दो साल पहले होटल में खाना खिलाने का वादा किया था और मैं भूल गया था। वहां तुलसी पर अन्याय होता है यहां मुझे दूरदर्शन के सामने बिठाल कर उलाहना दी जाती है। अगर यह और वह डेटिंग करते है तो मैं भगवान से प्रार्थना करता हूॅं कि हे, भगवान, उसको वह धोखा न दे नहीं तो मेरी शामत आ जायेगी। यदि यह उसको धोखा देता है तो मुझे कसमें खाकर विश्वास दिलाना पड़ता है कि अगले ऐपीसोड में यह उससे माफी मांग लेना।

मुझे शक है कि आदित्य बिडला या अजीम प्रेमजी या टाटाज या मेडम गोदरेज या अम्बानीज इन धारावाहकों देखते होंगे । मुझे तो इन धारावाहकों कें धड़ ही दिखते है सिर पैर तो समझ में हीं नहीं आते। क्योंकि सास भी कभी बहू थी में मुगल खानदान की तरह एक साथ पांच पीढ़ियों की सास और बहू दिखाई जाती है। एक धारावाहिक में मुझे सन्जू दिखा तो मैने कहा अरे यह तो क्योंकि सास भी कभी बहू थी में अंश था, तो मेरी बड़ी बेटी ने ठंडे स्वर में कहा पापा सीरियल रोज और ध्यान से देखा करो। अंश वहां मर चुका है। उन पात्रों को देखकर मेरी हिम्मत यह बतलाने की नहीं होती कि अमुक पात्र व कुसुम में दाहिने तरफ लौंग पहिने थी और इस सीरिसल में बायीं तरफ। प्लास्टिक सरजरी में नथुनों के साथ-साथ लोंग का भी स्थानान्तरण हो जाता होगा।

और उस दिन तो हद की हो गई मेरा एक मित्र कहने लगा कि उसकी पत्नी कार खरीदने पर जोर दे रही है। मैने कहा कि खरीद लो। मित्र घबराया हुआ था । मैने पूछा इसमें घबराने की क्या बात है । तुम रिश्वत तो खाते ही हो कार आसानी से खरीद सकते हो । उसने कहा यह इतनी सरल बात नही है पत्नी देवरानी को कार से धक्का देकर ही घायल करना चाहती है जैसा कि अमुक सीरिसल में हुआ था।

ये सीरियल कब तक दिखेंगे कोई नही जानता। इसके निर्माता बड़जात्या या चैपडा जैसे गैरतमन्द नही है किसी पटकथा के कारण उनके रामायण या महाभारत जैसे सीरियल साल दो साल में सप्ताह की रेट से खत्म हो गये। ये सीरियल तो ब्रम्हा की इस दृष्टि से अगली सृष्टि में भी शायद चलते रहें।

हर महिला के विवाहेत्तर सम्बन्ध बतलाये जा रहे है। हर पात्र को षडयंत्रकारी और हत्यारा बतलाया जा रहा है। क्या भारतीय महिलायें और संस्कृति इतनी ही निकृष्ट है ? आश्चर्य है कि जरा जरा सी फालतू बातों पर बवाल मचां देने वाला कोई भी महिला संगठन इन विकृत प्रस्तुतियों पर आवाज नहीं उठाता।

लाइन आफ फायर

जनरल के नाम में ही रफ लगा है फिर उनसें साफ सुथरे व्यौहार की आशा करने वाला भोला राम ही हो सकता है। वैसे अब जनरल मुशर्रफ को अपने नाम के पहले जनरल के बजाय स्पेशल मुशर्रफ लिखना प्रारम्भ कर देना चाहिए।

बगैर बन्दूक के गोली छोडना उनकी आदत है। वे कभी दांये, कभी बांये, कभी नीचे तो कभी ऊपर उन्हें छोड़ते रहते है। उन्हें आगरा का ताजमहल देखना हो तो अटल जी से कहते है कि शिखर वार्ता रख ली जाये । अटल जी तो गांधीगिरी के लिये पलक पावडे बिछाये बैठे रहते है पर वह भाई है कि ताजमहल माइनस शिखर वार्ता करके उड़ जाता है । पर वाज है कि परवेज है। और अटल जी कटी पतंग के धागे की तरह नीचे गुड़ी मुड़ी हो कर लटक जाते है।

अटलजी को इस्लामाबाद से बड़ा प्रेम है। ब्रम्हचारी किससे प्रेम करेगा राजनीति से न। राजनीति उनके लिये नाराज नीति रही है। वे कोई राज नहीं रख नहीं रख पाये। राजों को नाराज करते रहे। कहने लगे हम बस से लाहोर जायेंगें । महाराज आपको कहा हवाई जहाजों की कमी थी पर नहीं गड्डो वाली सड़क पर खाये हिचकोले वाली बस में बैठकर लाहोर जाओगे तो वहां आपको कोई जार्ज बुश तोे स्वागत के लिये नहीं खड़े रहेंगें।

खैर, मूर्ख बनना हमारी आदत में शुमार हो गया है। हम लाख कहते रहें कि आतंकवाद वहां पनप रहा है पर वे कहेगें कि कश्मीर के कारण आतंकवाद पनप रहा है। कभी कश्मीर तो कभी बम्बई हो तो कभी लोकसभा कारण आतंकवाद पनपता है । उनके कारण नही ।

एक जनरल को आत्मकथा लिखने को विवश होना पड़ा। कहा होता तो हम बीस पच्चीस आत्मकथाकार वहां भिजवा देते। फिर वह आत्मकथा क्या है मिर्ची का बोरा है । "लाइन आफ फायर" तो चुराया हुआ नाम लगता है लगता है कोई और वहां झूठ बोलने के लिए तैयार नही ंथा जों मुर्शरफ को खुद बोलना पड़ा ।

इंग्लिश के रफ ने ऊर्दु के शरीफ (नवाज शरीफ) को पाकिस्तान से भगा दिया। एक और मोहतरिमा बेनजीर भुट्टो जान बचा कर भागी। मगर न बचा पाई जाल में पहुंचकर जन्नत पहुंच गई। अब अकेले पड़ गये जनरल मुर्शरफ अकेले ही तलवार भांज रहे है।

ऐसा क्या है "लादन आफ फायर" में जो भारत का मीडिया चिल्लपों मचा रहा है मुझे तो वह कोई व्यंग्य की कृति लगती है। उसमें लिख है कि मुशर्रफ ने दो तीन इश्क फरमाये निकाह कें पहले। फिर वे इश्क परवान नहीं चढ़े जनरल औरतो से हार गये उन्होने हार कुबूल भी कर ली।

वे कारगिल की बातों को गोल मोल करके बतलाते है। यदि कहीं कांटा चुभा है तो उसे और अन्दर करने की क्या तुक ? हार गये तो हार गये। पहले भी हारे हैं आगें भी हारते रहेगें एक आदत सी बन गई है तू और आदत है कि नहीं जाती। ऊपर वाले पेराग्राफ में भी तो जो हारे है।

फिर वे कहते है कि आगरा-शिखर वार्ता असफल होने में कोई तीसरा व्यक्ति भी जिम्मेदार था। अब यदि दो आदमी बातें करते है तो उनके बीच में तीसरा भगवान होता है । वे तीसरे आदमी को भगवान/भगवानी बना रहे है।

उनका कहना है कि पाकिस्तान ने भारत की आठ सौ वर्ग किलोमीटर जमीन दबा दी है । डाकू खुद कबूल कर रहा है कि उसने डाका डाला । उस पर तुर्रा यह कि सजा न दी जाये। जनसंख्या सीमित करने का एक तरीका तो हमने देखा कि थोक में नसबन्दी की जावेे पर नागरिको को आंतकवादी बना कर जनसंख्या सीमित की जावे पड़ोसी मुल्क से ही सीखा जा सकता है।

लाइन आफ फायर के निशाने पर कौन है। कोई जार्जबुश या ब्रिटेन का प्रधानमंत्री तो नहीं प्राकृतिक रूप से भारत के निवृतमान प्रधानमंत्री या उपप्रधानमंत्री होंगें सो वे है। मगर उन दोनों को या भारत को गाली देने से एक भी रोना झड़ने वाला नहीं भले ही आपके ऊपर नीचे दायें और बांये के सारे वाल झड़ जावे।

आपने कहा कि भारत ने आपकी परमाणु बम बनाने की क्षमता की चोरी की है। आपको ला इलाज गलमफहमी है। एक तो भारत में सब एक दूसरे को रिश्वत भले की देते रहे दूसरे मुल्क को यहां के अखबार रिश्वत नहीं देने देंगें। दूसरे हम किसी की अठन्नी चवन्नी नही उठाते उल्हास नगर में यहीं बनाते है फिर आपके एटम बम आपके लिये नही बनाये जा रहे अमेरिका के लिये बनाये जा रहे हैं एक को भी तो आप उपयोग करके देख ले सेठ नाराज हो जायेगा। ये जों आपने इजहारे उधार किया है सो सही है कि पाकिस्तान अमेंरिका के रहमो करम पर पल रहा है इससे रंगा खुश हुआ कि तर्ज पर सेठ खुश हुआ होगा।

हमारे भारत वर्ष में हर गुंडा एक आत्मकथा हर दिन लिखता है यह धमकी देकर कि उससे कई बड़े राजनीतिको के राज फाश हो जायेंगे पर किसी के नहीं होते। भारत का प्रजातन्त्र एक आदमी पर टिका नहीं रहता। बाद में वह आत्मकथा चूल्हे में ईंधन के काम में आती है।

बा-इज्तत बरी

प्रोफेसर क रिन ख बाजार में निरूददेश्य नहीं धूम रहे थे। वे गणित के प्रोफेसर थे और आइन्सटीन की किसी हलातीत प्रमेय का हल निकाल रहे थे। उनके कदम उनकी दिमागी हलचल बतला रहे थे। वे एक चैराहे पर जा रहे थे और आड़े टेड़े घूम कर उसी चैराहे पर आ रहे थे। उनके दिमाग के समीकरण उनके कदमों पर द्रव्यमान हो रहे थे ।

वहां के थाना प्रभारी और जेलर के बच्चे तीसरे स्टेडर्ड में पढ़ रहे थे और गणित में कमजोर थे। उन्होने सिपाही को हिदायत दे रखी थी कि गुण्डो के साथ प्रोफेसर क दिन ख पर भी नजर रखे। शासन ने धारा एक सौ इक्यावन में गुण्डे पकड़ने का लक्ष्य दे ही रखा है। डिग्री कालेज के उस प्रोफेसर को भी मौका लगने पर धर लिया जाये। एक बार चंगुल में आने पर पूरे सत्र भर उसकी जमानत नही होने देंगें मुफत में बच्चों को टयूशन मिल जायेगी।

प्रोफेसर चंूंकि उस दिन टेडे आड़े घूम रहे थे । अतः सिपाही ने उन्हें शराबी की धारा लगा कर कॉलर से पकड़ लिया। उन्हें देख कर थाना प्रभारी की बांछे खिल गई। उसने जेलर को फोन कर दिया कि प्रोफेसर क रिन ख नामक शराबी को जल में भेजा जा रहा है उसकी जमानत साल भर नही होने देंगें।

क रिन ख उस जेल में ठंूस दिये गये जिसकी सामथ्र्य तो दो सौ पचास कैदियों की थी पर उसमें एक हजार कैदी भर दिये गये थे । उस जेल की दीवारें निरपराध कैदियों के लिये अलंध्य पर जघन्य अपराधियों को लांघने में सुगम थी। जेल का दरवाजा बहुत मोटा और मजबूत था । उसमें से निरपराध अंदर जाते थे और अपराधी बनकर निकलते थे। जेल यूं तो बाहर से बहुत मजबूत थी पर अपराधियों ने जेल कर्मियों के सहयोग से उसकी नींव और फर्श में कई छेद कर रखे थे। उनमें से अपराधी मात्र हफता

वसूली के लिये जेल में आते थे। बाकी समय तीन से पांच सितारा होटल में रहते थे और जेल में उनकी हाजरी लगती रहती थी।

उस जेल में निरपराध कैदियों का बहुमत था। पर जनता की तरह वे बाहुबलियों द्वारा नियंत्रित थे। अधिकतर कैदियों के अपराध तय नहीं होने दिये जा रहे थे। ऐसे कैदियों को विचाराधीन कैदी कहते है। जिन्हें मात्र एक दिन की सजा होनी चाहिये थी वे शासन की कृपा से तेरह साल का कठोर कारावास भुगत रहे थे। धनवान कैदियों की हाजरी बजाने जेलकर्मी अस्पताल के डीलक्स वार्ड में जाते थे जहां परिचारिकायें उन स्वस्थ धनिको की परिचर्या कर रही थी। उन धनिकों की बीमारी चिकित्सकों को भी नही मालुम थी पर उनके रोज ई.सी.जी.
होते थे।

जेल मात्र गरीबों के लिए ही जेल थी। जितने कीडे मक्खी, खटमल, मच्छर, तिलचट्टे और मनुष्य, प्राणीशास्त्र में वर्णित थे वे सब वहां थे। प्रोफेसर हमेशा धनात्मक सोचते थे । उन्हे दुःख हुआ कि वे प्राणीशास्त्र के प्रोफेसर क्यों न हुये।

उन्हें खाने में रोटी के आकार का अधपका आटा और कंकडो की छोक लगी हुई सब्जी मिलती थी। पेट की भूख मिटाने के लिए निरपराध कैदियों को वह उदरस्थ करना पडती थी। अधिकतर कैदियों के पेट दुखते थे। मगर जेलर और धूंसा दादा की नजरों में वे स्वस्थ थे।

आदतन अपराधियों को बाहर से मुर्गे और पनीर की सब्जी नान के साथ मंगाकर व्हाया मजबूत दरवाजे उनके पेट में जा रही थी। वे उनके खाने के आर्डर मोंबाईल पर देते थे। जेल के कमरो में खडे होनें के लिये तो पर्याप्त जगह थी। पर सोने के लिए कम थी। बारी-बारी से कैदी सोते थे। ठण्ड के दिनों में कम्बल के नाम पर चार कैदियों के बीच में एक चिथड़ा मिलता था जिसे वे बारी-बारी से उपयोग करके सोते थे। उस कम्बल में चिथड़ा तत्व बहुतायत से था पर कम्बल तत्व अनुपस्थित था।

वह जेल निरपराधियों के लिए जेल और जघन्य अपराधियों के लिए पिकनिक की जगह थी। जघन्य अपराधियों को वहां से छूटने पर दुःख होता था। कुछ अपराधियों का पूरा परिवार जेल में था और घर उन्होंने किराये पर उठा रखे थे। जेल के पंचतत्वों पर जेलर का नही जघन्य अपराधियों का अधिकार था। खाने की राशनिंग वे करते थे। कैदियों की जगह वे तय करते थे यहां तक कि बूंद बूंद पानी भी वे ही देते थे। वे जघन्य अपराधी बाहर तो गैंगवार करते ही थे उस सुधारालय में भी हत्यायें और गेंगवार करते थे।

प्रोफेसर जेलर के बच्चों को तो पढ़ाते ही थे जेलरानी उनसे कभी कभी पोंछा भी लगवा लेती थी फिर अन्य अधिकारियों की पत्नीयों से मटककर कहती थी "हाय आज नौकरानी नही आई तो मुझे प्रोफेसर से पोंछा लगवाना पड़ा अब अपन तो साहब की वो होकर पोछा नही लगा सकते न।"

प्रोफेसर को सजा तो भुगतना ही पड़ रही थी कभी कभी घूंसा दादा के बदन की मालिश भी करना पडती थी। वे भगवान को धन्यवाद दे रहे थे कि प्रोफेसर है इसलिए जेलर उनसे मालिश नहीं करवा रहा था और अधेड़ है इसलिये जघन्य अपराधियों के यौन शोषण का शिकार नहीं बनना पड़ रहा था। कुछ अत्यंत बीमार कैदियों को जेलर ने जेलनुमा अस्पतालों के जनरल वार्ड में पटक दिया था। जेलर चाहता था कि वे अस्पताल में मरे और सिविल सर्जन चाहता था कि वे अस्पताल में न मरे। निरपराध कैदियों का जर्जर शरीर मनुष्यों की निकृष्टतम सोच का प्रतिनिधित्व कर रहा था।

कुछ सिरफिरे जेलरों के कारण श्री श्री योगेश्वरानंद के खोखले उपदेश कैदियों को सुनना पड़ते थे। जघन्य अपराधी उनके समकक्ष बैठ कर निरपराध कैदियों को भविष्य में अपराध न करने की शपथ दिलाते थे।

चूंकि प्रोफेसर मंत्री जी के लड़के को भी निःशुल्क पढ़ाते थे अतः उनकी लंबी अनुपस्थित पर उन्होनें उस थाना प्रभारी को प्रोफेसर को चैबीस घंटे के अंदर ढूॅढ़ने का आदेश दिया। बाहर मीडिया ने भी उनके गुमने पर उनकी पत्नी के साथ मिलकर कोहराम मचाया हुआ था।

अब थाना प्रभारी घबडाया उसने जेलर को हडकाया। दोनों ने आनन फानन उन्हें जेल की गाड़ी में ठूंसा और न्यायालय में उपस्थित करवा दिया। माननीय न्यायालय ने प्रोफेसर से उसका अपराध पूछा । वह प्रोफेसर को भी नहीं मालुम था। निरपराध मनुष्य होना ही उसका अपराध था। उन्होेने बतलाया कि वे तो आइंस्टीन की एक प्रमेय हल कर रहे थे।

जज ने चेतावनी दी कि आइंस्टीन की प्रमेय भारत की उबड़-खाबड़ सड़को पर हल न करके कागजों पर ही हल किया करें और चेतावनी देकर बाइज्जत बरी कर दिया। मगर जेलर ने उन्हें बाइज्जत तो क्या बेइज्तत भी बरी नहीं किया। संविधान की सीमा जेल की सीमा पर समाप्त हो जाती थी वहां से जेल के प्रकोष्ठों तक जेलर और घूंसा दादा का कानून चलता था। उन्हें बाइज्जत बरी करने में घूंसा दादा ने पाॅच हजार रूपये की मांग की।

प्रोफेसर को इज्जत तो विद्यार्थियों ने भी नहीं दी थी। अतः वे बाइज्जत ही बरी होना चाहते थे। उन्होने घंूसा दादा को पांच हजार रूपये दिये और उससे प्रमाण पत्र लिया कि घुसा दादा जेल से उन्हें बाइज्जत बरी करता है।

खैराती अस्पताल का मरीज

वे तीन डाॅक्टर थे ओर वह एक मरीज था । मरीज डाॅक्टरों को एक घन्टे से देख रहा था। पर वे मरीज को नहीं देख रहे थे। वे तीनो एक दूसरे को पवित्र ‘‘जोक्स’’ सुना कर ढहाके लगा रहे थे जिसमें मरीज का दर्द पिघल रहा था। जब मरीज के शरीर का दर्द सहन शीलता से अधिक बढ़ गया तो शब्दों के माध्यम से टपकने लगा ‘‘साहब मुझे देख लीजिये ।

‘‘ऐसे फोटो जेनिक भी नही हो। एक डाक्टर बोला’’

बाकी दो इस फिरके पर हंॅस दिये ‘‘तुमको गलत फहमी है कि सरकारी अस्पताल में इलाज होता है । हम लोगो की क्लिनिक में आ जाओं। देखो तुम्हारे अलावा शहर का कोई भी आदमी यहां दिखाने नहीं आया । सबको मालूम है कि सरकारी अस्पतालों में अपमान के सिवा कुछ नहीं मिलता’’ दूसरंे डाॅक्टर ने इमानदारी से सपाट बयानी की।

‘‘मैं गरीब आदमी हूॅ इसीलिये इस खैराती अस्पताल में आया हॅूॅ’’ उसने कहा

‘‘अच्छा हम क्या भिखारी से’’ गये बीते है जो यहां रोज आते है ? एक डाॅक्टर तैश में बोला

‘‘देख लो बिचारें को‘‘ दूसरे ने दरियादिली दिखायी

‘‘बोलो क्या तकलीफ है ? एक बोला

"जी मैं गिर गया था तो पैर में मोच आ गई" गरीब बोला
पहिले कभी गिरे थे ? डाॅक्टर ने पूछा
तुम्हारे परिवार में पहले कोई गिरा था ? दूसरे डाक्टर के फेमिली हिस्टी ली
भूख लगती है कि नही ? पहले डाक्टर ने पूछा
"जी भूख तो बहुत लगती है पर खाने नहीं मिलता है गरीब बोला "ये सारा जिस्म झुक कर भूख से दुहरा हुआ होगा मैं सिजदे में नही था आपको धोखा हुआ होगा।"
एक डाॅक्टर ने दुष्यन्त कुमार को चिपकाया "वाह क्या कविता है"। तीसरे ने तारीफ की ।
नहीं दुष्यप्त कुमार की गजल है "एक डाक्टर ने जवाब दिया
"वही न जिसके एपेन्डिक्स का आपरेशन मैने पिछले साल किया था" दूसरे ने कहा
"नही ये दुष्यन्त कुमार कई साल पहिले गुजर चुके है प्रसिद्ध शायर थे।
"अच्छा तो फिर ये कोई और होंगें" आप्रेशन करने वाले ने कहा ।
पहिले डाक्टर ने गरीब को दर्द की दवा लिख दी
"हुजूर एक्सरा करावा देते पडोसी कह रहा था" गरीब बोला
"अमीरो के चोचले है तुम्हे अच्छा होना है या एक्सरे करवाना है डाॅक्टर ने डांटा
इतने में क्षेत्र के विधायक आ गये तो तीनों डाॅक्टर विनम्रमा से पिल पिले हो गये । एक ने मरीज को घोड़ा बन कर कुर्सी की जगह पीठ पर विठाल लिया दूसरा किंचित अधिक ही शहद घोल कर बोला "मांगीलाल जी गोली तो आप ले ही लीजिये साथ में मुफ्त में एक्स-रे, अल्ट्रा सोनोग्राफी, एमआरआई, सीटी स्केन, और सीरम कोलीस्ट्राल करवा लीजिये" तीसरे ने उसे व्हील चेयर पर बिठाला और वार्ड की तरफ ले जाकर दूसरे दरवाजे से बाहर कर दिया।
फिर वे तीनो विधायक के श्री चरणों में साष्टांग हो गये। एक ने कूं कूं करके पूंछ हिलाई दूसरे ने हें हें करके हाथ जोडे और तीसरे ने पेट पर हाथ रखकर बंदर की तरह गुलाटी लगाई ।
फिर एक डाॅक्टर बोला "नहीं नहीं सर, इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम तो आप करवा ही लीजिए रिस्क नही लेना चाहिये। आपकी माता श्री एक महिने से बगैर किराया दिये प्रायवेट वार्ड में पड़ी है। हमें उनकी सेवा करके अपनी स्वर्गीय मां की याद आ गई।"

"वो जों सुन्दरकर नर्स हमारे क्षेत्र में है उसका ट्रान्सफर क्यों कर दिया गया जबकि उसको न मुझसे शिकायत थी न मुझको उससे । अगर विरोधी पार्टी का नेता कहे कि हमारा क्षेत्र बदल दिया जावे तो क्या बदल दिया जावेगा" विधायक जी ने बगैर इलेक्ट्रोफार्डियो ग्राम करवाये कहा
"इस तरह की टुच्ची हरकत नहीं होनी चाहिये। "दूसरे डाॅक्टर ने चाय का आर्डर देकर कहा
"चाय में शक्कर चार चम्मच होना चाहिये। मगर विरोधी पार्टी का नेता इतना टुच्चा भी नही है" विधायक जी बोले "हम तो अपने विभाग की बात कर रहे थे" डाॅक्टर समबेत बोले।
"वो तो आपको देखकर ही लगता है । हम आप तीनो का ट्रान्सफर करवा देंगें अगर जनता की सेवा नहीं की तो" विधायक जी ने धमकी दी ।
हम आपके पैर तो पड़ ही चुके है और जनता की सेवा हम आपके सामने कर चुके है। जनता ही आपको गाली देती है डाॅक्टर बोले
"और क्या क्या देती है जनता हमें" उन्होने फुसफुसा कर पूछा ।
"और कुछ नही कुछ नहीं सर" जनता के डर से तीनो डाॅक्टरो ने विधायक जी से कहा

विधायक जी उठते उठते बोले इस" जनता छाप भाइयो और बहनो को तो मैं देख लूूॅगा तुम लोगो को भी देख लूॅगा" । विधायक जी के जाने के बाद वह मरीज फिर लंगडाता हुआ आ गया। डाॅक्टर झल्ला का बोले "क्या चाहता है बे तू। धक्का देकर निकालूॅ या खुद जाता है।"

इतने में जिलाध्यक्ष आ गये डाॅक्टर लोग फिर पिचक गये मरीज से बोले "बैठिये आपको दुबारा भर्ती करके फिर बोतल लगवा देते है।" इतना कह कर एक डाॅक्टर नेे उसे फिर वार्ड की तरफ ले जाकर बाहर निकाल दिया।

डाॅक्टर खडे होकर जिलाध्यक्ष से बोले "सर आपका बी.पी. तो नार्मल है न" एक ने जिलाध्यक्ष को सादर कुर्सी पर बिठाला। दूसरे से उनको बी.पी. बाधा तीसरे बी.पी. लेने लगा ।

जिलाध्यक्ष बोले "आप लोग इतने अच्छे है फिर भी जनता शिकायत करती है कि आप लोग बद्तमीजी से पेश आते है। बाजार की दवाईयां लिखते है। आप ने मुझे तो कभी बाजर की दवाईयां नहीं लिखी । आप ये पाॅच रूपये रखिये मैं कभी मुफ्त में जाॅच नही करवाता और दवाईयां नहीं लेता।" मैं सर्किट हाउस में खाना खाता हूॅ तब भी तलसीलदार को पाॅच रूपये जरूर देकर आता हॅॅू खाने के खर्च के लिये।"

उनकी दरियादिली से डाॅक्टर लोग आकर्ण स्मित हो गये एवं कलेक्टर को उनकी गाड़ी तक छोड़ने गये। लौटकर आये तो वही मरीज फिर खड़ा था। डाॅक्टर झल्ला कर बोले "तू क्या चाहता है बे । साले क्या तेरी पिटाई लगाने पर मानेगा" । उन्हे कैमरे लिये एक चैथा स्तम्भ आता दिखा वे फिर वे विनम्र हो गये उन्हे डर था कि कहीं उपकी मुद्रा एवं आवाज कैमरे में कैद न कर ली जावे अतः बोले "हे जनता आपकी बीमारी का कारण डाॅक्टर नही है। शासन की अव्यवस्था आपकी बीमारी का कारण है। हम तो इलाज करते है। चलिये आपको फिर वार्ड में भरती करवों दें" इतना कह कर डाक्टर फिर बोले फिर उसको वार्ड में ले जाने के बहाने सड़क पर छोड़ आया।

इधर चैथे स्तम्भ ने कहा हमें सब मालूुम है यहां क्या घपले हो रहे है अच्छा ये दवाईयों का परचा लो और बाजार से लोकल परचेज करवा दो।" चैथे स्तम्भ जी ने चाय ली और दवाईयां लेकर चले गये" वह मरीज फिर लंगड़ाता हुआ आ गया डाॅक्टरों ने उससे कहा "अब कल आना। अस्पताल बन्द होने का समय हो गया है।"

साक्ष्य

महाराज दुष्यंत के युग में वही विधायिका थे, वही कार्यपालिका थे एवं वही न्यायपालिका थे। इस व्यवस्था के कई लाभ थे। अपराधो को अधिवक्ता नियुक्त नहीं करना पड़ता था।, प्रकरण पीड़ियों नहीं चलता था। व्यवस्था ही एक पीढ़ी की थी तो प्रकरण पीढ़ियों कैसे चलता? और मानवीय न्यायालय के पास ढेरो मुकदमें नहीं आते थे ।

महाराज एक दिन मुकदमें के इन्तजार में बैठे थे । अपराध पश्चात प्रतिहारी ने द्वारा उचित माध्यम सूचना दी कि महिला न्याय मांगने आई है। उस वक्त तक महाराज के पास पर्याप्त न्याय एकत्रित हो चुका था अतः वह बांटना ही चाह रहे थे। कोंई महिला न्याय मांगने आई है। यह सुनकर महाराज अति प्रसन्न हुये । उनके प्रगतिवादी कदमों का सुफल आने लगा था । जिस तरह आजकल अपराध सिद्ध न होने पर

बा-इज्जत बरी किया जाता है उसी तरह उस युग में हर चस्तु सादर प्रस्तुत भी की जाती थी। महाराज ने उस वस्तु को भी सादर प्रस्तुत किये जाने की आज्ञा दी।

एक अनिंद्य सुन्दरी एक सुन्दर बालक के साथ मलयानिल लपेटकर अन्दर आई। महाराज ने सोचा कि बालक को विदेशो में उच्च अध्ययन के लिए भेज कर सुन्दरी को रखा जा सकता है। वह सुन्दरी उस बालक के साथ भी स्चीकार किये जाने योग्य थी।

महाराज ने आपाद मस्तक शहद होकर उस सुन्दरी को शिकायत करने की अनुमति दी
उस सुन्दरी ने जवाब दिया। "महाराज यानि महाराज दुष्यन्त ने मुझसे गन्धर्व विवाह किया है। अतः मुझे स्वीकारे।" महाराज ने न्याय पताका लहराते हुए कहा "सुन्दरी, हमारे राज्य में हर आम व्यक्ति को न्याय पाने के अधिकार है। हम आपके कथन से सहमत है। पर क्या आपके पास आपके विवाह का किसी राजपत्रित अधिकारी से अभिप्रमाणित प्रमाण पत्र है।

"महाराज" सुन्दरी ने उत्तर दिया "गन्धर्व विवाह की कोई योजना नहीं बनाई जाती वह तो हो जाता है। अतः उसका कोई प्रमाण पत्र मेरे पास नहीं है ।" "अच्छा तो इस बालक का जन्म प्रमाण पत्र किसी नगरपालिका से ले आई है।" महाराज मैं जिस आश्रम में पली हूॅ वह नगरीय क्षेत्र मे नहीं आता।" उस समय झूठे प्रमाण पत्र नहीं बनते थे।

महाराज धर्म संकट में फंस गये। उस सुन्दरी के पास अनिन्ध रूप के अलावा कोई वैधानिक परिवत्र नही था। जो स्चीकार किया जा सकता। इतने में न्यायपीठ के एक सदस्य ने मूर्खता पूर्ण प्रश्न किया। यह बालक उस गन्धर्व विवाह की परिणति है या इस बालक के होते हुए भी आपने गन्धर्व विवाह किया था ?
"यह एक असम्बन्ध प्रश्न है पीठाधीश ने छड़का -
अधीनस्थ पद सकपका गया दूसरे पद ने प्रश्न किया - आपकी मां का क्या नाम है ?
"जी मेनका।" यह सुनकर दरबार में सनसनी समाहित हो गई जो चार पाॅच ज्ञात सुन्दरियांॅ राज्य में थी वे तो उसके सामने ठहरती ही न थी हो न हो वह मेनका की पुत्री ही होगी।
अब पिता के नाम का प्रश्न उपस्थित हुआ। वह कव्व के आश्रम में आई जरूर थी पर कव्व ने स्वयं दरबार में उपस्थित न होकर उनकी असम्बद्धता एवं दरबार के प्रति उनकी निष्ठा स्पष्ट कर दी थी।
महाराज, सह मुख्य न्यायाधीश सह मुख्य प्रशासक ने पूछा -
कृपया आपके पिताश्री के बारे में कुछ प्रकाश डालें।
वह सुन्दरी जो अब तक शकुन्तला के नाम से जानी जा चुकी थी, बोली -
"जी मुझे मेरे पालक श्री कव्व ने बतलाया था कि उनका नाम महर्षि विश्वामित्र है।" भय के कारण आधा दरबार इधर एवं आधा उधर सरक गया। अब किसमें इतना साहस था कि उस सुन्दरी को श्रीमती दुष्यन्त बनने से रोके।

महाराज दुष्यन्त ने अभी तक कोई ऐसा कार्य निष्पादित भी नही किया था जो उन्हें इतिहास में अमर कर दे। अतः उन्होने सोचा कि वह उस सुन्दरी को अपना कर अवश्य अमर हो सकते है। प्रकट ने उन्होने कहा "सुन्दरी हमने वाद एवं प्रतिवाद दोनों में मानसिक विचरण कर लिया पर निर्णय हम सुरक्षित रखते है। कुछ समय पश्चात् निर्णय देंगें। अभी आपके निकट कोई स्पष्ट साक्ष्य नही है। अतः न्यायपालिका यह उत्तरदायित्व भी लेती है कि आपको साक्ष्य निर्माण कर देवे। आप निश्चित होकर बालक को बड़ा कीजिये।"
और इतिहास साक्षी है कि इस प्रकरण में स्वयं न्यायपालिका ने साक्ष्य बना कर प्रस्तुत किया था।

मुकदमा कम्प्यूटर पर

भोपाल गैस त्रासदी की बरसी मंुह बाये मातम के रूप में खडी रहती है । शोक, संवेदनाएंॅ और श्रद्धांजलियां अपनी जगह है मगर पूरे घटनाक्रम पर प्रस्तुत है यह व्यंग्य ।

जय किशन जी का एक कारखाना चूहा मार दवा बनाने का भी था । उन्होने उसमें इतनी चूहा मार दवा इकट्ठी कर ली थी जितने कि पूरे देश में चूहे भी न थे। आखिरकार वही हो गया जो न होना था। दवा लीक कर गई।

सड़को पर जो चूहा मार दवा ने बहना चालू किया तो आसपास के क्षेत्र में मरे हुए चूहो का ढ़ेर लग गया। जो चूहे किसी तरह पिंजरों से बाहर निकल पाये वे सड़को पर कुचल दिये गये। सब कुछ चुपचाप दफन हो जाता मगर बुरा हो कुछ लोगों का जिन्होंने चूहों के मरने पर तूफान उठा दिया। वहां के राजा को अखबार वालों पर वाजिब की गुस्सा आया जिन्होंने चूहों की मौत पर छाती पीटना चालू कर दी फिर छाती पीटने का सिलसिला जो चला तो पत्रिकाओं, सभाओं, टेलीविजनों, और विदेशो तक में पसर गया।

अब चक्रवर्ती कुनमुनाया । उसने पहले तो राज को डांटा फिर कहा कि हमें यह देखना है कि चूहे को ठिकाने लगाने में जो खर्च हुआ है उसका दावा ठीक दो (वह ऐसे ही बोलता था) लोग अपनी छाती पीटना रोककर तुम्हारी पीठ ठोंकना चालू कर देंगें।

यह तय करने के पश्चात कि मुकदमा यहीं चलेगा मुकदमें का आधार बनाना चालू किया गया । राजा के राज में जब आदमियो का इलाज ही चूहों की तरह होता था तो चूहों का रिकार्ड कहां से रखा जाता ? अतः ऊपरी आमदनी पर चलने वाले सरकारी डाक्टरो ओर कानून दाओं को पन्ने भरने के लिए राजधानी में भर लिया गया।

मगर राजा की तरह ही उसके नौकर थे, उन्हें काम करने की आदत नहीं थी और वगैर रिश्वत लिये तो बिल्कुल नही। ड्राई ऐरिया उन्हें रास नही आया वे खबरचीयों के दफ्तर पहुंच गये। फिर हल्ला होने लगा। वहां जयकिान इस बात से बहुत खुश हुआ कि चूहों की मौत का मुकदमा उन्हीं के देश में चलेगा इसी खुशी में उसने कम्प्यूटर को इस केस के तमाम डाटा फीड किये तो परदे पर यह फिल्म चालू हो गई।
“तुम्हारा नाम ?“ वकील साहब ने पूछा, “जी, गरीब चंद” - गवाह ने हाथ जोड़कर जवाब दिया
“तुम्हें किसने बतलाया कि तुम्हारा नाम गरीब चंद है ?” वकील साहब ने आक्रमण किया ।
आब्जेक्शन योर आनर” - सरकारी वकील ने जागकर जम्हाई ली ।
“हर चूहे का नाम यही होता है उसे सब गरीब चंद ही कहते है।”
“बहुत खूब” कल सब कहेंगें की जय किशनजी का कारखाना राजधानी में था तो आप मान लेंगें बचाव पक्ष व्यंग से बोला। “तो क्या जयकिशन जी का कारखाना राजधानी में नहीं था ? सरकारी वकील ने अचकचा कर कहा।

यह तो आपको सिद्ध करना है। उसके बाद ही यह प्रश्न उठेगा कि अमुक तारीख को चूहा मार दवा लीक हुई थी या नहीं ? फिर हम साल पर तारीख पर और महीने पर बहस करेंगे उसके बाद भिन्न प्रकार की चूहामार दवाओं पर बहस करेंगें, अभी तो आपको यह सिद्ध करना है कि उक्त कारखाना क्या है, और कहाॅ है” ? बचाव पक्ष ने कारखाने के आगे खड़े होकर कहा साल भर बाद बहस आगे सरकी। “तो गरीब दास जी आप कहां रहते है ? बचाच पक्ष के सांड ने पूछा”।
“जी” जय किशनजी के कारखाने के पास “गरीब रिरआया।” मेरे मुवकक्ल के घर के अन्दर ? प्रशन उछाला । “जी नहीं,” उसकी छत पर, “जी नहीं,” तो फिर उसके पास कैसे हुये ? गरीब चुप। “तो योर आनर यह सिद्ध हुआ कि कथित घटना के दिन जयकिशन जी के पास कोई नही रहता था।” बचाव पक्ष ने एक निर्णय लिखवाया। इस तरह बहस दूसरे साल में घुस गई।
“हाॅ, तो गरीबलाल, “बचाव पक्ष घूमा” जी मेरा नाम गरीब चंद है।”
“कोई फर्क नही पड़ता । गरीब के आगे कुछ भी लगाओ वह गरीब ही रहता है।”
“है, है, है” गरीब चंद ने जवाब दिया ।
“तो गरीब लाल ली” आपने वहां की जमीन पर रहने के लिए पट्टा लिया था ?” जी नहीं।
इतने में आॅख पर पट्टी वाली कुर्सी, बोली “पट्टी से क्या होता है ?”
पट्टी के पीछे क्या है ?
“पट्टी नही पट्टा-योन आनर, जिसके गले में पट्टा नही होता उसका कर्तव्य है कि वह दुम दबा कर भागे । और जिसके गले में पट्टा होता है उसे गुर्राने का हक होता है। “ बचाव पक्ष ने आगे कहा । ” ”अब मैं पैसा, इकट्ठा करने वाले विभाग को तलब करना चाहूॅगा ।”
“इजाजत है आपको हर चीज की इजाजत है । ” हमारे यहां मरने वालों की सफाई का मौके नही दिया जाता है मारने वालों को हर मौके दिये जाते है।” यहां प्रकाशित कर कुर्सी फिर सो गई। ”तो पटवारी जी” आपने इन चूहों को अतिक्रण हटाने के नोटिस दिये थे । बचाव पक्ष ने सलाह दी। “हाॅ हूजूर इन नोटिसों पर इन चूहो के अंगूठे लगे है। ” रेवेन्यू डिमार्टमेंट जय किशन के पक्ष में बोला ।
“ क्यों बे चूहो, इन नोटिसों की प्राप्ति पर तो तुम्हारे पैर के अंगूठे लगे है।” बचाव पक्ष ने सीने पर प्रश्न अड़ा दिया। “जी पटवारी साहब, दुर्घटना के बाद आये और इन्होने कहा कि देखा इन कागजों पर हम तुम्हारी तरह से अंगूठे लगवा देते है तो तुम्हे पैसा मिलेगा । हमने कहां हमें पढ़ना नही आता हुजर । “चूहे समवेंत स्वर में बोले।

मूर्खो । तब पढ़ना नही आता तो हमारे बीच में रहने क्यों आये ? न्यायालय में समवेत स्वर में हंसी के साथ आवाज आई । इस तरह साल पीछे सरकते गये और मुकदमा आगे सरकता गया " तो घसीटे" घटना के दिन तुम क्या कर रहे थे ।

"जी उस समय दिन नही था रात थी" गरीब बोला

मतलब तुम सो रहे थे । तुम नहीं बतला सकते कि उस रात को क्या हुआ था ।

फटेहाल ने कहा जी गैस रिसी थी गरीब बोला। तुमने गैस देखी थी ? षडयंत्र में पूछा

" जी गैस दिखती नही हैै" तब तुम कैसे कह सकते हो कि वह चूहामार गैस थी। गोबर गैस नही थी ? अदृश्य प्रश्न गंूजा ।

चूहा चुप रहा ।

तुम्हारा मुहल्ला गन्दा रहता है ? " बचाव पक्ष ने कीले ठोकन चालू की । "जी" आस पास सूअर रहते है ? "जी" "कचरा रहता है ?" मक्खी मच्छर रहते है "जी"

"आसपास धूल उड़ती है।" "जी" "इन सब चीजो से तुम्हारा दम नहीं घुटता" "जी घुटता रहता है" अब बचाव पक्ष योर आनर के तरफ मुड़ा ।

"नोट किया जाये योन आनर कि इन चूहो का दम तो घुटता ही रहता है मगर चूुंकि दुर्घटना के दिन प्रशासन की गलती से नही घुटा अतः प्रशासन ने एक व्यापारी पर प्रतिशोध वश यह मुकदमा दायर कर दिया।"

"यौर ओनर, मौत चूहो की हुई है और मुआवजा राजा मांग रहा है यह प्राकृतिक न्याय के खिलाफ है अतः मेरे मुवक्किल को बाइज्ज्त बरी किया जावें और उन्हे राज्य के हर जिले में गैस चेम्बर बनाने की इजाजत दी जाचे । मैं इन मुकदमों की आखिरी कील आपके हाथों में सौप रहा हॅंू।"

इसके बाद जयकिशन जी को बाइज्जत बरी कर चूहों की सामूहिक कब्र पर आखिरी कील ठोक कर काजी ने अपने हाथ धो लिये। दस वर्ष बाद चूहामार कारखाना आसपास की झोपड़ियों को निगलकर दुगना मोटा हो गया और हजारों चूहो का श्राद्ध संतुष्टों और असंतुष्टो को साल दर साल मिलता रहा

कुछ देना न, लेना मगन रहना

जन न होते तो समस्याओं की कोई बात नही थी। जन थे इसीलिये कलेक्टरों को ऊपर से जन समस्या निवारण शिविर में लगाने के आदेश आये। फिर डिप्टी कलेक्टर ब्लाक के गांवो में जन समस्या निवारण शिविर लगाने लगे। अब पटवारियों को मोहल्ले और गांव स्तर पर जन समस्या निवारण शिविर लगाने के आदेश के आने का इन्तजार है। यानि जो समस्या पैदा करे वही निवारण करे। तुम्ही ने थोड़ा सा दर्द दिया है तुम्ही जोर से दवा देना। सारे कर्मचारियों को इन शिविरों में उपस्थित होने के कड़े आदेश दिये जाते है। इस तरह फाइल निबटाने के कार्य दिवस और कम हो गये।

इसी तरह के एक शिविर में सायं चार एक उद्घोषक घोषणा कर रहा था। "माननीय भाईयो और बहनों, अब हमारे ह्नदय सम्राट देश के गौरव माननीय जिलाध्यक्ष आने वाले है। वे स्वयं आपकी समस्यायें सुनेंगें और उनका यहीं निराकरण करेंगे।" यह शिविर एक तीतरपानी, कुकरपानी, भाजीपानी, कुम्पानी जैसे किसी गांव में लगा हुआ था। माननीय भाइयो और बहिनो में मात्र दस या बारह कालें कलूटे, कुपोषित बीड़ी धोंकते हुये हीनवस्त्र आदिवासी थे मगर उपस्थिति लभभग दो सौ के करीब थी। यानि शेष यथा प्रति शिविर सरकारी कर्मचारी ही थे।

युवा हृदय सम्राट, देश के गौरव कलेक्टर के आने तक उपसंचालक पंचायत, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, महिला बाल विकास अधिकारी, खाद्य अधिकारी, जिला शिक्षाधिकारी, तीन चार तरह के अधीक्षण यंत्री आदि अपने अपने विभाग में संचालित योजनाओं का वाचन तोतो की तरह कर चुके थे। इन योजनाओं का टेप भी लगाया जा सकता था। माइक जनरेटर से चल रहा था यानि की गांव में बिजली तारों से सफर करके बिजली अधिकारियों के तरह शहर से अभी तक गांव में नही आई थी।

कलेक्टर के आने पर अफरा तफरी मच गई । आदिवासी समझे कि उन्हें घेर कर लाठी चार्ज किया जाने वाला है अतः वे भागने का रास्ता ढ़ूढने लगे। उधर हर आधिकारी उनके स्वागत के लिये बिछ गया। जिसके ऊपर कलेक्टर के चरण रज नही पड़ी वह मायूस हो गया।

कलेक्टर के आगे एक व्ही.डी.ओ केमरा चह रहा था। कलेक्टर इस बात का विशेष ध्यान रख रहे थे कि वे केमरा कान्शियस न लगे। देश के गौरव ने विनम्रता पूर्वक उन लोगो के हाथ जोडे जिन्हे वे कई बार अपने चेम्बर से निकाल चुके थे। उपस्थित कायर लोग गदगद हो गये।
जिले के जिलाधीश महाराज फिर सिंहासन पर विराजमान हुये। उन्होने खडे हुये दरबारियों को देखा वे मानों पहले से मुस्कुरा रहे थे। कलेक्टर ने संतुष्ट होकर उन्हे बैठने का संकेत दिया। जिला दण्डाधिकारी ने फिर सारे अधिकारियों को देश भक्ति एवं कर्तव्य निष्ठा पर संक्षिप्त भाषण दिया जिससे सारे अधिकारियों के अपराध बोध से सिर झुक गये। पर क्षीण संख्या आदिवासियों को कुछ समझ में नही आया । जिस तरह एक पिल्ला हाथी को देखता है वे उसी तरह हाथ जोड कर जिलाध्यक्ष को देखने लगे। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने फिर एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से कहा कि जनसमस्यायें बतलाई जावे।

उपजिलाध्यक्ष ने खडे होकर कहा "माननीय जिलाध्यक्ष महोदय साथी अधिकारियों और प्यारे आदिवासी भाइयों और बहिनों हमने हमने हर झोपड़ी से समस्यायें निकालने का प्रयत्न किया है । पहिले तो समस्यायें हमे देख कर घर में घुस गई । कुछ जंगलो में भाग गई, कुछ को ही हम जबरदस्ती घसीट कर यहां ला पाये है। वे ही डरी हुई आपके सामने बैठी हैं । अब हम प्रति विभाग उन्हे प्रस्तुत करते है पहले स्वास्थ विभाग स्टेज के नीचे खड़ा हो जाये।

अन्दर से डरता हुआ सी.एम.एच.ओं. खड़ा हो गया। उप जिलाध्यक्ष ने बतलाया यहाॅ पिछले तीन वर्ष से टीकाकारण नही हुआ है । कुओं में ब्लीचिंग नही डाला जाता, उल्टी दस्त से नौ मौते हो चुकी है। कोई भी जननी सुरक्षा का प्रकरण नहीं बना है। जननी एक्सप्रेस का नामोनिशान नहीं है। कलेक्टर का थर्मामीटर और बेरोमीटर चढ़ गया। वे डांटते हुए बोले "डाक्टर साहब इन गरीब आदिवासियों को क्या स्वस्थ रहने का हक नहीं है । सी.एम.एच.ओ. ने हकलाते हुए जवाब दिया "सर, मैं कल ही सी.एम.एच.ओ. बना हूॅ । हमारे विभाग में हर छः माह में सी.एम.एच.ओ. बदल दिये जाते है फिलहाल मैं एम.पी.डब्ल्यू का ट्रान्सफर कर देता हूॅ। पिछले साल उल्टी दस्त से दस मौते हुई थी इस साल नौ ही हुई है अतः स्थिति "नियंत्रण में है।"

"वेरी गुड" कलेक्टर ने रिमार्क दिया" और जननी सुरक्षा योजना ? सर यहां से निकटतम प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सौ कि.मी. दूरी पर है। संस्था गत प्रसव, सुरक्षित प्रसव हेतु लागू किये गये है। यदि प्रसवरत महिला को किसी भी एक्सप्रेस से निकटस्थ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया जायेगा तो रास्ते में ही प्रसव हो जायेगा ?

" अब दूसरा विभाग" कलेक्टर ने कहा मुख्य चिकित्सा अधिकारी शेर से बचे खरगोश की तरह भागा । डिप्टी कलेक्टर ने कहा "जिला शिक्षाधिकारी के विरूद्ध शिकायत है कि स्कूल केवल परीक्षा के समय ही खुलता है। काल्पनिक लड़के रजिस्टर में ही भर्ती होते है । उसी में पास होते है और उसी में उन्हे शाला छोड़ने का प्रमाण पत्र मिल जाता है। मध्यान्ह भोजन खर्च तो होता है पर खाता कोई नहीं। शिक्षक तहसील

में परचूनी की दुकान चला रहे है। आदिवासियों को मालूम नहीं है कि कौन से हाथ का अंगूठा लगाया जाता है।"

"यह तो शर्म की बात है" जिलाध्यक्ष ने कहा और शिक्षको को निलंबित कर दिया। इससेे निलम्बित शिक्षकों ने प्रसन्न होकर भगवान को प्रसाद चढ़ाया । उनके ऊपर से रह रहंे बन्धन भी टूट गये। "पंचायत एवं समाज सेवा पर इल्जाम यह है कि यहां किसी भी फटेहाल के गरीबी रेखा के कार्ड नही नहीं बने। मतलब यह है कि सारे आदिवासी अमीर है मगर झोपड़ीयों में रहते है फटे कपडे पहनते है कोदो और महुआ खाते हैै। दारू घर पर बना कर पीते है और बीड़ी पीते है।" डिप्टी कलेक्टर बोलता गया "किसी की वृद्धावस्था पेंशन नहीं बनी एवं विकलांग प्रमाण पत्र नही बने। उप संचालक पंचायत बोला "सर मगर हमने अपने लक्ष्य पूरे कर लिये है और आंकडे भिजवा दिये है।"

"ठीक है आंकडे भिजवाते रहिये और यहां एक विशेष शिविर लगा कर बचे काम पूरे कर ले" कलेक्टर ने आदेश दिये हालांकि कलेक्टर को भी मालूम था कि यदि इस गांव में हर दिन भी जन समस्या निवारण शिविर लगाते रहें तब भी ये चतुर अधिकारी काम नहीं करने वाले।

"खाद्य विभाग ने यहां किसी के राशन कार्ड नहीं बनाये है। डिप्टी कलेक्टर ने पन्ना पलटा" यहां की राशन की दुकान यहां नहीं लगती । राशन लेने के लिए आदिवासियो को तीस किलोमीटर जाना पड़ता है वहां भी आदिवासियों के अलावा हरेक को राशन मिलता है। आदिवासियो के नाम पर राशन पूरा आ रहा है । मगर उन्हें नहीं मिल रहा है । वे कोदो खोद कर ही खा रहे है।"

"ठीक है जल्दी जल्दी अगला विभाग पूरा करो मुझे एक पार्टी में जाना है" कलेक्टर बोले बाकी सब इसी तरह की छोटी मोटी शिकायते है सर "जैसे आंगनवाडी कार्यकर्ता तीस मील दूर रहती है।" डिप्टी कलेक्टर ने 32 एक्स स्पीड पकड़ी "पटवारी नामान्तरण नहीं करता" रोजगार गारन्टी योजना लागू नहीं की गई सहकारी बैंक दो हजार रूपये देकर बीस हजार पर अंगूठा लगवा रहे है और बाद में कुर्की कर देते है। जिससे एकाध आदिवासी आत्महत्या भी कर लेता हैै तीन साल से गांव में बिजली नहीं आई जिससे पम्प नहीं चल रहे है।"

"ठीक है ठीक है कलेक्टर ने बीच में माइक लेकर कहा मुझे इस बात की खुशी है कि सारे विभाग यथा संभव काम कर रहे है जिससे गरीबी कम हुई ही है और "पर केपीटा इन्कम" बड़ी है। देश प्रगति कर रहा है। देश के इकानामिक फिगर बतलाते हैं। कि मुद्रा स्फीती कम हो रही है। यह सब हम लोगो के सामूहिक प्रयास का नतीजा है । अन्त में, इस सफल जन समस्या निवारण शिविर के लिये आप सब बधाई के पात्र है।"

अच्छी सूरत बुरी नजर

अच्छी सूरत और बुरी नजर के कारण ही यह सृष्टि आग की ओर लुढ़कधर्मा है । अच्छी सूरत पर जबतक तक बुरी नजर नहीं पड़ती अच्छी सूरत बुझी बुझी सी रहती है। मगर बुरी नजर के पड़ते ही उसकी बांछे जहां कहीं भी रहती हो खिल जाती है।

अच्छी सूरत को बुरी नजर से दूर रखने के लिये क्या क्या नहीं किया जाता ? गदबदे बच्चों को डिढोना लगा दिया जाता है जिससे वे और खूबसूरत लगने लगते है मगर बुरी नजर के गुच्छे के गुच्छे उन पर गिरने लगते है। सुन्दर भवनों पर जूते हालांकि बुरी नजरों को बरकानें के लिये लटकायें जाते है पर जूते के कारण तमाम नजरें बुरी बन कर उन पर गिरने लगती है। इसी तरह खाली मटके, गन्दे फटे कपडे, शैतान

का चित्रादि फुटपाथियों को उनकी औकात याद दिलाने के लिये की भव्य अट्टालिकाओं पर लटाकाये जाते है।

बुरी नजर की सबसे ज्यादा फिक्र ट्रक वालो की होती है। हरेक ट्रक के आगे जवान निकाले हुये चार संीेंग वाले शैतान का फोटो बना होता है । पीछे बुरी नजर वालों के लिए कुछ न कुछ दुआयें लिखी रहती है। जैसे एक ट्रक के पीछे लिखा था

बुरी नजर वाले तेरे बच्चे जिये
बड़े होकर तेरा खून पिये

ट्रको के पीछे बुरी नजर वाले तेरा मुंह काला तो लिखा ही होता है एक ट्रक के पीछे लिखा था

बुरी नजर वाले
नसबन्दी कर वाले

कुछ ट्रको के पीछे डायनोसोर की नाप के जूते लटके रहते है। यह खोज का विषय है कि बुरी नजर ट्रक के पिछवाडे ही क्यों लगती है । जिस वाहन के पीछे बुरी नजर वाले तेरा मंुह काला नही लिखा रहता उसके ट्रक होने की सम्भावना क्षीण ही रहती है। एक प्रसिद्ध शायर ने मुझसे काफी साल पहले क्या खूब कहा है कि

अच्छी सूरत भी क्या बुरी शै है
जिसने डाली बुरी नजर डाली

अच्छी सूरत पर अच्छी नजर नही डाली जाती। अगर अच्छी सूरत एक कुआं है तो बुरी नजर मटके उसमें लगातार डाले जा रहे है। बचपन में हम एक गाना सुना करते थे
“तेरी प्यारी प्यारी सूरत को किसी की नजर न लगे” गाने का मतलब कुछ और था और फिल्म बनाने वाले का मतलब कुछ ओर था । फिल्म बनाने वाले उसकी फिल्म में अच्छी सूरत इसीलिए डाली थी कि उस पर ज्यादा से ज्यादा बुरी नजरे पड़े और हाल चीखों से भर जाये यदि फिल्म में अच्छी सूरत नहीं डाली जाती तो बुरी नजरें टाकीज के पर्दे फाड़ देती।

अच्छी सूरत और बुरी नजर का समीकरण विचित्र होता है। बुरी सूरत पर अच्छी नजरे नहीं डाली जाती। यानि अगर अ त्र ब है तो ब त्र अ नहीं होगा ।

बुरी सूरत देख कर मरहूम दुष्यन्त कुमार भी गालियां देने लगे थे एक जगह उन्होने स्पष्ट रूप से कहा है

नजरो में आ रहे है नजारे बुरे बुरे
हांेठों में आ रही है जुवां और भी खराब ।

काजल का उपयोग जहां डिठोना के रूप में बुरी नजर से बचाने के लिये किया जाता है वहीं आंखो में काजल बुरी नजरो को आमंत्रित करने के लिए भी लगाया जाता है।

बुरी नजरो को आमंत्रित करना मजबूरी भी हो जाती है। लल्ली शादी योग्य हो गई है। अब बुरी-बुरी नजरो को आमंत्रित किया जा रहा है कि कोई युवक उस पर बुरी नजर डाले और उसे दहेज के समेत ले जावे। कई चुगद किस्म के छोकरे स्वयं को आइ.ए.एस पास अक्षय कुमार समझ कर आ रहे है और उस चन्द्रमुखी को अस्वीकृत कर रहे है। व मुश्किल तमाम हम अपनी जिगर की टुकड़ी को किसी गधे के गले में लटका पाते है।

लोकसभा और विधान सभायें अच्छी सूरते है उन पर नेताओं की बुरी नजरे लगी रहती है। जहां अच्डी सूरत एक संज्ञा और संज्ञा विशेषण है वही बुरी नजर एक क्रिया, क्रिया विशेषण, संज्ञा एवं संज्ञा

विशेषण है। अच्छी सूरत दर्शनीय है और देखी जाती है वहीं नजर डाली जाती है पर बुरी नजर नहीं डालना चाहिये। अच्छी सूरत एक अक्रियाशील वस्तु है पर शक्तिशाली कारक है। उसमें अच्छी नजर की बुरी नजर बनाने की ताकत होती है।

रक्षाबंधन एक ऐसा त्यौहार ही जिसमें बुरी नजरों को बांध दिया जाता है। वहीं होली पर बुरी नजरे निर्बाध होकर बहने लगती है। अन्त में हम भगवान से प्रार्थना करते है कि हम अच्छी या बुरी सूरत पर न जावे और अच्छी नजर ही रखें। आमीन !

विवाह में मुख्यमंत्री

आलोक मेरा भानजा है उसे दूर दर्शन पर दिखने का शौक है इसके लिये मुख्यमंत्री की दर्शनार्थी भीड़ में होना सबसे शार्टकट है वह एक बार मुख्यमंत्री की दर्शनार्थी भीड़ में खड़ा होकर उचक उचक कर उनकी जय-जयकार कर रहा था। मुख्यमंत्री व्यावसायिक मुस्कान के साथ अभिनन्दन प्रतिवेदन और थैलियां स्वीकार कर रहे थे । आलोक को लगा के मुख्यमंत्री की स्थाई अभिनन्दन समिति का यह सामान्य सदस्य बन चुका है तभी उसने तय कर लिया कि
वह उसकी आसन्न शादी में मुख्यमंत्री को जरूर बुलायेगा।

धार्मिक पुस्तको का अध्ययन करते करते मुझे प्रलय का भय हर पल लगा रहता है हरेक मत को नकारने की मेरी आदत पड़ चुकी है । मैने टोका "स्वयं की शादी जैसे सामान्य अवसर पर क्यों मुख्यमंत्री को परेशान कर रहे हो ? और क्या पता वे आयेंगे भी या नही ?

आलोक भड़क गया बोला "मामा आपको नाम तो शंका राम होना चाहिये। हर बात में आपत्ति प्रस्तुत कर देते हो। मुख्यमंत्री क्यों नहीं आयेंगे ? एक मंत्री की उपस्थिति के लिये "मिनिमम रिक्वायरमेंट" पांच सौ आदमियों की भीड, बाजे गाजे और माइक रहता है ये सब स्थितियां जुलूस और बारात में रहती है । देखना

बगैर हांका लगाकर लाई गई भीड़ के कारण मुख्यमंत्री जरूर आयेंगे। मैने नगर पालिका से मतदाता सूची देखकर निमंत्रण पत्र बांटे है।"

बारात वाले दिन सुबह से ही एस.पी.जी देखकर हम समझ गये कि मुख्यमंत्री आने वाले है। उन्होने विवाह स्थल को छावनी में बदल दिया। वे हरेक की तलाशी लेने लगें जो मेहमान आ गये थे उन्हे बाहर नहीं निकलने दिया जा रहा था क्या मालूम वे उपहार लाने के बजाय राकेट लान्चर पेक करवा लाये ? जो मेहमान आने वाले थे उन्हे आने नहीं दिया जा रहा था।

उधर पुलिस वाले हरेक को घूर रहे थे महिलाओं को ज्यादा ही घूर रहे थे । एक सब इंस्पेक्टर ने पूछा "वरमाला कब होगी" आलोक ने जवाब दिया "रात को दस बजे का मूहूर्त है"
"नहीं वरमाला दो घंटे पहिले आठ बजे होना चाहिए सी.एम. आठ बजे आ जायेंगे, "इन्सपेक्टर ने फरमान जारी किया। आलोक ने प्रतिवाद किया "यह तो वही मिसाल हुई कि पहले राम विवाह करवा दिया जाये और बाद में राम जी धनुष तोडे" इन्सपेक्टर ने घुडका "हम ऐसा भी करवा चुके है दशरथ को घनुष भंग के पहिले बुलवा लोगे तो पहिले विवाह ही होगा"

पूरे कार्यक्रमों पर शासकीस नियन्त्रण हो गया। बारात को लगभग खदेड़ते हुये निकाला गया पूरे चल समारोह में देश भक्ति के गीत प्रसारित करवाये जाने लगे । नौजवान और नवजवानियों के डान्स दो दो की लाइन लगा कर परेड में बदल दिये गये मालूम नहीं पड़ रहा था कि आलोक की बारात है या छब्बीस जनवरी की प्रभात फेरी।

जब बारात दुल्हन के स्थल पर पहुंची तो लड़की वाले बेहद खफा थे। कारण था कि सुरक्षा व्यवस्था के साथ साथ पुलिस के सचमुच के कुत्तों को डिनर करवाया जा रहा था तर्क था कि डिनर कही मानक स्तर सो कम तो नही है ?

मुख्यमंत्री के आने के समय काले झण्डे लिये हुये विरोधी पार्टी का एक जुलूस न जाने कहां से आ धमका। वे मुख्यमंत्री के मुर्दाबाद के नारे लगाकर उनका इस्तीफा गांग रहे थे । आलोक के होश उड़ गये। उसको डर लगने लगा कि कहीं उसकी शादी को असामाजिक कृत्य न करार दिया जाने लगे या कही लाॅ एण्ड आॅर्डर का बहाना कर पुलिस अश्रुगैस न छोड़ने लगे अब भानजे की समझ में आ गया कि मामा क्यों आपत्ति उठा रहा था।

वह हाथ जोड़ कर नीचे उतर आया। उसने दूल्हे की चमचमाती पगड़ी उनके गन्दे जूतो पर रख दी। वे लोग उधम न मचाने के लिए पचास हजार रूपयों की रिश्वत मांगने लगे। सन्जू ने उन्हे इशारा किया कि वे उनके पीने का इन्तजाम अन्दर पण्डाल में किया गया है बशर्ते वे हरी पट्टी लगाकर मुख्यमंत्रीजी की जै बोलने लगे । वह भीड़ मुफ्त की दारू और लजीज खाने के लालच में ईमान बदलने सहर्ष तैयार हो गई।

मुख्यमंत्री के पहिले उनका काफिला मोटर गाड़ियों में जयजयकार करता हुआ आया । जय जयकार करने वालों को मंत्री आजकल साथ में ही लेकर आते है क्या मालूम कार्यक्रम स्थल पर जय जय कार करने वाले हो या नहीं। वहीं उनको पाॅच साल पुराने प्रतिवेदन सौपते है जिन पर कार्यवाही करने की जरूरत नहीं होती उनके साथ ही उनके केमरा मेन रहते है।

मगर इस शादी में एक असन्तुष्ट मैदानी कार्यकर्ता भी धोखे से आ गया था (मैदानी कार्यकर्ता हमेशा अस्न्तुष्ट रहते है) उसने मुख्य मंत्री को एक मील लम्बा और कई साल चैड़ा प्रतिवेदन थमा दिया। वह मुख्यमंत्री से फेवीकाल के जोड़ की तरह चिपक गया। मुख्यमंत्री के साथ साथ वह स्टेज तक आ गया। वह किसी अन्य व्यक्ति को मुख्य मंत्री तक पहुंचने ही नहीं दे रहा था ।

आलोक ने चरण छूकर मुख्यमंत्री को बुके दिया तो मुख्यमंत्री ने बुके देकर वर वधु को आर्शीवाद दिया। केवल वही विनिमय निर्विध्न सम्पन्न हुआ। उस प्रतिवेदन प्रस्तुतक मैदानी कार्यकर्ता से घबराकर मुख्य मंत्री भागने लगे तो भीड़ भी उनके साथ भाग गई, और हम खडे खडे गुवार देखते रहे।

बस्ती का अन्तराष्ट्रीय साहित्यकार

पत्नी वीरता पूर्वक साहित्य का सामना करती है। इस वाक्य के कई अर्थ हो सकते है। हो क्या सकते है होते है। एक तो यह कि साहित्य पत्नी का सामना नहीं कर सकता। दूसरा यह कि दोनो आमने सामने खडे होकर एक दूसरे को घूरते है। तीसरा यह कि साहित्य पत्नी को पीठ दिखा सकता है पर पत्नी साहित्य को पीठ नहीं दिखा सकती। चैथा यह कि पत्नी साहित्य से नहीं डरती पर साहित्य पत्नी से डरता है । पांचवां यह कि पत्नी वीरांगना है साहित्य नहीं। छठवा यह है कि पति के सामने पत्नी और साहित्य एक साथ खड़े हो तो पति साहित्य को बाद में मिलने को कहेगा।

मरहूम दुष्यन्त कुमार ने इसीलिये लिखा है कि “तू किसी ट्रेन सी गुजरती है मैं किसी पुल सा थरथराता हूॅ” पुल कमजोर है और दुबला पतला है इसीलिसे थरथरा रहा है और तू मोटी तगडी है और सीेने पर से गुजरजी है।

खैर, जिस विषय पर लिखना ही न हो उस पर प्रस्तावना क्या लिखना । मैं तो एक डाक घर में बैठ कर मायके गई हुई पत्नी को उसकी अनुपस्थिति के कारण उत्पन्न हुई अतिशय कुशलता के बारे में लिख रहा था कि मेरे गांव के प्रसिद्ध साहित्यकार का पैर टेबिल पर जम गया वे गरजे। “अच्छा तो साक्षरता अभियान ने पशुओं को भी आदिमानव बना दिया । क्या कुछ लिखा जा रहा है साहित्य में आज कल तुम्हारे मुहल्लों में” ?

मैं श्रंृगार के आसमान से गिरकर वीभत्स के भू खजूर पर अटक गया। मैेने तार सप्तक में जवाब दिया। “मैं अपने व्यक्ति को एक व्यक्तिगत पत्र लिख रहा हंॅू।” उन्होेंने दहाड़ सप्तक में ज्ञान वगराया “साहित्यकार की कोई भी कृति व्यक्तिगत नही होती है । तुम्हे आज समाज को स्पष्ट बताना होगा कि

तुम दक्षिण पंथी प्रगतिवादी हो या पुरातन वादी। आखिर तुम हो क्या तुम्हारा ख्ुाला एजेण्डा क्या है और छिपा एजेण्डा क्या है ?

मैं व्यक्ति के इतने सारे वर्गीकरण नहीं जानता था मैने स्पष्ट जवाब दिया

"मैं न कबीर पंथी हूँ और न तुलसी पंथी। मैं तो एक साधरण सा पत्नी भक्त पति हूँ।"
उनकी आंखो में हिसंक चमक आ गई जैसे वे कुछ करना चाह रहे हो। उन्होने ताली बजाई तो चार पांच गुण्डे हाथ में फरसा और हांकी लिए प्रकट हो गये उस सुप्रसिद्ध साहित्यकार ने उन गुण्डो को सम्बोधित करते हुए कहा

"बुद्धिजीवी साहित्यकारों, यह आदमी अतीत की सडांध मारता हुआ बुर्जुआ है । हमारा नैतिक दायित्व है कि हम इसे प्रगतिशील वामपन्थी बनाये। तुम सब इस पर पिल पड़ों और मैं इसे सध रचित प्रगतिवादी अलख युक्त, अतुकान्त, अवद्ध रचना सुनाता हूँ।"

मुझे यह तय करना मुश्किल हो गया कि मुझे पिटना ज्यादा तकलीफ देगा या उस प्रसिद्ध साहित्यकार की कविता । मै एक ही विद्या के दोनो छोरो से हाथ जोड़ कर बोला। "मुझे बख्शा जाये मैं प्रगतिवादी बनने के लिए तैयार हूँ प्रसिद्ध साहित्यकार नें प्रगतिशील वामपंथी बनने पर मुये बधाई देकर बख्श दिया और बोला

"तुम पहले साहित्यकार हो जो बगैर पिटे की प्रगतिशील बन गये हो। अब चूंकि तुम मुझसे दीक्षित हो गये हो अतः तुम्हे कबीरदास जी का वो कहना मानना चाहिये कि कहे बीर काली कमरी पर चड़े ने दूजो रंग ? अगर तुम पर दूजा रंग चढ़ा तो साहित्य में खून की नदियाॅ बह जायेगी। "उन्होने सूरदास को कबीर दास जीं में घोल दिया मगर उनका कोई भी कुछ नहीं बिगाड सकता था वे ही सब का सब कुछ बिगाड़ सकते थे। मैं समझ गया कि मुझे धमकाया जा रहा है। ये जुलाहा काली कम्बले ही बनाता है धवल नही। मैने चुल्लु बना कर उनसे और जल टपकाने की प्रार्थना की तो उन्होने थंूका।

"अब तुम्हारा दायित्व है कि गोष्ठियाॅ करवाओं और उनमें मुझे सभापति बनाओ। इन गोष्ठियों में कविता सुनाने के सर्वाधिकार सभापति के लिये ही सुरक्षित रहेंगे। मैं जो साहित्य उगलूॅगा उसे तुम सस्मित झेलो और तालियाॅ बजाओं मेरी विल्पववादी रचनाओं पर साहित्यिक टिप्पणी लिखों। जो मेरा विरोध करें उस पर चढ़ बैठो और किल हिम अन टू डेथ।
मैं समझ गया कि मुझसे क्या नहीं करवाया जायेगा वे बोलते ही जा रहे थे। "मेरे लिये कटोरा लेकर चन्दा मांगों जिससे कि मैं विदेश जा सकंॅू। फिर भले ही वहाॅ लाउन्च में ही कविता पढ़ कर क्यों न वापिस आ जाऊॅ।"

मैने मूर्खता पूर्ण एक प्रश्न उनकी तरफ फेंका "आपसे जुड़ने पर सारे लाभ तो आपको हो ही रहे हैं मुझे क्या लाभ होगा। वे घुड़के ।

"साहित्य सेवा में स्वार्थ तलाशते तुम्हें लज्जा नहीं आती। तुम जैसे मात्र पत्नि को पत्र लिखने वालों के ही कारण भारत वर्ष गुलाम रहा है। उठो, एक हाथ में टूटी कलम, दूसरे हाथ में तेज धारदार हथियार और घुटने में दिमाग रख कर आगे बढ़ो। देखों सलज्ज सफलता, हाथों में पुष्पहार लिये कब से तुम्हारी वाट जोह रही है।

पिटो तो मेरे लिए। लिखों तो केवल मेरी तारीफ लिखों और आलोचना करो तो मेरे विरोधियों की करो। हे अज्ञात पथ के राही, तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो। इतिश्री खण्ड खण्डे भारत वर्षे मम ग्रामस्य चालाक साहित्यकारस्य उद्बोधन समाप्त।
टिप्पणी- मुझे मालूम है कि साहित्य जगत में सीमित दायरे वाले कई टुकडे है जिनके केन्द्र में अल्प योग्यता वाले सर्वाधिक हिंसक व्यक्ति बैठे हुये है । वे छेदो को दरार बनाते है और उसमें से रास्ता बना कर

विदेश यात्रा करते है। ये गुण्डा धीश, परिधियों में घर्षण करवा कर उसकी चिन्गारी से रोटियाॅं सेंकते है और सिंगार सुलगाते है। उनका धुआ शान्त, सही एवं सर्जक साहित्य कारों का फेफड़ा खराब करता है।

मैंने विरह वर्धक वह पत्र चिन्दी चिन्दी किया और पत्नी को त्वरित आने का साग्रह अनुरोध लिखा। गृह बनवाने वाली और उसमें स्थिरता लाने वाली गृ हस्थी की वहीं धुरी मेरे अन्दर और चारों तरफ का कचरा साफ रख सकती है।

घसीटा और अन्न संकट

पत्रकार समाज के लिये प्रतिबद्ध था। उसे पत्रकार वार्ता के लिये मंत्री जी ने बुलवाया था। वह केमरा मेन लेकर चला गया। उसने देश पर छाये अनाज संकट के बारे में मंत्री जीे से प्रश्न पूछा मंत्री जी ने रहस्योदघाटन किया कि चूंकि गरीब लोग दिन में दो बार खाना खाने लगे है अतः देश में अनाज संकट के बादल छाने लगे है।

पत्रकार को गरीबों पर क्रोध आया जिनके दो बार खाना खाने पर मन्त्री जी और हम अमीर आदमी को परेशानी होने लगी गरीब दिन में एक ही बार खाना खाता रहता तो ये लोग खुश रहते। इन्हें मुफ्त के मजदूर उपलब्ध रहते।

अतः वह गरीबी देखने और गरीबों को समझाने के लिये गांव आया। एक गरीब का पता तो मन्त्री जी ने ही दिया था जो गांव का सरपंच था।

पत्रकार गांव के सरपंच के महलनुमा घर में पहुॅचा । सरपंच पत्रकार को देख कर गदगदायामान हो गया । सरपंच की गौशाला में दो ट्रेक्टर बंधे थे और दरवाजे पर मंहगी कार पूंछ हिला रही थी।

सरपंच अमर होना चाहता था । अतः पत्रकार को जनानखाना के एकदम पहले वाले “ड्राइंग रूम” में ले गया। प्रभावोत्पादक “सिचुयेशन“ बनाई गई। केमरा चालू हुआ तो पत्रकार ने पूछा “सरपंच जी इस गांव में गरीब कौन है ?“

सरपंच ने बत्तीसी के पीछे का भी हिस्सा दिखाते हुए जवाब दिया “असली गरीब तोे मैं ही हूॅ । मेरे पास तीन चार गरीबी रेखा के प्रमाण पत्र पड़े हुये है। मेरे पास मात्र तीन सौ एकड जमीन है। पत्रकार चकरा गया। अगर यह गरीबी है तो वह स्वयं तो भिखमंगा ही हुआ। उसने कहा “नहीं, वह जो दिन में दो बार खाना खाने लगा है और मंत्री के अनुसार जिसके कारण देश पर अन्न संकट छाने लगा है।”

सरपंच ने छूट जवाब दिया “वह तो साला घसीटा है जो पंगत में तेरह रोटियां गपा जाता है और मना नही करता। जब पूरी पंगत उठ जाती है तो मजबूरन उसे भी उठना पड़ता है। मुझे तो शक्कर की बीमारी है मैं तो दिन में एक बार मात्र दो रोटी थोड़े से चावल के साथ खाता हंॅू।”

मगर वह फिर भी चोरी से दस बारह रोटियाॅ बांध कर ले जाता है। वह इस समय उसके खेत में काम कर रहा होगा।“ हालांकि सरपंच के पहले ही “सर“ लगा हुआ है पर उसने पत्रकार से कहा “सर मैं चलूं आपके साथ”। “नहीं, हम उसे ढंूढ़ लेगे।“ फिर उसका केमरा लम्बे लम्बे सुसज्जित कमरों से होता हुआ ट्रेक्टरों और कार को क्लोज अप लेता हुआ गांव में आ गया गांव की गलियों से होता हुआ वह खेत में पहुंच गया। घसीटा खेत में हल बक्खर चला रहा था

घसीटा काले रंग का आदमी था जो फटीवन्डी पहने था। पसीना उसके माथे से चूकर जमीन पर टपक रहा था। वह भरी दुपहरी हल बक्खर चला रहा था। पत्रकार ने पूछा “क्या आप ही घसीटा है”? घसीटा ने जवाब दिया हंओ। और हमारे आगे जो जानवर आंय वे बैल आंये। बैलो और हमारे बीच में हल बक्खर आये जा से जमीन खोदी जाय है । हम जे पे खडे है वा जमीन आय और हमारे अलावा जिनकी परछाई जमीन पे पड़ रही है वे पेड़ आंय । पेड़ो पे जोन जानवर बैठ के चिचिया रये है वे पंच्छी आंय।
पत्रकार चकरा गया। उसने पूछा “ये तुमसे किसने पूछा ? घसीटा बोला “हूजूर कुछ पडवे वारे मोड़ा मोड़ी और कछू साव लोग इते आके जई पूछत आंय”। पत्रकार ने पूछा “नहीं सर, हम तो ये पूछनें आये है कि क्या आप गरीब है ? घसीटा बोला “अबे नइये” तीन चार दिन बाद हो जे है”
पत्रकार फिर चकरा गया उसने पूछा “समझ में नहीं आया सर।” घसीटे ने सूचना दी “हजूर गरीबी को सार्टीफिकेट देवे सरपंच सचिव पच्चीस रूपैय्या मांग रओ है। अबे पन्द्रह रूपैय्या इकटठे हो गये है। परसो तक पच्चीस हो जावेंगे फिर ले ले हों ।” जब लो “सार्टिफिकेट नई होय तब लो गरीबी के कछू सरकारी फायदा नई मिलने।”

पत्रकार को दुःख हुआ। मगर चूंकि भ्रष्टाचार एक अलग मुद्दा था अतः उस पर न जाकर उसने पूछा घसीटा सर, आप दिन में कितनी बार खाना खाते है ? घसीटा बोला “तीन टैम हूजूर” पत्रकार की आंखे फटी की फटी रह गई। उसने सोचा अगर देश के तीस करोड़ घसीटे दो के बजाय तीन बार प्रतिदिन खाना खाने लगे है तो अनाज संकट होना ही है। अगर मंत्री जी को मालूम होता कि सदियों से गरीब लोग अब तीन समय खाना खाकर अपनी सदियों की भूख मिटाने लगे है तो वे जरूर “कितने टाइम खाना” नामक एक सचिवालय खोल देते और “कितने टाइम खाना” नामक इन्सपेक्टर गांव गांव भिजवा देते जो तीसरे टाइम खाने वाले को जेल भिजवा देते।

इतने में घसीटी दोपहर का खाना ले आई। उस खाने में छः मोटी मोटी रोटियां और प्याज का एक गटा था। उन मोटी मोटी रोटियों में पत्रकार को देश पिसता दिखाई दे रहा था। घसीटे ने पत्रकार को खाने का निमंत्रण दिया। उन मोटी रोटियों और प्याज के गटे को देखकर पत्रकार ने विनम्रता पूर्वक वह निमन्त्रण ठुकरा दिया ।

घसीटे ने प्रेमपूर्वक वह “लंच” लिया। जो टुकडे जमीन पर गिर गये थे उन्हे भी उठा कर खा लिया। एक भी टुकड़ा रोटी का नही छोड़ा । पत्रकार को मंत्री द्वारा दिये गये पाॅच सितारा हांेटल के लंच और डिनर की याद आई जहाॅ दो नान के लिए बीस नान बरबाद कर दिये जाते है। शहर की हर दिन होने वाली जन्म दिन पार्टियों की याद आई जहो टनो अनाज बरबाद कर दिया जाता है। उन शादियों के लंच और डिनर की खाद आई जहां टनो अनाज पैरों तले रौद दिया जाता है । अमीरों के उन कुतो की याद आई जिन्हे मना मना कर बिस्कुट खिलाये जाते है और यहा मेहनत कश खेतिहर मजदूरो के पेट भर खाने पर

आपत्ति उठाई जा रही है। देश का हर तीसरा आदमी ज्यादा खाने से डायबिटीज का और ब्लड प्रेशर का शिकार है और गरीब के दो टाइम खाने पर आपत्ति उठाई जा रही है।

अन्त में उसने अपना कमजोर होता हुआ प्रश्न पूछा "घसीटे जी मंत्री की कह रहे है" कि गरीब लोग दो वक्त रोटी खाने लगे है इसलिये देश में अनाज का संकट है। घसीटा बोला "हुजूर हम हर साल में अठारह बोरा गेहूॅ पैदा करत है।" ओ में से दस बोरा सरपंच और सरकार ले लेथे। अब मानो मुल्क में तैतीस करोड़ लोग से जे दस दस बोरा लेवें ले तो कित्तो ले लेथे और ऊ खों बरबाद कर के सिवाय का करथ है "पहले ऊ बरबादी रोकी जावे हुजूर फिर हमारी रोटियों पें नजर लगाई जावे।"

अफसर और सूअर

अफसर को सूअर से घिन आती थी । केवल सूअर को सूअर से घिन नहीं आती । कुछ आदमियों को सूअर से घिन आती है। अफसर आदमियों से ऊपर होंता है अतः उसे आदमियों और सूअर दोनो से घिन आती है। अफसर ने सुन रखा था कि गांव में कोयल अमराई में और आदमी और सूअर जमीन पर रहते है। वह अमराई और कोयल से मिलना चाहता था पर आदमी और सूअर से नहीं अतः वह गांव नही आता था।

उसे आदमी समझने वाले उसके अफसर ने आदेश दिया कि वह गांव का दौरा करे और वही रात्रि विश्राम करे अतः पैसे कमाने, नौकरी बचाने और प्रमोशन पाने के लालच में उसने गांव जाने का निर्णय लिया। जिले के उस आला अफसर ने कार्यपालन यंत्री और जिला शिक्षाधिकारी की मीटिंग बुलाई और गांव के स्कूल भवन में पश्चिमी फैशन का शौचालय बनाने का आदेश दिया।

नियत समय पर गांव की ओर कार में रवाना हुआ। वह सो गया था। वह सोता ही रहता था। उसके नथुनो को जब मल गंध ने भरना चालू किया तो वह समझ गया कि कवियों द्वारा प्रशंसित गांव आ पहुंचा है। दोनो किनारे बने मकानो के बीच की जगह गांवो में गर्मियों में सड़क और बरसात के नाला हो जाती है । गांव के प्रवेश बिन्दु पर एक कोटवार एवं एक शिक्षक सूअर भगाने के लिये तैनात थे। जैसे ही कार गांव में घुसी कि कहीं से दो तीन सूअर एवं नौ दस सूअर के बच्चे कार के आगे आ गये। इसके बाद उन्होने कार के आगे दौड़ना चालू किया तो अफसर ने घबराकर आंखे बंद कर ली।

कुछ देर बाद गांच के नंग घडंग बच्चे कार के पीछे शोर मचाते हुए दौड़ने लगे। अब हाल यह था कि कार के आगे सूअर के बच्चे और पीछे नंगधडंग बच्चे धूल उड़ाते, शोर मचाते गंदगी करते दौड़ने लगे । अफसर की घड़कन, धूल, धुंआ ओर धुमाल से बढ़ जाती थी और वही हो रहा था उसका रक्तचाप घुटने से सिर पर पहुंच गया और वेसाख्ता बोला "सूअर के बच्चे।" ड्राइवर को यह सम्बोधन सुनने की आदत थी। वह नम्रता से बोला, "सर।"

अफसर जब ग्रामीण कार्यालय पहुंचा तब तक उसका मूड काफी खराब हो चुका था। वह चीखा "कहां है कोयल, अमराई, पुरवाई, पनघट और गौरी।" गांव का अफसर अब तक यह समझ रहा था कि शहर का

अफसर निरीक्षण करने आया है। वह सूअर और सूअर के बच्चो ंको भगाने लगा। शहर के अफसर के का ॅपते अंह पर कुछ पानी के छीटें पड़ गये। उनके तने गुस्से को कुछ ढ़ीला पड़ते देख गांव का अफसर आधरा नतशिर होकर बोला "सर अंगना, अमराई, अंगडाई आती ही होगी। आर्डर इनका दिया था और आ गये सूअर के बच्चे।"

अफसर ने आदेश दिया "गांव सूअर धूल, गंदगी, गरीबी और संस्कार विहीन हो जाना चाहिये एक महीने में अगले माह जब मैं निरीक्षण के लिए आऊं गरदा, परदा और जरदा न दिखे। कभी हमारे आफिस आओ और देखो की सफाई क्या होती है। एक भी सूअर नहीं दिखेगा।" गांव के अफसर ने सोचा कि तुम्हारा आफिस सातवें मंजिल पर है वहां सूअर कहां जमीन पर रह कर तो देखो ....। छोटे अफसर ने सरपंच की बुला भेजा सरपंच के पूर्वज पहले जमींदार थे। जमीदारी छिनी तो सरपंच हो गये, उसके बाद से उनके खानदान में सरपंच की जमींदारी चल रही है। सरपंच जी अफसर से खूब परिचित थे वे उन्हें अपने घर ले गये। घर क्या था महल था । अलग से वार। रात अफसर ने संगीतमय वातावरण में छक कर सुरापान किया जब अर्धमूर्छा में पहुचे तो सरपंच ने कहा "हूजूर अमराई दिखी" अफसर झूम कर बोला "अहा क्या अमराई है क्या पुरवाई है क्या है शहनाई क्या अंगडाई है मजा आ गया।

मरने की तैयारी करो

उस्ताद सेम को कुछ दिनों से सीने में दर्द हो रहा है। उनका सीने का दर्द इलाज से ठीक नहीं होता वरन् जब वे ही किसी का इलाज कर दे तो उनका दर्द ठीक हो जाता है। वे अभी कुछ दिन पहले एक छोटे गं ुडे से दो हाथ करके उसका मकान हड़प चुके है, अब उन्हे ंअमीन खां का मकान कंकड बन कर आंखों में खटक रहा है।

हर गलत मामलें की हां में हा ॅ-हा ॅ मिलाने वाले विलायत भाई को उन्होंने याद किया। बिलायत खा ॅ तो चाकू में धार करते, ही रहते है फौरन मिलने पहु ॅच गए और जय ए.के.फोर्टी रायफल कह कर कोर्नीश बजाई । तो उस्ताद सेम ने जय राकेट लांचर कर जवाब दिया और उन्हें अपनी कुर्सी से सरक कर जगह दी। उस्ताद सेम ने सूचना दी कि अमीर खां का मकान ऊॅचा होता जा रहा है उसकी मीनारें खटकने लगी है।

बिलायत खां ने जवाब दिया "बड़े भाई, उसके घर में नायाब हीरे है जिन पर मैडम बिलायती का दिल आ गया है।" "वही तो" दादा सेम ने जवाब दिया "खूबसूरत चीजे बुरे इरादे वालों के पास ही अच्छी लगती है।" कब हमला बोला जाए?

बिलायत भाई बोले "अभी नहीं, पहले उसे बदनाम करने की कोशिश करते है। मसलन उसका नाम किसी महिला के साथ जोड़ा जाए या सट्टा या जुआं खिलाने का आरोप उस पर लगाया जाए फिर हमला बोलेंगे। सैम दादा बोले, नहीं, कोई आरोप लगाने की भी अब जरूरत नहीं है पूरी दुनिया जान गई है कि हम जब किसी पर झूठे आरोप लगाते है तो हमारा इरादा उसे निगलने का होता है। इस बार उसे सीधे ही गटक लेते है। पानी बाद में पी लेंगे।

बिलायत भाई बोले "दादा उसे बुला कर पहले धमकाते है यदि धमकाने से ही घर खाली कर दे तो मार पीट की क्या जरूरत है ?

सैम दादा ने घुड़का, "अच्छा गोया तुम उससे मकान नहीं आर्शीवाद या परसाद मांग रहे हो जो वह तुम्हें बगैर हील हुज्जत के दे देगा । अरे पीठ पर दो लात मारो और बाहर करो। जब हमारा दिल उसके मकान पर आ गया तो वह हमारा हो गया। तुम कहां मध्य युग में रह रहे हो जहां आत्मा की आवाज नाम अंकुश हुआ करता था। तब भी बिलायत खां ने टोका "ठीक है ठीक है कभी कभी गरीब बाप की बात भी मान लेना चाहिए" सेम गंुडा ने सहमत होते हुए कहा।

दोनो ने अमीर खां को बुला भेजा । अमीर खां समझ गया कि मौत ने याद किया है और उसके दिन पूरे हो चुके है । फिर भी ऊपर वाले (यदि उनसे ऊपर कोई है तो) को याद करता हुआ उनके पास पहुंचा, सैम ने नियमावली पर पैर रख का कहा "अमीर खां तुम्हारा मकान बहुत ऊँचा हो चुका है अब खाली करो।"

अमीर खां ने जवाब दिया, "उस्ताद अगर खटकता है तो ऊपरी मंजिल गिरवा दूॅं। " "नही! सैम ने जवाब दिया, अब गिरवाने से काम नहीं चलेगा, मालूम पड़ा है कि तुम संस्कृति की स्मगलिंग करते हो अतः हमें संस्कृति खोजने के लिए तुम्हारी हत्या करना पड़ेगा और मकान हासिल करना पड़ेगा।"

"आप जान बक्श दें और मकान वैसे ही ले ले मैं मय फर्नीचर के मकान खाली कर दंूूगा और अज्ञात वास में चला जाऊंगा । अमीर खां ने काॅप कर कहा। "नहीं", विलायक भाई बोला "हमें तुम्हारी हत्या तो करनी ही पड़ेगी। पिंडारियों की तरह ही बगैर मेहनत किए लूटने की आदत हमें नहीं है, अतः तुम घर जाओ और मरने की तैयारी करो। "मगर पूरी दुनिया के हूजूरो" अमीर खां बोला मैं संस्कृति को जानता तक नहीं उसके स्मगलिंग का प्रश्न ही नहीं उठता "जवान मत लड़ा" हमें मालूम है कि अफगान खाॅ की तरह तुम्हारा भी संस्कृति से कोई वास्ता नहीं है होता भी तो हमें तुम्हारे मकान से मतलब है संस्कृति से नहीं "नाऊ गेट लास्ट" अमीर खां ने धौस जताई।

इसके बाद एक पखवाड़े तक उस मकान में दोनो गुंडो का निःवस्त्र राक-एन-रोल होता रहा । कमजोर मकान मालिक कानून की दुहाई देते रहे और ताकतवर गुंडे ताकत के हिसाब से सामान बांॅटने में लगे रहे।

एक माह पश्चात सेम गंुडे ने फिर विलायत भाई को याद किया। विलायत भाई मंुह से खून पोछते हुए फिर पहंुचे। सेम बोला, "हमें अंदाज नहीं था कि यहां मकानों में लोगो ने इतना कुछ छिपा रखा है अब अगले मकान को लूटने की तैयारी करो हमें चुप नहीं बैठना है हम दुनिया से अन्याय मिटा कर ही दम लेंगे। जय मानवता, जय मानव अधिकार, जय प्रजातंत्र, " विलायत भाई ने जवाब दिया।

मंत्री की खोपड़ी

मंत्री बनने के बाद प्रेमदास जी ने कभी घर पर खाना नहीं खाया। कभी किसी सरपंच के घर तो कभी किसी पंचायत घर में। कभी सर्किट हाऊस में, कभी किसी पार्टी में तो कभी पार्टी कार्यालय में। उस दिन पंचायत के नवनिर्मित भवन में सामूहिक भोज के केन्द्र में स्वाद ले लेकर खाना खा रहे थे। वे मक्खन खा रहे थे और मक्खन लगवा रहे थे। इतने में एक दरवाजा उनके ऊपर गिर गया। सिर मजबूत था और दरवाजा भी मजबूत था। मगर दरवाजा गरज के साथ टूट गया । उन्हें राष्ट्र के इस नुकसान में विरोधी पार्टी का हाथ दिखाई दिया। उन्होंने तो उस हाथ की उंगलियाॅ भी गिन ली थी । वे यह मानने को तैयार नहीं थे कि उनका भ्रष्टाचार ही उनकी खोपड़ी पर गिरा था खबर खोपड़ी से बाहर ढलक आ गई। जिलाध्यक्ष ने नीली किताब देखी । नीली किताब में व्ही.आई.पी. के आगे पीछे दायें बायें ऊपर-नीचे के हिस्से के प्रबंधन की सारी बातें लिखी रहती है। उन्होंने अनुक्रमणिका में पहले सर देखा, फिर चोट देखी फिर उन पृष्ठों को देखा। उनमें लिखा था कि ऐसी स्थिति में सरकारी डाॅक्टर को बुलाना चाहिए । सरकारी डाॅक्टर को ढूॅंढा गया वह भीड़ के द्वारा एक कोने में पिचकाया जा रहा था। मंत्री के सर की चोट ने उसे पिचकने से बचा लिया।

ऐसे मौके पर सरकारी डाक्टर को उसके वरिष्ठ साथियों ने सिखाया था कि मंत्री जी को मेंडिकल काॅलेज भिजवा देना चाहिए । उसने कलेक्टर साहब से कहा कि मंत्री जी के सिर की टोमोग्राफी होना चाहिए जो इस गांव में संभव नहीं है। मंत्री जी ने जवाब दिया "यह एक असिस्टेंट सर्जन है ।" कलेक्टर साहब एक न्यूरोसर्जन को राजधानी से बुलवाया जाए वह यदि कहता है तो मैं टोमोग्राफी करवाउंगा। अभी तो आप डी.एफ.ओ. को बुलवाये।" भीड़ में फिर खलबली मच गई खोपड़ी के इनर सर्किल ने आउटर सर्किल से कहा "मंत्री, जिला वनअधिकारी को बुला रहे है।" एक ने दूसरे से कहा दूसरे ने तीसरे से। कोंई हिला नहीं। सब मंत्री के चारो तरफ रहना चाह रहे थे सब मंत्री के करीब जाना चाह रहे थे। दूर कोई नहीं। उनके आजू बाजू रहकर दांत दिखाकर फोटो खिचवाना चाह रहे थे। कुछ उनके कंधो पर हाथ रखकर कुछ उनके हाथो को अपने हाथो में लेकर कुछ ऐसे तो कुछ वैसे फोटो खिंचवा रहे थे। सब चाह रहे थे कि धड़ उनका हो और सिर मंत्री का हो।

खैर बेतार की आदम व्यवस्था से खबर कलेक्टर तक पहुंची। मंत्री का हर काम कलेक्टर को करना पड़ रहा था। उन्होने डी.एफ.ओ. को मंत्री तक पहुंचाया। मंत्री ने जिला वनाधिकारी से पूछा "इतनी कमजोर सागोन जंगलों में क्यों उगाई जा रही है ?"डी.एफ.ओ. साहब ने प्रथम दृष्टया ही आरोप खारिज कर दिया । बोले "यह सागौन नहीं है मगर जो भी है आपकी खोपड़ी उससे ज्यादा मजबूत है।"

मंत्री जी तारीफ सुनकर गदगदा गये मगर किंचित रोष से जिलाध्यक्ष से बोले "इस बार कास्केड में केवल 22 कारें ही है" पिछली बार तो 24 थी। मेरी प्रसिद्धि का ग्राफ आप संभाल नहीं पा रहे है। यह आपका दायित्व है कि आप मेरे भाषणों के लिए भी भीड़ जुटायें।"

कलेक्टर ने मन ही मन मंत्री को गालियां दी कि अब तो तू रिश्वत में बनियान मोजे और चड्डी तक मांगने लगा है तेरा ग्राफ तो अब भगवान भी नहीं खड़ा रख सकते वह तो लटकेगा ही । प्रकट में बोले सर प्रसिद्धि पहियों से नही पैरो ने नापी जाती है आपकी सभाओं में जूते चप्पलों की बरसात स्टेज तक आने लगी है । छीटों से हमें तक बचना पड़ता है। "मंत्री की समझ में नहीं आया कि गर्मियों में जिलाध्यक्ष बरसात की बात क्यों कर रहा है। फिर जूते चप्पलें भी फटी हुई स्टेज तक आती है एडिडास के जूते कोई नहीं फेंकता।

मंत्री राष्ट्र की संपति होता है उसकी रक्षा करना सरकारी नौकरो का दायित्व होता है मंत्री जब दौरे पर होता है तो उसके हेलिकाप्टर से उतरने और उड़ने तक अधिकारी प्रार्थना करते रहते है कि हे भगवान यह दुष्ट हमारे कार्यक्षेत्र के बाहर दुर्घटना ग्रस्त हो। इस तरह कई दुआऐं उसके साथ लगी रहती है। तेरह क्रमांक पर एक रूग्ण वाहक उसके साथ होता है जिसमें चार होमगार्ड के जवान मंत्री के ही रक्त समूह के उसमें पीछे की ओर बैठे रहते है वे इसलिए कि हेलीकाप्टर दुर्घटनाग्रस्त होने पर मंत्री इन चार जवानों का रक्त चूस सके।

मंत्री जब दौरे पर होता है तो मंत्री का बायोडाटा जिलाध्यक्ष को पूर्व में ही प्राप्त हो जाता है जिसमें मंत्री का नाम, आयु, ब्लड ग्रुप, उनकी स्पष्ट और गुप्त बीमारियां (उनके सीमित शरीर में असीमित बीमारियां कैसे समाती होगी) उनके पसंद इत्यादि लिखी रहती है । इन सबकी व्यवस्था जिलाध्यक्ष को जनता के पैसो से करना पड़ता है। राष्ट्रमंत्री की संपत्ति जो है। मंत्री के जूते चप्पल, चड्डी, बनियान तक का इंतजाम शासन करता है जिससे वह निर्वस्त्र सभाओं में न जाए अन्यथा भारतीय संस्कृति निर्वस्त्र हो जाती है। पुरूषों में एक ही खराब आदत है वे शरीर के किसी भी हिस्से से चले चड्डी पर पहुंच जाते है । जैसे इंग्लैंड में आल द रोड्स्म लीड टू वर्मिंघम पैलेस। प्रेमदास की ठोस खोपड़ी की विवेचना हो रही थी और मामला चड्डीयों की रिश्वत पर पहुंच गया।

प्रेमदास की ठोस खोपड़ी पर हर चीज रखी जा चुकी है। पगड़ी रखी जा चुकी है मुकुट रखे जो चुके है भगवा, काली या सफेद टोपियां रखी जा चुकी है सूखाग्रस्त क्षेत्रो में खाली मटके तो असंतुष्ट क्षेत्रों में जूते तक रखे जा चुके है। सिर्फ रखी जाने वाली सब चीजे बदल गयी पर खोपड़ी नहीं बदली। इतने निस्प्रह तो ब्रम्ह ज्ञानी भी नहीं होते। प्रेमदास किसी विभाग में कभी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी थे किसी पार्टी को चुनाव में खड़े होने के लिए "कैंडीेडेट" नहीं मिल रहे थे। ये हमेशा कार्यालय के बाहर खड़े रहते थे अतः चुनाव में खड़े होने के लिए तैयार हो गये। इन्हें किस्मत ने विधायक बनवा दिया। बाकी मार्ग इन्होने ही बनाया । वे अपने क्षेत्र की आंधी और तुकबंदी में गांधी बन गये। वे गांधी किसी गोड्से की गोली झेलनें के लिए नहीं बल्कि मंत्री पद पाने के लिए बने थे । जो उन्हें मिल गया।

फिर उनकी खोपड़ी मुख्यमंत्री पद की तरफ देखने लगी । ऊपर देखते हुए इन्होने जमीन के पत्थर नहीं देखे। एक ठोकर पैरो में और एक डंडा सिर में लगा तो ये पुनः माननीय विधायक बन गये। मगर मंत्री पद की मलाई ये खा चुके थे अतः इन्होने अपनी खोपड़ी को दीवाल से ठोका और कद्दू सी खोपड़ी पुनः मुख्यमंत्री जी के जूतो में झुकाई तब वमुश्किल तमाम गैर महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री बन पाए।

हर मौसम लीक होने का मौसम

लीेक अब हिन्दी में ज्यादा और अंग्रेजी में कम उपयोग होता है। “लीक” अंग्रेजी का शब्द है जिसके हिन्दी में मायने होते है छेद, दरार, रिसना, प्रकटन, रहस्योदघाटन इत्यादि । “भारत देट इज इन्डिया” में हर माह कुछ न कुछ लीक होता रहता है अतः भारत कृषि प्रधान न होकर लीक प्रधान देश है।

जुलाई अगस्त में गरीब की छत लीक होती है। पूरी बरसात वह छत ठीक करता रहता है और वह लीक करती रहती है। पूरी बरसात वह विस्तर सरकाता रहता है। यदि किस्मत से उसके पास मच्छरदानी हुई तो वह पानी से बचने के लिए उसके ऊपर बरतन रख देता है । टपकने वाली छत पर टपका होता है टपके से पानी टपकता है कभी कभी सांप भी टपक जाते है।

सरकारी बिल्डिंग की छते तो बंूदे टपकाने की जगह पानी की धार टपकाती है। बाहर कम, उसके अन्दर ज्यादा पानी गिरता है। और पानी कम, सरकारी छतें ज्यादा पानी गिरती है। हम कर्मचारी भर्तहरी बन जाता है । छत को हाथो का सहारा न दो तो सिर पर छते गिरती है।

दिसम्बर जनवरी में फटी छत से तारे झांकते है और ठण्ड बन्दूक की गोली की तरह जिस्म भेदती है। फटे कोट ठण्ड को जिस्म से दूर रखने में अक्षम होते है। फरवरी बजट लीक होने का मौसम होता है। बजट लोक सभा में रखे जाने के पहले ही लीक हो जाता है । फिर आरोप प्रत्यारोपो का दौर शुरू हो जाता है। असत्ता रूढ़ दल कहता है कि बजट मन्त्री ने लोकसभा के पहले उद्योगपतियों को बजट लीक कर दिया। सत्ता, रूढ दल, असत्ता रूढ़ दल के उन सदस्यों पर आरोप लगता है जो पहले सत्तारूढ़ दल थे। असत्ता रूढ़ दल, सत्तारूढ़ दल के असन्तुष्ट धडे, की सराहना करता है। मालूम नहीं पड़ता कि कौन किसकी तरफ है इस समय समाचार पत्र, असंतुष्ट घडे, विरोधी दल, उद्योग पतियों और जनता के आंखों के तारे और सत्तारूढ़ दल की आखों की किरकिरी बन जाते है।

फिर आता है प्रश्न पत्रों के लीेक होने का मौसम । इस समय भी समाचार पत्रों की चांदी रहती है, मैं तो कहूॅगा की प्लेटीनम रहती है। समाचार पत्र प्रश्न पत्र लीक भी करते है और विश्वविद्यालयों की बुराई भी। इसे कहते है जिस थाली में खाना उसी में छेद करना। प्रश्न पत्रों के लीक होने का मौसम फरवरी में चालू होता है और जुलाई तक चलता है। इसी बीच
रिजल्ट भी लीक होता रहता है।

बारहों महीनें फिल्मों में हीरोइन का जिस्म लीक करता रहता है। यदि उसके कपड़े नही फटे होते तो सिनमा घर का पर्दा फट जाता है। अब तो नेताओं के ड्राइंग रूप और सेजीब्रिटीज के बेड रूम लीक करने लगे है। “प्लान्टेड केमरे” गोया उनके घरो के छेद है जिसमें रिश्वत और न जाने क्या क्या गुप्त कीचड़ समाज बाहर से देख रहा है।

अब आत्मा के अलावा कुछ भी गोपनीय नहीं रहा। वह भर माया से "फूल फ्रूफ" ढंकी है। सरकारी नौकरी में एक शब्द है गोपनीय प्रतिवेदन। वह तो इतना गोपनीय है कि सचिवालय के पास की पान और दालचूड़े की दुकानों पर टंगा रहता है। एक शासकीय कर्मचारी तो जिस कागज पर रख का समोसा खा रहा था वह उसका गोपनीय प्रतिवेदन ही था। हमारी सेना के गोपनीय भेदों का क्या कहना ? जो भेद सेना के अधिकारियों को नहीं मालूम रहते वे पड़ोसी देशो को मालूम रहते है। हमारी सैनिक योजनायें हमें दुश्मन देशों में खरीदनी पड़ती है।

जो गोपनीय रहना चाहिये वह समाचार पत्रो और टी.व्ही. के माध्यम से सड़को पर वह रहा है। अब तो सूचना को व्यक्ति से छिपाने के स्थान पर सूचना से व्यक्ति को बचाना मुश्किल पड़ रहा है। समाचार व्यक्ति और संस्था के विज्ञापन हो गये है और विज्ञापन जनता के सूचना और समाचार।

एक ही कारण

डा. कौशल किशोर श्रीवास्तव

झुर झुरी आ जाना चाहिये यह पड़ कर कि क्यों हमारे देश में लोग भूख से आत्महत्या कर रहे है क्यों बैंक के कर्ज न चुका पाने की स्थिति में पूरा परिवार आत्महत्या कर लेता है परिवार का पेट न भर पाने की स्थिति में क्यों भरा पूरा परिवार पलायन कर जाता है। या क्यों भीख मांगने सड़को पर आ जाता हैं।

राजनेता और प्रशासक बनने पर लोग क्यों कानून और अर्थशास्त्र में उलझ जाते है क्यों व्यक्ति उनकी नजरो से ओझल हो जाता है, क्यों सापेक्षता उनकी नजरो का केन्द्र बिन्दु बन जाती है ।

भ्रष्टाचार के शर्मनाक उदाहरणों के बारे में पड़ कर ईमानदार देशवासियों के सिर शर्म से झुक जाते है उन्हें लगता है कि भ्रष्टाचार उनके कारण ही बढ़ रहा है और भ्रष्टाचार की कोई सीमा भी तो हो ?

सडको पर दुर्घटनायें बढ़ रही है। सरकारी अस्पतालों से लोगो का विश्वास उठता जा रहा है। गाॅव में जमीनों को लेकर दंगे फसाद हो रहे है।

मंहगाई भयानक रूप से बढ़ रही है। शहरो और गांवों में हत्यायें आम हो गई है । डाक समस्या खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। नक्सलाइट्स, वोडो इत्यादि आतंकवादी बढ़ रहे है। देह व्यापार पर नियन्त्रण असम्भव हो रहा है। फिरौती के लिए अपहरण की घटनायें बढ़ रही है। चोरी लूटपाट पर पुलिस को नियन्त्रण नही है । राजनेता पुलिस और सरकारी नौकरो पर किसी का विश्वास नही है बल्कि सामान्य आदमी उनसे नफरत करते है। आयकर की चोरी आम बात हो गई है ।

देश की सारी समस्याओं की जड़ एक ही है वह है नीचे से ऊपर तक व्याप्त भ्रष्टाचार नियमानुसार काम करने पर भी किसी राजनेता या साकारी कर्मचारी को रिश्चत मांगनें में शर्म महसूस नही होती। और रिश्वत भी कितनी ?

एक कलेक्टर का वेतन वर्तमान में मात्र बीस से तीस हजार रूपए होता है पर उसकी ऊपरी आय बीस से तीस लाख रूपये प्रतिमाह होती है । उच्चाधिकारी कुछ तो रिश्वत नियमित रूप से उनके अधीनस्थ कर्मचारी से लेता है जो जनता से वसूल करते है और कुछ पैसा सीधे जनता से आता है या सरकारी खजाने में डाका डाला जाता है इस संग्रहित रिश्वत या भ्रष्टचार से नियमित रूप से हिस्सा चीफ सेक्रेटरी एवं चीफ मिनिस्टर तक जाता है ।

एक एस.पी., हर टी.आई. से पचास हजार से एक लाख रूपये महिने लेता है। इसके कद भी टी.आई की आई. जी. तक सीधे भी रिश्वत पहुॅंचानी पड़ती है । फिर न्यायाधीशो और उच्चाधिकारियों की बेगार अलग करन पड़ती है । बेगार का मतलब है उन लोगो के मुफ्त में पिच्चर का इन्तजाम, बस के टिकट के इन्तजाम, मुफ्त को होटलबाजी का इन्तजाम इत्यादि। नहीं तो वे न्यायालयों में चालान स्वीकृत नही करते और सुबह से शाम तक न्यायालय में खड़ा रखते है जिससे कानून व्यवस्था प्रभावित होती है।

पत्रकारिता पर इन समाचारो के प्रकाशित करने पर कानूनी कार्यवाही की धमकियाॅ अलग आती है। सरकारी कर्मचारियों का माफिया बहुत ताकतवर होता है। शूटर किसी भी बहाने से किसी को भी शूट कर सकते है एवं एनकाउन्टर बतला देते है। दो साल पहल पड़ा था कि उत्तरप्रदेश के मुख्य सचिव के घर छापा पड़ने पर तीन (हजार करोड़) रूपये नगद जब्त किये गये । यह कितने शर्म की बाती है कि एक ओर तो जहाॅ परिवार के परिवार भूख के कारण आत्महत्याऐं कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर जनता के नौकरो के घर से जनता का अटूट पैसा निकल रहा है। क्या यह काला पैसा एक ही कर्मचारी के घर पर होगा ?

कहते है कि खराब पैसा बाजार से अच्छे पैसे को बाहर कर देता है। इसीलिये मंहगाई अन्धाधुन बड़ रही हैं।

बगैर दलालो के ड्राइविंग लाइसेन्स नहीं बनता है। हालात इतने बदतर है कि आर.टी.ओ. होकर ग्लालियर में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी बाजपेयी के ड्राइविंग लाइसेन्स पर दस्तखत कर देते है। आजकल किसी भी व्यक्ति को आर.टी.ओ. जाने की आवश्श्कता नही है और ड्राइविंग लाइसेन्स बन जाते है। परिणामतः सड़क दुर्घटनाऐं बढ़ती जाती है। सड़क पर सोते हुये गरीब कुचल दिये जाते है और बच्चों को ले जाती हुई बस नदी में गिर जाती है।

रजिस्ट्रार कार्यालय में भ्रष्टाचार एक नियम बन गया है। यहाॅ प्रशासन रजिस्ट्री के पैसे अन्धाधुन बढाता जाता है वहाॅं रजिस्ट्रार कार्यालय में भ्रष्टाचार बढ़ता जाता है।

उन सरकारी नौकरो के पास कारें, हेन्डीकाम आदि विलास की वस्तुऐं मिल जायेंगी जिनका वेतन मात्र दस हजार रूपये महिने हैं। उनके बच्चे मंहगें स्कूलो में कैसे पढ़ लेते है। वे लोग वे लोग अठारह लाख रूपयो को डोनेशन देकर उनके बच्चों को प्रायवेट मेडिकल कालेज में प्रवेश दिलवा लेते है। हर प्रायवेट काॅलेज में एडमीशन के साथ अभिभावको को पेन नम्बर दिया जाना चाहिये ।

आयकर विसंगतियाॅं तो विचित्र ही है जिस व्यक्ति की आय पाॅच लाख रूपये वार्षिक है उसका आयकर लगभग एक लाख बीस हजार रूपये बनता है। अतः खर्च करने के लिए उसके पास मात्र तीन लाख अस्सी हजार रूपये बचते है । अब यदि उसके दो बच्चे और वृद्ध माता पिता हो तो एक व्यक्ति के लिए मात्र छः हजार रूपये मासिक पड़ता है। इस छः हजार रूपये में बूढ़े बाप की दवाईयांॅ खाने पीने का खर्च और कपड़े आना है, बच्चों की स्कूल की फीस, टिफिन, कपड़े, किताबे और स्कूल आने जाने का खर्च आता है और कमाने वाले का स्कूटर का खर्च कपड़ो पर खर्च होना है। उसकी पत्नी की साड़ी, खाने का खर्च इत्यादि होता है । बाहर घूमना और शादियों में शामिल होना तो अलग बात है। यह आदमी कर अपवन्चन नही करेगा तो मर जायेंगा ।

सरकारी नौकरियों में जिन्दा रहने के लिये भ्रष्टाचार के अलावा कोई रास्ता नही बचा है। ईमानदारी के लिये कोई पुरस्कार नही है । ईमानदारी व्यक्ति के लियें बेईमान से पहले पदोन्नति की कोई गुन्जाइश नही है बल्कि बेईमान के लिए शायद ही भी। आरक्षण ने स्थितियाॅ और भी खराब कर दी है । वरिष्ठ लोगो का कनिष्ठ के अधीन काम करना पड़ रहा है। ऐसे में कुन्ठायें अलग पनप रही है।

सन दो हजार आठ में ही मध्यप्रदेश के स्वास्थ विभाग के संचालक के घर पर आय कर विभाग से छापा डाला । करोड़ो रूपए नगद एवं करोड़ों रूपये की नामी और बेनामी सम्पति बरामद हुई । इससे क्या

बचा हुआ बाकी डाक्टर पाक साफ हो गये । इन छापों से निष्कर्ष निकलता है कि लगभग हर सरकारी कर्मचारी निहायत दर्जे का भ्रष्ट और क्रूर है।

कोई भी शासन इस कोढ़ से निजात नही पाना चाहेगा। क्योंकि भ्रष्टाचार प्रजातन्त्र की ही देन है। चुनाव अरबोे रूपये में हो जाते है। झुग्गी झोपड़ी निवासी स्वयं चुनाच की एक रात पहले शराब और रिश्चत की अपेक्षा करते है । जीतने के लिये राजनेताओ को पैसे चाहिए । इस तरह हमारे देश की जनता ही भ्रष्ट है तब सम्भवतः नेताओं और नौकरशाहो को दोष देना प्रबन्चना ही है ।

हमारा संविधान भी भ्रष्टाचार का कारण है। एक तो भ्रष्ट नौकरशाह पकड़ में नही आते है फिर आतें है तो मुकदमा सालों तक चलता है। अन्त में साक्ष्य के अभाव में छूट जाते है। इस बीच साक्ष्यों को प्रभावित करना का पर्याप्त अवसर मिल जाता है।

उन्नीस अप्रैल दो हजार आठ को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने स्वीकार किया कि देश में बहुत भ्रष्टाचार है और उससे हम सक्षमता पूर्वक नही निपट रहे है इसके लिये उन्होने फास्टट्रेक न्यायालय बनाने की सलाह दी है।

भारत में प्राथमिक उत्पादक किसान और मजदूर है। सरकारी कर्मचारी और राजनेता उनपर परजीवी है। अत्यधिक संगठित भ्रष्टाचार के कारण यह समाज विरोध भी नहीं कर पाता बकैाल दुष्यन्त कुमार के:

ये सारा जिस्म झुक कर बोझ से दुगुना हुआ होगा
मैं सिजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा

ये जो देह जीवी नारियाॅं है इनको शरीर से कमाने के लिये भ्रष्टाचार ही अन्धे हुऐ में ढ़केलता है एक ईमानदार आदमी को डाकू भ्रष्टाचार बनाता है। नक्सल एवं बोड़ो का जनक भ्र्रष्टाचार ही है देश को पीछेे ढ़केलने वाला भ्रष्टाचार ही है दुर्घटनाओ का भ्रष्टाचार ही है गोया देश में जितनी भी शर्मनाक सिर झुकाने वाली घटनायें है उनकी जड़ मात्र भ्रष्टाचार ही है ।

पिछले दशक में यानि कि सन् दो हजार के बाद बड़ी बड़ी मछलियाॅ पकड़ी गई है। भ्रष्टाचार के आॅखों रूपये के प्रकारण उजागर हुये है। जैसे उत्तरप्रदेश के मुख्य सचिच हवाला काण्ड , जार्ज फर्नान्डीज के कार्यालय का रिश्तत काण्ड, मध्यप्रेदश के स्वास्थ संचालक का काण्ड और अब के.पी.एस.गिल के भ्रष्ट कारनामों से छापे पड़ते ही रहना चाहिये । इससे लोगो में भ्रष्टाचार के प्रति जुगुत्सा पैदा होगी और शासकीय खजाने में वृष्द्धि होगी ।

इक्कीसवीं सदी का सन दो हजार सात तक विहंगाव लोकन

समय बहता रहता है उसको कोई “कट आफ प्वाइंट” नहीं होता । अतः यह सोचना कि बीसवीं सदी की अन्तिम रात और इक्कीसवीं सदी के पहले सुबह में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन होना चाहिये तथा एक ना समझी है । इस दृष्टि में हर कार्य एक कारण को जन्म देता है और हर कारण एक कार्य को। यह कार्य और कारण की क्षृंखला सरकती रहती है।

पिछले सात सालों में शिक्षा प्रणाली में अलबत्ता तीन सौ अस्सी डिग्री का परिवर्तन हो गया है। आज शिक्षा व्यवस्था से साहित्य, दर्शन, इतिहास, समाज शास्त्र आदि तिरोहित हो गये है। उपरोक्त विषय अब एक न पहचाने लाने वाले एक रस समूह में फैंक दिये गये है। जिसे बायोमास कहते है। उनकी उपयोगिता समाप्त हो गई है । भाषा, विज्ञान, दर्शन, समाज शास्त्र इत्याि‍द विषय मनुष्य को विचारवान बनाते है मगर आज की शिक्षा प्रणाली मनुष्य को मशीन में तब्दील करा रही है।

आज उपयोगी शिक्षा वही मानी जाती जो विद्‌यार्थी को लाखों रूपये प्रतिवर्ष का पेकेज दिलवा सके । यह बाजार वाद के कारण हुआ है । उन्मुक्त व्यापार और विश्व ग्राम के कारण यह विश्वास दिलाया जाता है कि प्रगति केवल अंग्रेजी के कारण हो सकती है। यह मात्र हिन्दी का ही संक्रमण काल नही है वरन विश्व की सभी भाषाओं का संक्रमण काल है। फेन्च, इटालवी, रूसी इत्यादि सभी भाषायें दूसरे नम्बर की भाषायें बन गई है कम्प्यूटर क्रान्ति ने सारी भाषाओं को अंग्रेजी का गुलाम बना दिया है।

भारत वर्ष में क्षेत्रीय भाषायें हिन्दी को प्रतिद्‌वन्दी भाषा मान रही है । उनका मानना है कि हिन्दी का विकास उन्हें निगल लेगा। अतः शिक्षा प्राप्त करते समय प्रांतों की पहली भाषा अंग्रेजी दूसरी क्षेत्रीय भाषा और तीसरी भाषा संस्कृत या उर्दू चुनी जाती है। यहां तक कि हिन्दी भाषी प्रान्तों में भी किसी क्षेत्रीय भाषा का चयन नही किया जाता । यह एक खतरनाक स्थिति है। अंग्रेजी जब विश्व की ताकतवर माने जाने वाली भाषाओं तक को निगल चुकी है तब भारतवर्ष की क्षेत्रीय भाषाओं की तो बिसात ही क्या ? दरअसल भारत की सभी भाषाओं का उत्कर्ष हिन्दी के उत्कर्ष से ही बंधा हुआ है। यह तथ्य हिन्दी बोलने वालों और अन्य भारतीय भाषाओं को स्पष्ट हो जाना चाहिये।

भाषा का प्रसार आर्थिक स्थ्ति‍ि से जुड़ा होता है अमेरिका उसका प्रभुत्व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से बड़ा रहा है। आज यदि कोकाकोला का विज्ञापन बंगला में आता है तो बंगला भाषा के आगे झुकना पड़ा । पर है इसका उल्टा । वे बंगला या अन्य प्रान्तीय भाषाओं या हिन्दी के ही माध्यम से उपनिवेशीय विचार धारा का प्रचार कर रहे होते है।

लोक संस्कृति का रूप बिकने वाली वस्तु में बदल दिया गया है । लोक संस्कृति के उसी रूप को जिन्दा रखा जा रहा है जो बिक सके । यदि उसका अनुवाद विक्रय योग्य वस्तु में नहीं किया जा सकता है तो उसका अस्तित्व क्रूरता पूर्वक समाप्त कर दिया जाता है।

साहित्य फूहड़ चुटकुलों का नाम हो जाता है। शीर्ष साहित्यकार चुटकुलो को कविता में ढाल कर सुना रहे है जिनसे उबकाई आती है। पिछले सात वर्षो में पत्रकारिता के क्षेत्र में विस्मय कारी परिवर्तन आये है । पत्रकारिता के हर स्तर पर यथा समाचारों का संकलन सम्पादन एवं प्रस्तुतीकरण तीव्र गति के हो गये है। सुबह नौ बजे का समाचार सुबह दस बजे बासा हो जाता है। इस क्षेत्र में “इलेक्ट्रानिक मीड़िया” प्रिन्ट मीडिया से सदियों आगे निकल गया है जहां प्रिन्ट मीडिया में स्थिर प्रस्तुतीकरण होती है। प्रिन्ट मीडिया एक दिन या बहुत हुआ तो बारह घन्टे पूर्व का ही समाचार दे पाता है पर इलेक्ट्राॅनिक मीडिया क्षण क्षण

के समाचार देता है। पर जीवंत साक्षात्कार जीवन्त खेल प्रसारण जीवन्त घटनायें प्रस्तुत करता है। इलेक्ट्राॅनिक मीडिया से समाचार उपग्रहो पर भेजे जा सकते है। जबकि प्रिन्ट मीडिया से यह असम्भव है।

मगर इलेक्ट्राॅनिक एवं प्रिन्ट मीडिया दोनों पर बाजार वाद हावी हो गया है । समाचार हाशिये पर चले गये है और विझापन मुखपृष्ट पर आ गये है। दोनो ने महिलाओं को उपभोग की वस्तु बना दिया है । महिला सुशक्तिकरण का महत्व महिला निर्वस्त्रीकरण हो गया है । हांॅ, उन्हें अपनी कीमत लगाने की स्वतन्त्रता जरूर मिल गई है।

पिछले सात वर्षो में भौतिकवाद बड़ा है प्रदर्शन जीवन पद्वति का एक आवश्यक अंग बन गया है। ''ब्यूटी पारलरो'' पर पुरूष भी दो दो घन्टे सजने संवरने में बिताने लगे है । लुक पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा है । एक अदना सा अधिकारी भी अठारह हजार रूपयों के जूते और चश्मे पहननें लगा है। निठारी जैसे काण्ड बड़ गये है बलात्कारो और हत्यारो के दौर का रहा है पिछला दशक। यौन उत्पीड़न अवोध शिशुओं तक का होने लगा है।

इस्लामिक कट्टर वाद का वल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमला अमेरिका का ईराक को तहस नहस करना इसके उदाहरण है। ईमानदारी पर बातचीत करना व्यंग्य का विषय हो गया है। ईमानदार सरकारी कर्मचारियों को सरकार से निवेदन करना पड़ता है कि उन्हे निलंबित कर दिया जावे। एक अदना से सरकारी कर्मचारी के घर छापा पड़ने पर करोड़ो रूपये बरामद होते है ।नैतिक मूल्यों का यह पतन पिछले दशके में ज्यादा बढ़ गया है।

सरकारें क्रूर हो गई है पश्चिम बंगाल के नन्दी ग्राम में पूंजीपतियों के लाभ के लिये सरकारी बन्दूके निहत्थो पर आंख बन्द करके चलाई जाती है। खजाना लूटने की होड़ मंत्रियों और सरकारी नौकरो में बढ़ गई है। बावजूद इसके कि गरीबी कम नही हुई है गन्दी बस्तियां और गंदी हो गई है । सरकारो ने उनका दायित्व पिछले साठ वर्षो से नहीं निभाया है और खुद के वेतन बढ़ाने के अलावा कुछ नहीं किया है।

धार्मिक कट्टरता और आतंक वाद बड़ा है। विश्व का धार्मिक ध्रुवीकरण हो गया है । इस तरह देखा जाये तो सामूहिक विवेक का ह्नास हुआ है। बमों की जगह पर मानवों के परखचे उड़ाकर राजनायिकों या मासूमों की सामूहिक हत्यायें की जाने लगी है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। भोले भाले बच्चों तक में नफरत के बीज बोकर आतंकवाद को पल्लवित किया जा रहा है आतंकवाद सिखाने की संस्थायें सरकारी प्रोत्साहन से चलाई जा रही है। जहां साहित्य दर्शन इत्यादि को पढ़ाना चाहिये था वहां आतंकवाद और नफरत सिखाई जा रही है।

समाज धर्मभीरू होता जा रहा है। यह समाज में भय की अन्र्तनिदित धारा की और इंगित करता है। मन्दिरों, मस्जिदो, चर्चो एवं अन्य धार्मिक स्थलों में अप्रत्याशित भीड़ बड़ गई है। धार्मिक गुरूओं की बाढ़ सी आ गई है। उनके विलास पूर्ण जीवन से आंखे फटी की फटी रह जाती है।

बिश्व में गरीबी भयावाह है न केवल अविकसित देशो में बल्कि, विकसित और विकासशील देशो में भी मुख्यमंत्री से मौते हो रही और व्यक्ति आत्महत्या कर रहे है । जिन्दा रहने के लिए अंगो का घृणित व्यापार बड़ रहा है । आपराधिक तरीको से अर्थोपार्जन और उसेे विलासिता पूर्ण वस्तुओं में खर्च करना आज की जीवन पद्धति बन गई है।

विज्ञान में नये सिद्धांत नहीं खोजे गये। हां पुराने सिद्धान्तों के उपयोग को जरूर को जरूर आसमान तक पहुंचा दिया गया है। अन्तरिक्ष विज्ञान में चमत्कारिक प्रगति हुई है। भौतिक शास्त्र के सिद्धांतो का चिकित्सा विज्ञान के भरपूर उपयोग हुआ है। टेली मेडिसिन का विकास हुआ है। अंग प्रत्यारोपण अपेक्षाकृत सरल हो गया है। शल्य क्रिया में लेजर किरणों का उपयोग होने लगा है रोग निदान

के लिए कम्प्यूटराइज्ड होमोग्राफी से काफी आगे निकल गये है। मेग्नेटिक रेजोलेन्स इमेंजिंग छोटे शहरो तक में होने लगी है।

वही एड्स जैसी बीमारियों ने मानव जाति की नींद उड़ा दी है। बर्डस फ्लू का इलाज मुर्गियों को मारने तक ही सीमित है। चिकिनगुनिया और मलेरिया नियन्त्रण से बाहर है। अधेड़ो में मधुमेह, उच्च रक्त चाप और ह्नदयघात हर तीसरे या चैथे व्यक्ति को होने लगा है। खरबों रूपये खर्च करने पर भी पोलियों जब तक सिर उठा लेता है। सड़क दुर्घटनाओं मे ंविकलांगता और मौते वाहनों के साथ-साथ बड़नें लगे है। पर्यावरण एक दम बदल गया है। ओजोन के छेद बड़ते जा रहे है। ग्लोबल वार्मिग बड गई है ग्लेशियर पिघलते जा रहे है । “ग्रीन हाउस एफेक्ट और ग्लोबल वार्मिंग” पर विकसित और विकासशील देशो में तनातनी हो रही है।

कम्प्यूटर का अप्रत्याशित विकास हुआ है। वह अब दफ्तरों से लेकर रसोईघर तक में विराजमान है। ई वेकिंग की सुविधा हो गई है। गाड़ियों के रिजर्वेशन कम्प्यूटर से हो जाते है विश्व कम्प्यूटर में समा गया है कम्प्यूटर के कारण शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन हो गये है। पुस्तकालय एक छोटे बक्से में आ गये है।

मगर कम्प्यूटब्र से अपराधों के स्वरूप भी बदल गये है। बैंको में अपराधी अब डाका नही ंडालते, कम्प्यूटर के माध्यम से किसी के खाते में डाका डाला जा सकता है। व्यक्ति से व्यक्ति के प्रति अपराध अब बौने हो गये है । अब राष्ट्र के प्रति राष्ट्र के अपराध होने लगे है। संयुक्त राष्ट्र संध उसकी उपयोगिता खो चुका है। चीन तिब्बत का या अमेरिका इराक का क्रूरता पूर्वक दमन करता है तो संयुक्त राष्ट्र संघ घृतराष्ट्र बन जाता है।

साहित्य में अश्लीलता को भर दिया गया है। सुश्री तस्लीमा नसरीन भारत जैसे परम्परावादी और शालीन देश में यदि अश्लील साहित्य का सृजन करते हुये प्रक्षय नहीं पाती है तो भारत को बदनाम करती है। उन्हें मालूम होना चाहिए था कि सर्वधर्म समभाव वाले देश भारत में तो सेटेनिक वर्सेस के लेखन रूशदी तक को हवा नहीं दी गई। यही शिक्षा एम एफ हुसैन को भी लेना चाहिये। किसी धर्म के देवी देवताओं के अश्लील फोटो बनाकर त्वरित पैसे और प्रसिद्धि तो पाई जा सकती है शुभकामनायें नहीं। भारत तो इतना सहिष्णु है कि श्री दलाई लामा को “किंगडम इन एक्जाइल” तक प्रदान कर दी है।

उपरोक्त पूरे परिप्रेक्ष्य में केवल भारत ही ऐसा देश है जिसमें धर्मनिरपेक्ष प्रजातन्त्र है। नहीं तो पूरे विश्च में कहीं तो धार्मिक प्रजातन्त्र है या कहीं राज तन्त्र या कहीं सैनिक शासन। यह भारत ही है जो विश्व को श्रीमति सोनिया गांधी जैसी विश्व नेता और श्रीमती प्रतिभा पाटिल के रूप में राष्ट्रपति दे सकता है। तमाम विसंगतियों के बावजूद भारत में एक सुदृढ़ एवं स्थिर प्रजातन्त्र है।

एम. एन. एस. के डान राज ठाकरे ने फतवा जारी किया कि महाराष्ट्र विधानसभा के सभी विधायक दिनांक 7.11.09 को मराठी में शपथ लेंगे नहीं तो उन्हें देख लिया जायेगा । इससे महाराष्ट्र विधानसभा के सभी सदस्य डर गये । लगता है कि महाराष्ट्र के विधायकों ने राज ठाकरे जैसे उद्दंड बालक का मन रखने के लिए उक्त फतवा मान लिया उधर बाल ठाकरे को सचिन तेंदुलकर के देशभक्तिपूर्ण उस व्यक्तव्य पर आपत्ति है कि मुम्बई पूरे देश का है।

राज ठाकरे और बाल ठाकरे की तुलना नहीं की जा सकती । जहां बाल ठाकरे ने एक एक तिनका इकट्ठा करके एक संगठन को खड़ा किया है वहीं राज ठाकरे ने उसे संगठन पर डाका डाला है। उन्हें जो लूट में मिला उससे वे बहुत खुश है। हालांकि दोनो ठाकरे चाहते है के राष्ट्र से सब कुछड लेते रहे और यहां राष्ट्र के दरवाजे राष्ट्र के लिये बंद कर दिये जाये।

अभी राज ठाकरे का नया फतवा जारी हुआ है कि केन्द्रीय परीक्षाओं में मात्र मराठी भाषियों को बैठने दिया जाये। यह मराठी भाषा को एक खतरे का संकेत है। यदि यह फतवा मान लिया जाता है तो कल राज ठाकरे कहेंगें कि इन परीक्षाओं में केवल एम.एन.एस. के कार्यकर्ताओं को ही बैठने दिया जाये, क्या पता ? इस संकीर्ण फतवें से भारत के विखंडन की बू आ रही है।

दूसरी ओर मराठी भाषियों को इन परीक्षाओं की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा नहीं मिलेगी प्रतियोगिता के अभाव में वे कूप मण्डूक हो जायेंगे।

राज ठाकरे को ज्ञात होना चाहिये कि मराठी पर से हिन्दी का छत्र उठ जाने पर अंग्रेजी मराठी भाषा को निगल लेगी। वैसे भी महाराष्ट्र से विदर्भ कोंकण इत्यादि प्रांत अलग होने को छटपटा रहे है। गोंदिया, इत्यादि क्षेत्रों में तो हिन्दी ही बोली जाती है। उनका जय महाराष्ट्र का नारा मात्र जय मुम्बई होकर न रह जाये। फिर मुम्बई में भी पचास प्रतिशत लोग हिन्दी ही बोलते है। हिन्दी ने फिल्मों के माध्यम से वहां के कलाकारों को केवल समृद्ध नहीं किया बल्कि विश्व भर में एक पहचान दी है। ऐसा न हो कि राज ठाकरे जैसे अति वादियों के चलते विदर्भ, कोंकण गोंदिया सहित महाराष्ट्र जम्मू कश्मीर की तरह गरीब प्रांत होकर न रह जाये।

फिर क्या आज जो पूरे भरत में महाराष्ट्रियों को इज्जत की नजरों से देखा जाता है वह इज्जत उनसे छिन नहीं जायेगी ? मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी का दर्जा खो नहीं देगा उन्हें अपने संकुचित राजनैतिक हितों के लिये मराठी भाषियों की बलि नहीं चढ़ाना चाहिये । उन्होनें हिन्दी में विधान सभा में शपथ लेने वाले अबू आजमी की पिटाई लगा कर संसदीय गरिमा का हनन किया है। कहीं यह कदम एक साम्प्रादायिक भेदभाव एवं दंगो को जन्म न दे दे। जहां उन्हें एक अल्पसंख्यक सदस्य द्वारा हिन्दी में शपथ लेने पर प्रसन्नता जाहिर करना थी वहीं सदन में उसकी पिटाई लगा कर पागल पन का इजहार किया है। यह एक शर्मनाक बात है।

विचित्र बात है कि उनके सदस्यों ने अंग्रेजी में शपथ लेने पर आपत्ति प्रस्तुत नहीं की जबकि फतवा यह था कि सभी सदस्य मराठी में शपथ लेंगें। यह उनकी गुलाम मानसिकता का परिचायक है। राज ठाकरे अभी भी अंग्रेजी एवं अंग्रेजो के गुलाम है। ब्रिटेन और अमरीका के लोग अब उन पर थूकते होंगे क्योंकि गुलामों के साथ वे यही व्यवहार करते थे। इसी मानसिकता के चलते वे तलाशी के नाम पर हमारे राजनायिकों को नंगा कर देते है।

यहां महाराष्ट्रीयन और मराठी भाषी में भेद करना जरूरी है। सभी महाराष्ट्रीयन मराठी नहीं बोलते। हिन्दी में शपथ लेने पर एक संवैधानिक तरीके से चुन कर आये विधायक को चांटा मारना महाराष्ट्रयनों का

अपमान है, यह महाराष्ट्र का भी अपमान है। आज यदि ईमानदारी से सर्वेषण करवाया जावे तो अस्सी प्रतिशत महाराष्ट्रीयन हिन्दी जानते है और पचास प्रतिशत मराठी नहीं जानते। अकोला, चन्द्रपुर, नागपुर, गोंदिया, मुम्बई, अमरावती इत्यादि के अनेक परिवारों के रिश्ते ग्वालियर, इन्दौर, बैतूल, छिन्दवाड़ा, उज्जैन, बालाघाट, सिवनी आदि जिलों के अनेक परिवारों से है। राज ठाकरे ने इस रिश्ते में खटास पैदा कर दी है। आज पचास प्रतिशत महाराष्ट्रीयन दहशत में जी रहे है। आज यदि गैर महाराष्ट्रीयनों को महाराष्ट्र से निकाल दिया जाये तो महाराष्ट्र में बचेगा क्या ? आर्थिक राजधानी वहां से हट जायेगी, फिल्म उद्योग वहां से हट जायेगा। भगवान न करे ये लोग हमारा शिर्डी, पण्डरपुर, नासिक, शेगांव इत्यादि तीर्थो में जाना बन्द न कर दें क्या हम इन लोगों के कहने पर स्वामी राम तीर्थ, छत्रपति शिवाजी, बाबा साहेब अम्बेडकर, लोकमान्य तिलक बाल गंगाधर तिलक, संत ज्ञानेश्वर, इत्यादि महापुरूषों का आदर बंद कर देगें क्या हम इन महापुरूषों की पूरे भारतवर्ष में लगी लाखो मूर्तियों हटा देंगे। नहीं पूरे भारतवर्ष में बिखरे हिन्दी भाषी इतने संकीर्ण नहीं है।

दोनो ठाकरे लोगो को महाराष्ट्र को कश्मीर बनाने से रोका जाना चाहिए ।

हिन्दी सभी भारतीयों भाषाओं का एक रक्षात्मक छत्र है

आज भारत वर्ष में अनेक भाषायें बोली जाती है। उनमें से सिन्धी समेत 14 भाषाओं को संविधान में आदर के साथ स्थान दिया जाता है। हिन्दी इन सभी भारतीय भाषाओं की रक्षा करने वाली एक छत्र के समान है। प्रातीय भाषाओं को एक बड़ी गलत फहमी है कि हिन्दी उनकी पहचान को क्षति पहंुचायेगी। बल्कि इसका उल्टा है, हिन्दी उनको समृद्ध ही करेगी। क्षेत्रीय भाषाओं को हिन्दी के विशाल पाठक वर्ग से उन भाषाओं को एक विशाल आंचल मिलेगा। उन्हें हिन्दी से असुरक्षा की भावना हटा देना चाहिये। आज गुजराती भाषा इसका उदाहरण है। हिन्दी में आज जितने भी सीरीयल आ रहे है उनमें से अधिकतर गुजराती संस्कृति से प्रभावित है।

तमिल हिन्दी से आज तक परहेज बनाये हुये है। इसका परिणाम यह है कि हिन्दी का विशाल पाठक वर्ग एवं विशाल दर्शक वर्ग तमिल की समृद्ध संस्कृति से अपरिचित है। यदि तमिल भाषी राजनीति से उत्पन्न यह कृत्रिम दीवार तोड़ दे तो कितने हिन्दी भाषी तमिल भाषा को सीखने के लिये प्रेरित हो जायेंगे। आज केरल के कितने ही कर्मचारियों के सम्पर्क के कारण हिन्दी भाषी वहां की भाषा को सीख चुके है। इससे वहां के कर्मचारियों को भी कई लाभ हुये है। कितनी ही केरल की लड़कियों से हिन्दी भाषियों ने शादी की है। और इसका उल्टा भी हुआ है।

आज कुछ मराठी भाषी राजैनैतिक पार्टीयां मराठियों को संकीर्ण मानसिकता में उलझा रही है। आज जितने उन पार्टियों के सदस्य है उससे अधिक मराठी जानने वाले हिन्दी भाषी है। महाराष्ट्रियों को मराठी में कैद करके वे महाराष्ट्र को कश्मीर की तरह एक गरीब राज्य बनने की साजिश कर रहे है। यह आश्चर्य की बात है कि मराठी में शपथ लेने का फतवा जारी करने के बाद भी अंग्रेजी में शपथ लेने पर उन्हें आपत्ति नहीं हुई।

ये जो तमिल और महराष्ट्रियन अंग्रेजो को उनकी भाषा का हितैशी मान रहे है अंगे्रजी उनको निगल लेगी। भाषा की अपनी अलग संस्कृति होती है। जहां हिन्दी की संस्कृति आगे बढ़ाने की है वहीं अंग्रेजी की संस्कृति निगलने की है। अंग्रेजी भाषा कम्प्यूटर के माध्यम से फ्रेंच, इटेलियन और अन्य यूरोपियन भाषाओं को निगल चुकी है। कभी फ्रेंच, अन्तराष्ट्रीय भाषा थी अब अंग्रेजों की वजह से वह अपना यह दर्जा खो चुकी है ।

ये जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विज्ञापन बंगला, तमिल या हिन्दी तक में आ रहे है, यह न समझा जाये कि आखिर कार बंगला, तमिल या हिन्दी ने अंग्रेजो को हरा दिया है। नहीं, क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से उपनिवेशवाद ही उसके पैर पसार रहा है। जैसा कि मुगलों के समय हुआ था। आखिरकार अंग्रेज व्यापार के माध्यम से ही भारत में फैले थे। अब वे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से फैल रहे है।

मराठी या तमिल या अन्य प्रान्तीय भाषायें ये समझती है कि अंग्रेजी का आश्रय लेकर वे हिन्दी को शिकश्त दे रहे है तो इसका उल्टा ही हो रहा है। अंग्रेजी धीरे धीरे इनको निगल रही है। इन्हें फ्रेंच से यह शिक्षा लेनी चाहिये।

हिन्दी ने अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का सहयोग लेकर ही गुलामी को जंजीरे तोड़ी थी। लेकिन हिन्दी ही वह मुख्य प्रवाह था जिससे अंग्रेजी और अंग्रेज भारत को जोड़ने को विवश हुये थे। यदि क्षेत्रीय प्रांत उनकी व्यक्तिगत भाषाओं और प्रान्तों की स्वतंत्रता को लड़ते तो क्या अंग्रेज जाने वाले थे ?

तमिल और मराठी इत्यादि भाषाओं की तो बात दूर करें क्या हिन्दी ने बुंदेलखंड़ी, ब्रज अवधी को निगल लिया है। नहीं इन भाषाओं की फिल्मों को एक विशाल हिन्दी दर्शकों का पटल प्राप्त हुआ है। एक विशाल पाठक वर्ग प्राप्त हुआ है। इनका विस्तार होता ही जा रहा है
इन भाषाओंको जानने वाले बढ़ ही रहे है। इन भाषाओं के गाने लगभग हर हिन्दी फिल्में के अंग बन चुके है। जैसे खइके पान बनारस वाला या नैन लड़ जइये तो मनवा मा कसक हुई बे करी, इत्यादि। आज राम चरितमानस के माध्यम से अवधी घर घर की भाषा है।

आज हिन्दी के कारण ही मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी है। आज हिन्दी के कारण ही मुम्बई, वाली वुड है। आज हिन्दी के कारण की मराठी लोक नृत्यों को देश में पहचान मिली है। आज हिन्दी के कारण ही मराठी को विशाल पाठक वर्ग मिला है। आज कई हिन्दी परिवार मराठी जानते है। अतः यदि भारत की क्षेत्रीय और आंचलिक भाषाओं को समृद्धि करना है तो उन्हें हिन्दी को सहयोगी मानना चाहिये, विरोधी नहीं।

क्षेत्रीय भाषाओं को हिन्दी के बजाय कम्प्यूटर के आक्रमण से वचने की फिक्र करना चाहिये। इंग्लिश, कम्प्यूटर के माध्यम से विश्व की सारी भाषाओं और सारे सुन्दर विषयों को निगलती जा रही है वह दिन दूर नहीं जब क्षेत्रीय भाषाओं की पाठशालायें बन्द हो जायेगी। मराठी को हिन्दी से बचाने के बजाय राज ठाकरे को तेजी से बन्द होने वाले मराठी स्कूलो की फिक्र करना चाहिये। नव युवक क्षेत्रीय भाषाओं को छोड़ कर अंग्रेजी के कम्प्यूटर के माध्यम से केरियर तलाश कर रहे है। जबकि कम्प्यूटर इतिहास, भूगोल, भाषायें व्याकरण इत्यादि विषय को नष्ट कर चुका है। ये विषय वायोमास में जा चुके है इन विषयों एवं सभी भारतीय भाषाओं की समृद्धि के लिए हिन्दी का विकास आवश्यक है।

हिन्दी सभी भारतीयों भाषाओं का एक रक्षात्मक छत्र है

जिस नदी के कई स्त्रोत होते है वह सूखती नहीं है। हिन्दी वह नदी है जिसके कई उद्‌गम स्त्रोत है इसमें कई भाषाओं का समागम है।

हिन्दी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अप्रभंश, फारसी इत्यादि भाषाओं को समेटे हुये है ये लगातार इसमें बह रही है। इसके उद्‌गम पर संस्कृत, पाली, प्राकृत अप्रभ्रंश है तो मध्य में फारसी, अवधी, ब्रज है फिर इसमें अंग्रेजी भी घुलती जा रही है। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि अंग्रेजी स्वयं में हिन्दी के लगभग तैतीस हजार शब्द है।

हिन्दी जन जन की भाषा रही है वह कभी राजाश्रयी भाषा नहीं रही जैसे कि अंग्रेजी या फारसी रहीं है। वह एक जनाश्रयी भाषा रही है। हिन्दी सदा क्रान्ति की संवाहक रही है। वह हिन्दी ही है तो लाठी के सहारे या निहत्थे होकर कभी सूर्यास्त न होने वाले अंग्रेजी साम्राज्य से टक्कर लेकर उसे हरा सकी। महात्मा गांधी अंग्रेजो से टक्कर हिन्दी की लाठी पकड कर ही ले पाये।

हिन्दी जिस नदी के बहुत सारे उद्‌गम होते है और जो भाषा जनाश्रयी रहती है वह कभी सूख नहीं सकती बल्कि नदी से स्वयं समुद्र बन कर पूरे विश्व में फैल रही है।

आज हिन्दी विश्व की बोले जाने वाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। भले ही उसे राष्ट्र संघ की भाषाओं में स्थान न मिला हो। अमीर खुसरो समझ गये थे कि उन्हें यदि जन जन का कवि बनना है तो उन्हें हिन्दी ही अपनाना पड़ेगी।

आज विश्व के हरेक राष्ट्र में हिन्दी बोलने और समझने वाले मिल जायेंगें। यह भाषा बहुत ताकतवर है। जब फिल्मों का चलन नहीं था तब भी देवकी नन्दन खत्री ने तिलस्मी उपन्यासों को पढ़नें के लिए लोगों को हिन्दी सीखना पड़ी थी। यह सही है कि हिन्दी फिल्मों के प्रसार से हिन्दी का कल्पनातीत प्रसार हुआ है। पर इसको दूसरी तरह से लें तो हिन्दी के कारण ही फिल्मों को इतना व्यापार मिला कि कुछ नायक हिन्दी फिल्मों में मात्र अदाकारी से एक-एक अरब रूपये तक ले रहे है।

आज कोई भी उत्पाद बगैर हिन्दी के चल नहीं सकता। प्रारम्भ में स्टार चेनल हिन्दी में मात्र एक घन्टा का प्रसारण देता था और आज ! आज उसके कई चैनल है और चैबीस घन्टे कार्यक्रम देते है।

आज हिन्दी जानने वाले विश्व के सबसे बड़े ग्राहकों का समूह है। व्यापार विनिमय से ही भाषा का प्रसार होता है। आज चूंकि कोई भी उत्पाद बगैर हिन्दी के नहीं बिक सकता अतः व्यापार वर्ग में हिन्दी जानने की होड़ लगी है फिर वह केटरीना केफ ही क्यों न हो।

क्या कारण है कि आज हिन्दी केवल जनाश्रय के आधार पर पसर रही है। वह है उसकी सम्प्रेषनीयता, सरलता, आत्मसात करने की ताकत। हिन्दी राजस्थानी हिन्दी भी हो जाती है। गुजरात हिन्दी भी हो जाती है, बंगला हिन्दी भी जो जाती है आंध्र की हिन्दी भी हो जाती है मराठी हिन्दी भी हो जाती है, अरेबिक हिन्दी भी हो जाती है नेपाली हिन्दी भी हो जाती है और हिंग्लिश भी। हिन्दी में पेजामा, नाड़ा, कुर्सी, खाना, पानी, नाश्ता, लकड़ी आग घर आदि अनेक शब्द जहाॅं फारसी के है वहीं सर, टेबिल, रिक्शा, टी.वी. रेडियो रेल, ट्रेन बस इत्यादि अंग्रेजी के अनेक शब्द है। संस्कृत के तो अनेको शब्द है ही । इसमें संस्कृत का व्याकरण है तो फारसी का भी। यह वह समुद्र है जिसमें अनेक नदियां आकर मिलती है और यह समुद्र प्रसार करता जा रहा है और जायेगा।

हिन्दी के भविष्य का चिन्ता करने वालों की चिन्ता करने की आदत ही पड़ गई है। वे इस विषय पर चिन्ता नहीं करते तो उस विषय पर करते। उन्हें हिन्दी का भविष्य पर चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हां, हिन्दी में संस्थायें, गोष्ठियाॅं सम्मेलन चलते ही रहना चाहिये क्योंकि वे हमें हिन्दी में समृद्ध करते है।

यहां एक खतरनाक प्रवृति देखने में आ रही है। कुछ विषय सभी भाषाओं में बायोमास बनते जा रहे है। आज भूगोल साहित्य, व्याकरण, इतिहास इत्यादि विषय के विद्यार्थी हर विषय में निम्नतम होते जा रहे है। आज उसी विषय पर विद्याथर्ी झूमते है जो उन्हें लाखों के पैकेज दिलवा सके । हर विद्यार्थी नौकरी केन्द्रित होता जा रहा है। इस प्रवृति से हरेक भाषा का ह्नास होता जा रहा है। साहित्य पर हर भाषा में अब ध्यान नहीं दिया जाता। इससे साहित्य की सुन्दरता खोती जा रही है। इस प्रवृति से हिन्दी भी अछूती नहीं है। यह एक ऋणात्मक क्रान्ति है जिससे हिन्दी भी अछूती नहीं। इस प्रवृति से सबसे ज्यादा नुकसान क्षेत्रीय भाषाओं को हो रहा है।